श्रीमती क्यूरी

श्री लालबहादुर शास्त्री

प्रकाशक

साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग

श्रीमती क्यूरी

अनुवादक

श्री लालबहादुर शास्त्री

सभा-सचिव, संयुक्तप्रांत

प्रकाशक

साहित्य भवन लिमिटेड प्रयाग

१९४७

स्वतंत्रता दिवस प्रथमवार १०००

मुद्रक—जगतनारायण लाल, हिन्दी साहित्य प्रेस प्रयाग

माँ के

श्री चरणों में

भूमिका

श्रीमती क्यूरी की जीवनी मैंने जेल में पढ़ी। मुझ पर जो उसका गहरा प्रभाव पड़ा उसी के फलस्वरूप यह पुस्तक है। श्रीमती क्यूरी की छोटी पुत्री ईव क्यूरी द्वारा लिखित जीवनी का अँग्रेज़ी अनुवाद विन्शैट शीन ने किया है। उसका ही अनुवाद करने का मैंने प्रयत्न किया है। अनुवाद स्वतंत्र है। पुस्तक को छोटी कर दिया है। अनेक अध्यायों के बहुत से अंश छोड़ दिये हैं और कुछ को दो में विभाजित कर दिया है और नाम भी दूसरे रख दिये हैं। समस्त पुस्तक में अँग्रेजी अनुवाद के भावों को लेकर उसे परिवर्तित स्वरूप तथा अपनी भाषा में रखने की चेष्टा की है।

जेल में प्रायः छोटी-छोटी चीज़ें भी बड़ी प्रतीत होती हैं। त्वचा की निर्बलता के साथ-साथ मस्तिष्क पर भी एक विशेष प्रकार का प्रभाव पड़ता है और बन्दी साधारणतः अधिक भावुक हो जाता है। परन्तु जेल जीवन के कारण मेरी क्यूरी की जीवनी का मुझ पर अधिक प्रभाव पड़ा ऐसा मैं नहीं समझता। मेरी क्यूरी की जीवनी जो भी पढ़ेगा, प्रभावित होगा, और उसका जीवन उसे असाधारण तथा महान प्रतीत होगा। साधन बहुत क्षीण तथा मार्ग कंटकाकीर्ण रहते हुये भी एक बालिका ने स्वतः प्रयास से जितनी सफलता प्राप्त की वह प्रत्येक नर-नारी के लिये अनुकरणीय है। हमारे देश के रहने वालों में यह धारणा बनी हुई है कि यूरुप की महिलायें केवल सुखी जीवन बिताने की खोज में रहती हैं तथा सब सुविधायें सुलभ होने से उनको कुछ काम करना नहीं पड़ता और उनकी रुचि सिनेमा, खेल, भेष-भूषा और प्रेमालाप में ही रहा करती है। मेरी का जीवन इस

धारणा को समूल नष्ट करने के लिये पर्याप्त है।

हमारे देश में कन्याओं ने जहाँ कुछ शिक्षा प्राप्त की वे काम से दूर भागती हैं, कौटुम्बिक जीवन के छोटे-मोटे उत्तरदायित्व से घबराने लगती हैं, सेवक और सेविकाओं की उन्हें प्रतिक्षण आवश्यकता प्रतीत होती है और अपने से काम करने का अभ्यास छूट जाता है। थोड़ा-सा धन जिसके पास आ जाय उसकी भी यही दशा होती है। मेरी ने उच्चतम शिक्षा प्राप्त की और कुछ धनोपार्जन भी किया परन्तु अपने हाथ से काम करना नहीं बन्द किया। गृह कार्य, बच्चों की सेवा-सुश्रुषा तथा कुटुम्ब का सब उत्तरदायित्व वह अन्त तक निःसंकोच भाव से निभाती रही।

वैसे तो मेरी में एक नहीं अनेक गुण थे परन्तु उसकी कुछ बातें विशेष थीं। महान वैज्ञानिक होते हुये भी वह समाज और देश को नहीं भूली थी। पोलैंड की स्वतंत्रता उसे सदा प्रिय रही। अपने विशेष प्रयत्नों से उसने वहाँ एक रेडियम भवन की स्थापना की। फ्रांस में भी वह ऐसी संस्था और प्रयोगशाला स्थापित करने में सफल हुई। महासमर के अवसर पर तो उसका कार्य अभूतपूर्व रहा।

बुद्धि प्रधान होते हुये भी नैतिकता को वह किसी तरह कम महत्व नहीं देती थी। उसके जीवन में नैतिक विच्छृंखलता के लिये कोई स्थान नहीं था। उसमें ज्ञान और कर्म का सुन्दर समन्वय देख पड़ता है। छोटे से छोटे और बड़े से बड़े काम में वह जीवन पर्यन्त समान रस लेती रही। पुस्तक लेखन और अध्ययन तथा अनुसन्धान और आविष्कार को ही उसने प्रधानता नहीं दी, जीवन के जिस क्षेत्र में उसने भाग लिया उसे सतत कर्मशील रहकर सुन्दर बनाने का यत्न किया।

मेरी को किसी धर्म में विश्वास नहीं था। यह कुछ लोगों को उसके जीवन की एक कमी जान पड़ेगी। परन्तु धर्म का वर्तमान स्वरूप वाह्य रीति रिवाज और दैनिक कृत्यों का एक पुञ्ज बन गया है और

धार्मिक जगत के विचार तथा व्यवहार में असीम अन्तर दिखाई पड़ता है। यह अचम्भे की बात नहीं कि कोई सत्यनिष्ठ व्यक्ति इस विरोधात्मक परिस्थिति तथा रूढ़ियों के विरुद्ध विद्रोह कर बैठे। धर्म के मूल तथा आध्यात्मिक स्वरूप को समझने तथा थोड़ी आस्था रखने वाला व्यक्ति धर्म की वर्तमान अवस्था से भी निराश न होकर अपने जीवन में उसका संतुलन कर सकता है। मेरी ने इसका निराकरण अपने मानव-प्रेम तथा महान चरित्र से कर लिया था। मानव के लिये उसके हृदय में अगाध प्रेम और आदर था। वह किसी को भी क्लेश नहीं पहुँचा सकती थी, और न किसी के उत्थान में बाधक थी। अस्तेय की वह प्रतिमूर्ति थी। उसने जीवन में सदा देना ही सीखा, लेना नहीं। न उसे कभी धन की इच्छा हुई और न किसी दूसरे ऐहिक सुख की।

मेरी का जीवन निस्सन्देह तप और त्याग का था। उसे बड़ा से बड़ा निर्णय करने में विलम्ब नहीं होता था। रेडियम को पेटेन्ट न कराने का निश्चय उसने देखते-देखते किया। अपने दूसरे नोबेल पुरस्कार के धन को वह भूली बैठी थी, और महासमर के समय उसकी एक-एक पाई उसने फ्रांस को अर्पित कर दिया। सद्कार्यों की ओर उसकी सहज प्रवृत्ति थी, किसी विशेष प्रयत्न की आवश्यकता उसे न होती।

मेरी ने अपने जीवन काल में ही बड़ी ख्याति प्राप्त करली, परन्तु उसके कारण उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। प्रसिद्धि और प्रभुता से किसी प्रकार का अहंकार या अभिमान उत्पन्न न हो यह एक महान साधना है। मेरी "मैं" को भूल गयी थी, उसने अपने कार्य में अपने को तन्मय कर दिया था। आइंसटाइन के ये शब्द मेरी के बड़प्पन को प्रगट करते हैं—"ख्याति प्राप्त व्यक्तियों में मेरी ही एक ऐसी थी जिसे प्रसिद्धि ने किसी प्रकार नष्ट नहीं किया।"

इन बातों से यह नहीं समझना चाहिये कि वह कोई ऐसी व्यक्ति थी जिसका अनुसरण करना असम्भव हो। मोह, स्नेह, अभिलाषायें

और उसमें भी आकांक्षा में सब के समान बचपन से ही उसे अधिक से अधिक विद्याध्ययन और विदुषी बनने की लालसा थी। अत्यन्त ग़रीबी उसे रुचिकर नहीं थी चाहे वह उस पर सर्वदा मौन ही रही। उसने भी प्रेम किया और निराश हुई, इसका उसे दुख था। पियरी जैसे पति के प्राप्त होने पर उसे शक्ति प्राप्त हुई तथा सन्तान से उसे अपना जीवन पूर्ण प्रतीत हुआ। गवर्नमेंट द्वारा जो सहायता और सम्मान पियरी को उनके कार्य में मिलना चाहिये था उसके न मिलने से वह खिन्न रही। कुटुम्बियों से उसको मोह था, उसके सुख में वह सुखी और दुख में दुखी होती। अपने देश और अपनी नगरी से प्रेम तथा साफ सुथरे वस्त्र, स्वच्छ गृह, वाटिका और भ्रमण आदि में उसे रस था। अस्वस्थ रहने से वह घृणा करती। ये सब भावनायें दूसरे साधारण व्यक्तियों के समान उसमें भी थीं। बस मेरी ने केवल इसका ध्यान रखा कि जीवन में इन भावनाओं को स्थान देते हुये वह उन नैतिक तथा दूसरे वास्तविक सत्य को न भूल जाय जो व्यक्ति और समाज के विकास की आधार शिला हैं।

महिला होते हुये भी मेरी की समानता थोड़े ही पुरुष कर सकते हैं। उसका जीवन निराशा में आशा और निर्धनता में स्वावलम्बन का पाठ पढ़ाने वाला है। उससे शिक्षा मिलती है कि मनुष्य कितना ही बड़ा क्यों न हो उसका समाज के प्रति कुछ कर्तव्य है; यह आवश्यक है कि दूसरों की पीड़ा तथा जन समूह की कठिनाइयाँ उसके हृदय में वेदना उत्पन्न करे, और वह जाने कि उसे जगत में किस प्रकार आचरण करना चाहिये।

व्यक्ति अथवा समाज के विकास में जहाँ प्रतिबन्ध है, वहाँ कष्ट और पीड़ा है। विकास और उन्नति का अवसर प्रत्येक क्षेत्र में होना चाहिये—हमारे देश में स्त्रियों की उन्नति का मार्ग अवरुद्ध है। स्त्रियों का अपना व्यक्तित्व है यह हमें स्वीकार करना है, और उनका क्या

कर्तव्य है यह उन्हें स्वयं परखना है। यह पुस्तक शायद इसमें भी सहायक हो।

श्री लीलाधर शर्मा का मैं अनुग्रहीत हूँ कि उन्होंने मेरे कटे पिटे लिखे हुये पांडुलिपि को जेल में दिन रात लगकर साफ साफ पुनः लिख डाला और भाषा को भी जहाँ तहाँ सुधारने का प्रयत्न किया। प्रकाशकों ने भी प्रूफ आदि के संशोधन में जो सुविधा मुझे दी उसके लिये आभारी हूँ।

लाल बहादुर

विषय-सूची

श्रीमती क्यूरी

१. मेनिया—

पोलैंड में बच्चों के नाम को स्नेह में छोटा कर देने या प्यार का दूसरा नाम रखने की बहुत प्रथा है। मैडेम क्यूरी का नाम मेरिया था परन्तु अपनी बहनों में सब से छोटी और सब की स्नेह पात्र होने के कारण उसके कई नाम पड़ गये थे। बुलाने का छोटा नाम 'मेनिया' प्यार का नाम 'मैन्यूसिया' और खिलवाड़ का नाम 'ऐन्सूपीक्यो'।

मेनिया की माता का विवाह १८६० में प्रोफेसर लैडीस्लाव स्कलोदोवोस्की के साथ हुआ। उसकी माता श्रीमती स्कलोदोवोस्की ने बहुत अच्छी शिक्षा पायी थी और विवाह के पहले वह एक प्राइवेट स्कूल में प्रोफेसर थीं। वह बहुत तेज़ और शान्त प्रकृति की थीं। इनकी तीन लड़कियों का नाम 'ज़ोसिया', 'ब्रोनिया', और 'हेला' था और लड़के का ज़ोसेफ़। पाँचवाँ और अन्तिम बच्चा मेरिया या मेनिया थी। मेनिया को अपनी माता से सब से अधिक प्रेम था। वह अपनी माता का प्यार पाने और उसके पास बैठने की सदा इच्छुक रहती। जीवन में माता से बढ़ कर उसके लिये और कोई दूसरा नहीं था। परन्तु उसे याद न पड़ता कि उसकी माता ने कभी उसका चुम्बन लिया हो। इसका क्या कारण था वह जानने को उत्सुक रहती। माता को बच्चों से पृथक रहते हुये देख कर उसे आश्चर्य होता।

मेनिया के जन्म के बाद ही उसकी माता को क्षय रोग ने आ घेरा। उसके लक्षण स्पष्ट हो गये। और पाँच वर्ष में सब प्रकार की चिन्ता करने के बाद भी उनका रोग बढ़ता ही गया। वह ईसाई धर्म की मानने वाली एक साहसी महिला थीं। उन्होंने निश्चय कर लिया था कि उनके कष्ट का ज्ञान घर में कम से कम हो। साफ़-सुथरे कपड़े पहिने हुये, उमंग में वह घर की मालकिन के तौर पर सारा काम करती और दूसरों को भ्रम में रखतीं कि वह अच्छी हैं यद्यपि अपने लिये उन्होंने कड़े नियम बना रखे थे। वह अपनी थाली और दूसरे बरतन अलग रखतीं और कभी अपने पुत्र अथवा पुत्रियों को हृदय से न लगातीं। उनके छोटे बच्चों को इस भयानक बीमारी की जानकारी नहीं थी। उन्हें प्रायः एक कमरे से दूसरे कमरे तक खांसी की आवाज़ सुनायी पड़ती। पिता के भी मुख पर चिन्ता और व्याकुलता दिखाई देती। उनकी सायंकाल की प्रार्थना में कुछ दिनों से ये शब्द बढ़ा दिये गये थे—'हमारी माता को स्वस्थ कर दो।' परन्तु बचपन की विचित्रता! दूसरे दैनिक कामों की तरह ये बातें भी उन्हें साधारण प्रतीत होतीं। परिस्थिति की गम्भीरता का उन्हें क्या पता?

बच्चे जब माता से लिपटने का प्रयत्न करते वह उनका हाथ धीरे से हटा कर कहतीं—"मेनिया मुझे दूसरा काम करना है, जाने दो।" "क्या मैं यहीं ठहरूँ माँ, यहीं पढ़ूँ?" "अच्छा हो यदि तुम बाग़ में चली जाओ, दिन बहुत ही सुहावना है।"

मेनिया कुशाग्र बुद्धि की थी इसका अनुभव उसके माता-पिता को बहुत जल्द ही हो गया। उसकी बड़ी बहन जब रुक रुक कर एक पाठ पढ़ रही थी मेनिया ने उसके हाथ से खीझ कर किताब ले लिया और पहला वाक्य चटपट पढ़ दिया। बहन को बुरा लगा, और मेनिया "भूल हो गयी, क्षमा करो, मेरा अपराध नहीं था और न तुम्हारा, यह इतना सहल ही था" कहती हुई रोने लगी। माता-पिता

चकित हो गये। उन्हें पुत्री की असाधारण तेज पर अचम्भा हुआ और कुछ भय भी। उसके कुछ समय बाद तक जब मेनिया पुस्तक पढ़ना या देखना चाहती तो उसकी माता उसे गुड़िया खेलने, गाना गाने या बाग़ में जाकर खेलने के लिये कहती। मेनिया का मन बहुत अधिक खेल कूद में नहीं लगता था। जब वह खेलने जाती तो अपनी बहन से कहानी सुनाने का आग्रह करती। घर की ओर लौटते हुये उन्हें अपने स्कूल के समीप एक घर मिलता जहाँ उसकी बहन अपना स्वर धीमा कर देती। यह घर था एम० आइवनाव का जो एक रूसी थे।

२. पोलैंड की परतन्त्रता और मेनिया—

१८७२ में पोलिश होना साधारण बात नहीं थी। पोलैंड रूसियों के अधिकार में था। पोलैंड का शिक्षित समुदाय दूसरे वर्गों की अपेक्षा दासता के कष्ट अधिक अनुभव करता और विद्रोह की आग सदा भड़का करती।

ठीक एक सौ वर्ष पहले पोलेंड के पड़ोसी राष्ट्रों ने पोलैंड को नष्ट करने का निश्चय कर लिया था। पोलैंड तीन बार बाँटा गया और उसके छोटे-छोटे टुकड़े जर्मनी, रूस और आस्ट्रिया के अधिकार में हो गये। कई बार पोलिश अपने शत्रुओं के विरुद्ध खड़े हुये परन्तु उनकी परतन्त्रता जड़ पकड़ती ही गयी।

१८३१ के विद्रोह की असफलता पर जार निकोलस ने रूसी पोलैंड के लिए कड़ी शर्तें लगायीं। देशभक्त जेलखानों में बन्द कर दिये गये, उनकी सम्पत्ति अपहरण कर ली गयी और एक बड़ी संख्या को देश निर्वासन का दंड मिला। १८६३ में दूसरा विद्रोह हुआ। देशभक्तों के पास जार की बन्दूकों का सामना करने के लिये केवल फावड़े और

हँसिया आदि ही थे। १८ मास की कड़ी लड़ाई के बाद वारसा की सड़कों पर विद्रोही नेताओं के शरीर खम्भों से लटके हुये दिखाई पड़े।

इसके पश्चात् रूस ने पोलैंड को हर तरह से कुचलने का यत्न किया परन्तु पोलैंड ने मरने से इन्कार किया। देशभक्तों के जत्थे के जत्थे जँजीरों से बँधे हुये साइवेरिया को भेजे गये और पोलैंड रूसी पुलिस वालों, प्रोफेसरों तथा दूसरे छोटे काम करने वालों से भर दिया गया। पोलिशों की निगरानी करना, उनके धर्म को क्षति पहुँचाना उनकी सन्देहजनक पुस्तकों और समाचारपत्रों को न निकलने देना और राष्ट्रीय भाषा को क्रमशः समाप्त कर देना यही रूसियों का प्रयास था। वास्तव में उनका उद्देश्य पोलैंड निवासियों की आत्मा को मार देना था।

परन्तु पोलिश लोग फिर मुकाबले की तेजी से तैयारी करने लगे थे। पिछले भयानक अनुभवों ने सिद्ध कर दिया था कि अब हथियारों द्वारा शीघ्र स्वतन्त्रता प्राप्त करने की सम्भावना कम है। उनका काम इस समय था प्रतीक्षा करना और लोगों में कायरता और निराशा का प्रवेश न होने देना। उन्होंने अपनी लड़ाई का ढङ्ग बदला। उनके अब वैसे सैनिक नहीं रहे जो कासक्स पर अपने हँसिये से ही हमला कर मरते हुये कहते "अपने देश के लिये मरने में कितना सुख है।" अब नये वीर थे बौद्धिक, कलाकार, पुजारी और अध्यापक जिनके ऊपर आगे आने वाली सन्तानों की मानसिक वृत्ति पर एक नयी छाप डालने का उत्तरदायित्व था। अनादर और अपमान सहते हुये भी वे अपने काम में लगे रहते जिससे वे पोलिश नवयुवकों को प्रभावित कर सकें और अपने देशवासियों को मार्ग दिखा सकें। इस प्रकार नम्रता और दिखावटी स्नेह के पीछे विजेता और विजित में घोर विरोध था। पोलिश स्कूलों में प्रतिक्षण परेशान किये जाने वाले अध्यापकों और उन पर खुफ़ियागीरी करने वाले रूसी प्रिन्सिपलों— स्कलोदोबोस्कीज़ और आइबनब्ज के बीच भी यही दशा थी।

नोवोलिप स्ट्रीट में जो स्कूल था उस पर आइनव शासन करता था। मेनिया के पिता प्रो० स्कलोदोवोस्की इसी में पढ़ाते थे। आइवनोव को इसकी बड़ी चिन्ता रहती थी कि किसी लड़के के लेख में 'पोलिशत्व' न हो। वह कक्षाओं में जाकर प्रायः कापियाँ देखता। स्कलोदोवोस्की से उसका सम्बन्ध उस समय से बहुत कटु हो गया था जब से उन्होंने अपने एक विद्यार्थी का पक्ष लिया—"एम० आइवनव, यदि उस बच्चे ने भूल की है तो अनजान में। आप भी रूसी भाषा लिखने में कभी-कभी गलती करते हैं, और शायद प्रायः। मैं यह भी जानता हूँ कि आप जान बूझ कर नहीं करते जैसा उस बच्चे ने भी नहीं किया है।"

प्रोफेसर अपनी पत्नी से इसी आइवनव की बात कर रहे थे जब ज़ोसिया और मेनिया ने कमरे में प्रवेश किया। "तुमने सुना उस दिन लड़कों ने गिरजा घर में प्रार्थना का क्यों प्रबन्ध किया था? आइवनव की लड़की टाइफ़ायड से बीमार थी। प्रिन्सिपल आइवनव से बच्चों को इतनी घृणा है कि सब ने मिल कर उसकी लड़की की मृत्यु के लिये प्रार्थना की। पादरी को यदि प्रार्थना के उद्देश्य का ज्ञान होता तो इसके लिये उसे बहुत कष्ट उठाना पड़ता।"

एम० स्कलोदोवोस्की को इस घटना से प्रसन्नता थी परन्तु उनकी पत्नी, जो अधिक धार्मिक थीं, इस पर हँस नहीं सकीं। वह अपने काम में लग गयीं। उन्हें अपने लिये कोई काम छोटा नहीं प्रतीत होता था। अपनी बीमारी से विवश होकर जब से उन्हें घर में ही रहना पड़ा, उन्होंने मोची का काम सीख लिया था और अब बच्चे उन्हीं के बनाये हुये जूते पहनते।

इसी आयु में मेनिया पर दो बातों का बहुत प्रभाव पड़ा एक तो हर समय अधिक आयु वालों को आइवनव......पुलिस......ज़ार...निर्वासन......स्कीम......साइबेरिया आदि की चरचा। जब से उसने

जन्म लिया वह यही सब बातें सुना करती। दूसरे वह पिता के कमरे में शीशे की आलमारी में सुन्दर पुरजे, शीशे की नलियाँ और एक सुनहरा का विद्युददर्शक यंत्र देखा करती। मेनिया समझ नहीं सकती थी कि वे चीज़ें क्या हैं? एक दिन अपनी एड़ी पर खड़ी होकर वह उन्हें देखने में तनमय थी। पिता ने उसे उनका नाम बताया "फ़िज़िक्स के यन्त्र।" सुन्दर नाम था। मेनिया उसे भूली नहीं, वह किसी चीज़ को नहीं भूलती थी। उत्साह में वह उस शब्द को राग बना कर गाने लगी।

२. रूसी-प्रभाव में पोलिश पाठशालाएँ—

"मेनिया स्कलोदोवोस्क।"

"उपस्थित हूँ।"

"स्टैनिसलैस आगस्टस के सम्बन्ध में बताओ!"

"स्टैनिसलैस आगस्टस १७६४ में पोलैंड के राजा चुने गये। वह बुद्धिमान, सुसंस्कृत तथा कलाकार और लेखकों के प्रेमी थे। पोलैंड को निर्बल बनाने वाले दोषों से वह परिचित थे और उन्होंने देश के कुप्रबन्ध को सुधारने का बहुत यत्न किया। अभाग्यवश वह एक साहसहीन व्यक्ति थे।"

मेनिया का यह उत्तर सुन कर अध्यापिका टुपसिया ने स्नेहपूर्ण नेत्रों से उसकी ओर देखा। उसको मेनिया पर बड़ा गर्व था। क्यों न हो? दूसरी लड़कियों से दो वर्ष छोटी इस लड़की के लिये कोई चीज़ कठिन ही नहीं थी। वह इतिहास गणित और साहित्य में सदा प्रथम होती।

सारा क्लास शान्त था। इतिहास की पढ़ाई के समय विद्यार्थियों में एक विशेष प्रकार का उत्साह और देश प्रेम की भावना उत्पन्न

होती। ऐसा प्रतीत होता अध्यापक और छात्र किसी षडयन्त्र में लगे हुये हैं। मेनिया का अन्तिम वाक्य "वह साहसहीन व्यक्ति था" बड़ा हृदयस्पर्शी रहा।

घंटी बजी। सहसा सन्नाटा छा गया। अध्यापिका ने पोलिश पुस्तकें आदि शीघ्र एकत्र कीं और चार लड़कियों की ओढ़नी में उन्हें डाल दिया। वे उन्हें लेकर दूसरे दरवाजे से छात्रावास की ओर चुपके से चली गयीं और वहाँ फेंक कर बिना सांस लिये चुपचाप अपनी जगहों पर आकर बैठ गयीं।

अपनी शानदार पोशाक में स्कूल के इन्सपेक्टर एम० हार्नवर्ग कक्षा में आ पहुँचे। प्रत्येक लड़की सिलाई का काम कर रही थीं। "सप्ताह में दो घंटे लड़कियाँ सिलाई का काम सीखती हैं" अध्यापिका ने इन्सपेक्टर से कहा।

"तुम अभी बहुत तेज पढ़ रही थी। वह कौन-सी पुस्तक है?"
"क्राइलव्ज की कहानियाँ। आज ही शुरू किया है" बहुत शान्ति से अध्यापिका ने उत्तर दिया। इतनी देर के पश्चात् अध्यापिका के चेहरे का रङ्ग अपने असली रङ्ग पर आया।

हार्नवर्ग ने पास की एक दराज़ खोली। उसमें न कोई पुस्तक थी और न काग़ज़। इसके बाद कुरसी पर बैठ कर उसने कहा "किसी लड़की को बुलाओ।" मेनिया मन में प्रार्थना करने लगी "किसी और को बुलाया जाय, मुझे नहीं, मुझे नहीं।" परन्तु वह जानती थी कि उसे ही बुलाया जायगा। उसका ही नाम पुकारा गया और वह ठंडी-सी हो गयी। लज्जा ने जैसे उसका गला पकड़ लिया।

"अपनी प्रार्थना सुनाओ" हार्नवर्ग ने कहा। उसने पूरी सुना दी। ज़ार ने यह ढङ्ग निकाला था कि रूसी भाषा में ही पोलिश बच्चे प्रार्थना किया करें। इस प्रकार धर्म का सम्मान बनाये रखने का प्रपंच करते हुये भी वह पोलिशों की भावनाओं को आघात पहुँचाता।

विदेशी भाषा के प्रयोग के कारण उसने प्रार्थना को भी एक अश्रद्धा की चीज बना दिया था।

"कैथरीन द्वितीय के बाद जिन्होंने पवित्र रूस पर राज्य किया है उनके नाम बताओ?"

"कैथिरीन द्वितीय, पाल प्रथम, ऐलेक्जैएडर प्रथम, निकोलस प्रथम, ऐलक्जेएडर द्वितीय।"

इंसपेक्टर प्रसन्न हुआ। इस बच्चे की स्मरणशक्ति बहुत अच्छी है। और कितना अच्छा उच्चारण है! यह तो सैएटपीटर्स वर्ग में भी जन्म ले सकती थी।

"ज़ार की क्या उपाधि है?" "वाइलीशे"

"मेरी क्या उपाधि है?" "वाइज़ोकोरोडे" Vysokoaadye। इन्सपेक्टर को गणित आदि की अपेक्षा इन प्रश्नों के पूछने में अधिक प्रसन्नता होती। अपने आनन्द के लिये उसने पूछा—

"हम लोगों पर कौन राज्य करता है?"

अपनी आँखों की ज्वाला छिपाने के लिये अध्यापिका और प्रधानाध्यापिका ने सामने के रजिस्टरों की ओर घूरना प्रारम्भ कर दिया। जब मेनिया से जल्दी उत्तर नहीं मिला हार्नवर्ग ने क्रुद्ध होकर कड़क कर फिर पूछा—"हम लोगों पर कौन राज्य करता है?"

मेनिया ने दुखी होकर जवाब दिया "हिज़-मैजेस्टी अलेक्ज़ैएडर द्वितीय, समस्त रूस के ज़ार" और उसका चेहरा सफ़ेद पड़ गया।

वहाँ का कार्य समाप्त हुआ और इन्सपेक्टर दूसरे कमरे में गये। टुपसिया ने अपना सिर उठाया। "यहाँ आओ मेरी छोटी बच्ची।" मेनिया अपनी जगह से उठ कर उसके पास गयी। अध्यापिका ने बिना कुछ कहे उसका माथा चूम लिया। कक्षा में फिर जीवन आया। परन्तु वह पोलिश बच्ची जिसकी सहनशक्ति अब अन्त पर थी सहसा रो पड़ी।

घर पहुँचने पर बच्चों ने "इन्सपेक्टर आज आया था" "इन्स-पेक्टर आया था" का समाचार जल्दी-जल्दी माता पिता और दूसरों को देना प्रारम्भ किया। मेनिया की हर जगह चरचा थी। परन्तु कई घंटे बीत जाने के बाद भी मेनिया को आज की परीक्षा की पीड़ा थी। उसको ऐसे अपमानजनक नाटकों से घृणा थी, जिनमें केवल झूठ ही झूठ बोलना पड़ता था। मेनिया उदास रहती ही थी। हार्नबर्ग के आगमन ने उसकी उदासी को और बढ़ा दिया। उसका बाल्यकाल मुश्किल से ही कभी चिन्ता रहित व्यतीत हुआ होगा।

४. बहन और माता की मृत्यु—

एक के बाद दूसरी कौटुम्बिक विपत्तियों ने मेनिया को और दुखी बना दिया। उसकी सब से बड़ी बहन ज़ोसिया बहुत सख्त बीमार हुई। एक कमरे में उसकी माता अपनी खांसी रोकने का प्रयत्न करती और दूसरे में ज़ोसिया काँपती और कराहती सुनाई पड़ती। मेनिया के पिता एक दिन अपने बच्चों को अन्तिम बार ज़ोसिया को दिखाने गये। मेनिया के लिये यह मृत्यु का पहला दृश्य था। जब अर्थी निकली बहनें उसकी रो रही थीं। माता जो निर्बलता के कारण बाहर नहीं जा सकती थी, एक खिड़की से दूसरी खिड़की पर घिसटती हुई जहाँ तक दृष्टि जा सकती थी अर्थी को देखने का प्रयत्न कर रही थी।

इन्हीं दिनों पिता को रूसी स्कूल इन्सपेक्टर से सूचना मिली कि उनका वेतन घटा कर आधा कर दिया गया है। उनकी तनिक भी स्वतन्त्र मनोवृत्ति आइवनव को पसन्द नहीं थी इसीलिये उसने बदला लिया। कुटुम्ब की गरीबी बढ़ रही थी। इसी बीच मेनिया के पिता का तीस हजार रूबल जो एक कारखाने में लगा था नष्ट हो गया। यही उनकी कुल बचत थी इसलिये उनका कष्ट और बढ़ गया। उन्हें

पुराने मकान को छोड़ कर एक बहुत ही छोटे मकान में जाकर रहना पड़ा। और वहाँ अत्यन्त गरीबी से जीवन व्यतीत होने लगा।

माता की क्षय की बीमारी भयानक होती चली जा रही थी और अन्तिम दिन समीप आ रहे थे। ६ मई (१८७८) को पादरी बुलवाये गये। पति और बच्चे बिस्तर के चारों ओर खड़े थे। उनकी आँखें उन पर गड़ी हुई थीं परन्तु वह बहुत शान्त थीं। ऐसा प्रतीत होता था मानों वह हर एक से कष्ट देने के लिये क्षमा माँग रही हो। अन्त में उन्होंने क्रास का चिह्न बनाया और पति तथा बच्चों से विदा लेते हुये कहा—"मैं तुम सब से प्रेम करती हूँ।"

एक बार फिर काले कपड़े पहने हुये मेनिया बहुत ही दुखी दिखाई पड़ती थी। अब से उसका जीवन सदा मातृ विहीन व्यतीत हुआ। उसने कभी इसकी शिकायत नहीं की। परन्तु उसे अनुभव हुआ कि जीवन बड़ा क्रूर है। क्रूर है जाति के लिये और व्यक्ति के लिये भी। गिरजाघर में प्रार्थना के समय अब उसके हृदय में विद्रोह उठता। जिस ईश्वर ने ऐसी विपत्तियाँ ढायीं उसके लिये अब वह पुरानी श्रद्धा मेनिया के हृदय में नहीं रह गयी।

माता की मृत्यु हो गयी, बड़ी बहन भी चल बसी। अब घर की देख-भाल और प्रबन्ध का भार ब्रोनिया पर आ गया जो सब से बड़ी थी। वह सारा काम बहुत अच्छी तरह करने लगी।

५. स्कूल जीवन—

मेनिया का शौक पढ़ने में वहुत था और वह बहुत तेज भी थी। छात्रावास के हर कोने में विद्यार्थी गुनगुनाते पढ़ते और नये पाठ पर परिश्रम करते दिखायी पड़ते। अपनी कठिनाइयों से जब कभी वे हताश होते तो प्रोफेसर स्कलोदोवोस्की उन्हें ढाढस दिलाते, क्योंकि पोलिश

में जो पाठ बहुत सरलता से समझ में आता वही रूसी (सरकारी) भाषा में बहुत कठिन प्रतीत होता। उसका दुहराना और भी दुरूह हो जाता। परन्तु मेनिया के लिये किसी तरह की कठिनाई नहीं थी। उसका उच्चारण शुद्ध था और उसकी स्मरणशक्ति इतनी तेज थी कि कविता की जो पंक्ति वह एक बार देख लेती उसे फिर न भूलती। उसके साथी उस पर भ्रमवश प्रायः यह दोष लगाते कि वह छिप कर चोरी से याद किया करती है। वह अपनी पढ़ाई दूसरों से पहले ही समाप्त कर लेती और अपने किसी साथी की कठिनाइयों को हल करने और समझाने में लग जाती।

मेनिया की विशेषता यह थी कि वह मेज़ पर बैठ कर अपनी किताब में इतनी तनमय हो जाती कि उसकी बहनें चाहे जितना शोर मचावें उसकी आँख तक न उठती। यही समय होता जब उसे घर की चिन्ता, माता का पृथकत्व, पिता की दीनता, रूसियों का अत्याचार, देश की परतन्त्रता, हार्नवर्ग इन्सपेक्टर का आगमन आदि सब भूल जाता और उसे परम शान्ति मिलती।

मेनिया अब धीरे-धीरे बड़ी हो रही थी, लगभग पन्द्रह वर्ष की। स्कूल में पढ़ते हुये उसे अब रूसी और जर्मन अध्यापकों से पढ़ना पड़ता था। वह और उसकी एक मित्र इन अध्यापकों की सदा नकल बनाया करतीं। स्कूल की सुपरिन्टेन्डेन्ट (रूसी) मेनिया की स्वतन्त्रता से बहुत चिढ़ती थी। उसे मेनिया की निर्भीकता अच्छी नहीं लगती थी। मेनिया जब उसकी ओर एक दिन देख रही थी वह कह उठी—"मेरी ओर इस तरह न देखो, क्या मुझे तू नीच समझती है?" मेनिया कह उठी-—"सच तो यह है कि मैं तुम्हें कुछ और समझ ही नहीं सकती।" सुपरिन्टेन्डेन्ट के रोष की कोई सीमा न रही जब उसने मेनिया और उसके साथियों को रूस के जार (अलेकजैण्डर द्वितीय) की हत्या पर जब सारा साम्राज्य शोक मना रहा था—क्लास में नाचते

और हर्ष मनाते देखा।

वैसे स्वभाव से मेनिया और उसके साथी सरल और कोमल थे। परन्तु परतन्त्रता की नैतिकता भिन्न होती है। दासता घृणा को गुण में और आज्ञाकारिता को कायरता में बदल देती है। किसी विदेशी लड़की की ओर यदि मेनिया आदि आकृष्ट भी होतीं अथवा उन्हें विज्ञान या दर्शन की पढ़ाई यदि किसी विदेशी अध्यापक की अच्छी भी लगती तब भी उन सब में उन्हें दोष ही दिखाई पड़ता। उनको उस सरकारी शिक्षा से जो अत्याचारियों द्वारा मिलती थी घृणा उत्पन्न होती। ऐसा होना आश्चर्य की बात नहीं थी, जब कि वहाँ आये दिन राजनैतिक कारणों से नवयुवकों को जेल और देश-निर्वासन का दण्ड मिलता और फाँसी तक चढ़ाया जाता। एक दिन मेनिया और उसकी सहेलियाँ नाचने की शिक्षा लेने जाने वाली थीं। स्वभावतः सब बहुत प्रसन्न थीं। परन्तु इतने में उनके साथ पढ़ने वाली एक लड़की आई। वह रो रही थी। मेरी आदि घबरा गयीं जब उन्हें ज्ञात हुआ कि उसका भाई कल प्रातः फाँसी पर चढ़ाया जाने वाला है। सब का उत्साह शिथिल पड़ गया। रात को नाच की शिक्षा लेने न जाकर सब उसी मित्र के घर गयीं और छः लड़कियों ने रोते और अपने साथी को सम-झाते-बुझाते सारी रात काटी। मुश्किल से किसी तरह उन्होंने उसे थोड़ी-सी चाय पीने के लिये बाध्य किया। पौ फटने पर वे भयभीत थीं और उनके आँसू बह रहे थे। उस लड़के का यह अन्तिम समय था और ये लड़कियाँ घुटनों के बल झुक कर उसके लिये प्रार्थना कर रही थीं।

मेनिया का जीवन अब अपने पिता और बड़ी बहन के ही बीच केन्द्रित था। उनके लिये उसके हृदय में बड़ा आदर था और उनसे ही उसे बल मिलता। वे भी इसके लिये हार्दिक स्नेह रखते थे। मेनिया, उसकी बहन और उसके पिता हर शाम को साथ बैठते और

अलग-अलग विषयों पर बात करते। मेनिया को ऐसा ज्ञात होता जैसे उसके पिता सब कुछ जानते हैं। भौतिक और रसायन विज्ञान की प्रगति का ज्ञान रखना वह आवश्यक समझते थे। ग्रीक तथा लैटिन जानना, अंग्रेजी, फ्रेंच और जर्मन बोलना (पोलिश और रूसी भाषा तो उन्हें जानना ही था) भी उतना ही आवश्यक समझते थे। मेनिया का सौभाग्य था कि उसे ऐसा संरक्षक मिला। बातचीत में वह देखती कि उसके पिता चिन्तित रहते। उसका कारण वह समझ सकती थी। पत्नी के वियोग का निरन्तर दुख, रूसी अधिकारियों द्वारा अपमान का कष्ट, और फिर सट्टे में सब बचे हुये धन के नष्ट हो जाने का उन्हें शोक था। असह्य हो जाने पर किसी समय उनके मुँह से निकल पड़ता—"मैंने कैसे वह रुपया खो दिया। मैं तुम्हें अच्छी से अच्छी शिक्षा देना चाहता था, बाहर भेजना चाहता था। मैंने सब नष्ट कर दिया। मेरे पास पैसा नहीं है और मैं तुम लोगों के लिये कुछ नहीं कर सकता। शायद वह समय अब दूर नहीं है जब मुझे तुम लोगों का आश्रय लेना पड़े। मालूम नहीं तुम लोगों का क्या होने वाला है।" परन्तु जब वह अपने चारों बच्चों की ओर देखते तो उनकी चमकती हुई आँखें तथा साहसपूर्ण मुस्कराहट उनमें फिर एक नवीन जीवन का संचार कर देती।

आर्थिक कठिनाइयाँ अत्यधिक थीं। उनके पास इतना पैसा नहीं था कि वह नौकर का वेतन और मकान का किराया दे सकें। भोजन का भी ठीक प्रबन्ध नहीं हो सकता था। पिता का वेतन कम पड़ता ही था, अब उनकी शीघ्र ही पेंशन होने वाली थी। चारों बच्चे अपनी आजीविका का स्वयं प्रबन्ध करें। इसके अतिरिक्त अब कोई और उपाय नहीं था।

मेनिया ने ट्यूशन करना प्रारम्भ किया। उसको यह काम पसन्द नहीं आता था। बहुत दूर तक चल कर जाना, सुस्त और आलसी

विद्यार्थियों को पढ़ाना और प्रायः उनके माता-पिता का कहना—"अभी उनसे ठहरने को कहो, मेरी लड़की पन्द्रह मिनट बाद जायगी"। मेनिया ने इस काम को विवश होकर स्वीकार किया था। उसका मन दूसरी ओर था। दूसरे पोलिशों की भाँति उसका भी हृदय भविष्य के स्वप्नों से भरा हुआ था। उस समय शायद ही कोई ऐसा पोलिश युवक या युवती होगी जो राष्ट्रीय भावना से विमुख हो। राष्ट्रीय सेवा ने व्यक्तिगत आकांक्षा, विवाह और प्रेम सब पर प्रभुत्व पा लिया था।

मेनिया के कई मित्र क्रान्तिकारी थे। संकट के समय वह उन्हें अपना पासपोर्ट उधार दे देती थी। परन्तु वह स्वयं हत्या अथवा ज़ार या गवर्नर की गाड़ी पर बम आदि फेंकने में भाग नहीं लेती थी। इस समय एक जोरदार आन्दोलन शिक्षित वर्ग में चल रहा था। इसी में मेनिया सम्मिलित हुई। यह आन्दोलन रचनात्मक कार्य करने के लिये था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये कोई साधारण प्रयास इस समय व्यर्थ प्रतीत होता था। इस आन्दोलन में भाग लेने वालों ने निश्चय किया कि वे पोलैंड की एक सुदृढ़ बौद्धिक राजधानी खड़ी करेंगे और गरीबों को अधिक से अधिक संख्या में शिक्षित बनायेंगे जिन्हें अधिकारी वर्ग जानबूझ कर अन्धकार में रखना चाहते हैं।

एक 'चलते फिरते विश्वविद्यालय' नाम की संस्था में मेनिया भर्ती हुई। जो नवयुवक सांस्कृतिक उन्नति के अभिलाषी थे उनके लिये यहाँ अच्छे-अच्छे अध्यापक इतिहास और समाजशास्त्र पर व्याख्यान देते किसी गुप्त स्थान पर ये कक्षायें होतीं। आठ या दस विद्यार्थी एक बार एकत्र होते, नोट लेते और लेख तथा पैम्फलेट एक दूसरे से लेकर पढ़ते। तनिक सी भी आवाज़ पर वह काँप उठते क्योंकि यदि पुलिस को मालूम हो जाता तो जेल के अतिरिक्त और कोई दूसरा स्थान उनके लिये नहीं था।

चालीस वर्ष बाद मैडेम क्यूरी ने इसको स्मरण कर लिखा था—

"मुझे वे दिन याद हैं······साधन हमारा अल्प और उसका फल भी थोड़ा परन्तु मेरा अब भी विश्वास है कि जो विचार उस समय हमारा पथ-प्रदर्शन कर रहे थे उन्हीं से हमारी वास्तविक सामाजिक उन्नति हो सकती है। व्यक्तियों की उन्नति के बिना हम अच्छी दुनियाँ बनाने की आशा नहीं रख सकते। इस दृष्टि से हममें से प्रत्येक को अपनी सर्वोत्कृष्ट उन्नति करने का यत्न करना चाहिये। इसके साथ ही मानवता के साधारण जीवन के प्रति हमारा जो उत्तरदायित्व है उसे भी नहीं भूलना चाहिये। और हमारा विशेष कर्त्तव्य है उनकी सहायता करना जिनके लिये हम अधिक से अधिक उपयोगी बन सकते हैं।"

यह 'चलता फिरता विश्वविद्यालय' केवल शिक्षा ही नहीं देता था, शिक्षक भी तैयार करता था। मेनिया गरीब स्त्रियों को पढ़ाती और श्रमजीवियों को पुस्तकें आदि पढ़ कर सुनाती। उसने पुस्तकें एकत्र कर मजदूरी करने वाली स्त्रियों के लिये एक छोटा-सा पुस्तकालय भी बनाया। वह स्वयं बहुत सादगी से रहती। उसने कोई बुरी आदत डाली ही नहीं थी। किसी चीज़ में अति करना स्वभाव के विरुद्ध था। उसे एक सिगरेट जलाने तक की कभी इच्छा न होती। एक बार सादगी में उसने अपने सारे बाल कटा दिये थे।

सत्तरह वर्ष की मेनिया इस समय उत्साह और उमंग से भरी हुयी थी। पिता ने उसमें विज्ञान की जिज्ञासा उत्पन्न कर दी थी। परन्तु इस समय वह और दूसरे विषयों के पढ़ने की धुन में थी। उसके हृदय में इसकी लगन थी कि वह वर्तमान समाज व्यवस्था का सुधार करे और जनता को जाग्रत करे। अपने विचारों की उग्रता और हृदय की उदारता से वह समाजवादी थी परन्तु वह पोलैंड के विद्यार्थियों के समाजवादी दल में कभी सम्मिलित नहीं हुई। अपने विचारों के स्वातन्त्र्य के कारण वह दलबन्दी से घबराती और उसका देश-प्रेम उसे मार्क्स की अन्तर्राष्ट्रीयता से पृथक रखता। वह सर्वप्रथम देश की सेवा करना

चाहती थी।

मेनिया को अभी इसका ज्ञान नहीं था कि उसे अपने अनेक स्वप्नों में से किसी एक को मुख्यतः चुनना पड़ेगा। देश सेवा, मानव सेवा और उसकी बौद्धिक आकांक्षायें सब एक में मिश्रित थीं। मेनिया का ट्यूशन से काम चलना सम्भव नहीं था। उसे घर की चिन्ता बहुत थी, विशेष रूप से वह अपनी बहन ब्राइना को डाक्टरी पढ़ने के लिये फ्रांस भेजना चाहती थी।

(आजीविका समिति) नौकरी दिलाने वाली समिति में वह एक दिन (१८८५ सितम्बर) गयी। एक मोटी महिला ने आकर पूछा—"क्या चाहती हो?" "गवर्नेस का स्थान।" "तुम्हारे प्रमाण पत्र आदि कहाँ है?" उसने दे दिया। महिला चकित-सी रह गयी। उसने पूछा—"तुम्हें जर्मन, फ्रेंच, पोलिश, अंग्रेज़ी और रूसी भाषाओं पर पूरा अधिकार प्राप्त है?"

"जी हाँ, अंग्रेज़ी पर उतना नहीं जितना दूसरों पर। परन्तु स्कूल का जो पाठ्यक्रम है उसे मैं पढ़ा सकती हूँ। मैंने हाईस्कूल में स्वर्ण-पदक प्राप्त किया था।"

"अच्छा तुम्हारी आवश्यकता क्या है?"

"चार सौ रूबल वार्षिक और खाने-पीने का खर्च।"

"मैं पूछताछ करूँगी। शायद तुम्हारे लिये कोई काम निकल आवे। यह तो बताओ तुम्हारी आयु क्या है?"

"सत्तरह"। यह कह कर मेनिया शरमा गयी। फिर शीघ्र ही मुस्कराते हुये कहा—"परन्तु मैं शीघ्र ही अठारह की हो जाऊँगी।"

महिला ने सब नोट कर लिया और कहा—"कोई काम हुआ तो तुम्हें लिखूँगी।"

६. गवर्नेस–

मेनिया ने १० दिसम्बर (१८८५) को अपनी एक चचेरी बहन को पत्र लिखा—"जब से हम लोग अलग हुये हैं मैं एक वन्दी की तरह हो गयी हूँ। तुम्हें मालूम ही है कि मुझे 'ख' के यहाँ गवर्नेस का काम मिल गया है। मैं अपने सब से बुरे शत्रु को भी ऐसे स्थान में रखना पसन्द नहीं करूँगी।.........यह एक ऐसा धनी कुटुम्ब है जिसमें दूसरों के सामने पोलिश के स्थान पर बिलकुल रद्दी फ्रेंच बोली जाती है। धन हर तरह से नष्ट होता है परन्तु बिल छः महीने में चुकता होता है और लैम्प के तेल का पैसा बहुत क्षुद्रता से बचाया जाता है। इनके पाँच नौकर हैं। इस घर के लोग बात तो बहुत मीठी करते हैं परन्तु दूसरों का दोष देखने और परनिन्दा में हर क्षण लगे रहते हैं। मैंने यहाँ आकर मनुष्य को अधिक समझा। मुझे ज्ञात हुआ कि उपन्यासों के पात्र समाज में सचमुच विद्यमान हैं और यह भी अनुभव हुआ कि किसी को ऐसे व्यक्तियों के सम्पर्क में नहीं आना चाहिये जिनको धन ने बिगाड़ दिया हो।

मेनिया जो दूसरों की निन्दा करने या बुरा सोचने से बहुत दूर थी उसे ये चीज़ें अचम्भे की मालूम होतीं। उसको इस नये समाज में नयी-नयी बातें दिखाई देतीं। उसके परिचितों में ऐसे लोग थे जिनमें बुद्धि या योग्यता की कमी भले ही हो परन्तु उनमें ऐसे लोग नहीं थे जो संकुचित हृदय के हों या जिनमें आत्म-सम्मान की कमी हो। उसने भद्दे या गन्दे शब्द कभी घर पर सुने ही नहीं थे और न कलह ही देखा था। उसका ऊँचापन यहाँ अपने से छिप नहीं सकता था। मेनिया को इसका स्पष्ट भान होता और इस अनुभव में उसे कुछ प्रसन्नता भी होती। धन अथवा जन्म के गौरव में उसे कोई विशेषता नहीं जान पड़ती थी। ईर्ष्या ने कभी उसे स्पर्श नहीं किया परन्तु जो शिक्षा और

दीक्षा बचपन से उसे मिली थी उसका उसे अवश्य अभिमान था।

थोड़े ही दिन तक काम करने के पश्चात् उसने अनुभव किया कि उसकी आय कम है यद्यपि व्यय अधिक है। उसने शीघ्र ही अपने नगर से बहुत दूर दूसरे प्रान्त के एक गाँव में गवर्नेस की जगह स्वीकार कर ली और वहाँ के लिये रवाना हो गयी। अभी तक वह अपने घर के समीप थी, नित्य अपने पिता के पास जाकर थोड़ी देर के लिये बात कर आती थी, परन्तु अब दूर की यात्रा के लिये जब वह रेल पर बैठी तो पिता और कुटुम्बियों के वियोग ने उसे बहुत व्यथा पहुँचायी। कहीं पिता बीमार न पड़ जायँ? क्या फिर वह उन्हें देख सकेगी? ऐसी बातें सोच कर वह रोने लगी। उसके आँसू थमते ही नहीं थे।

वहाँ से एक मास बाद उसने अपनी चचेरी बहन को लिखा—

"......अब तक तो सब अच्छी तरह से ही बीता है।......जिनके यहाँ नौकरी कर रही हूँ बहुत अच्छे लोग हैं। उनकी सब से बड़ी लड़की मेरी मित्र हो गयी है। जिस लड़की को मैं पढ़ाती हूँ वह दस वर्ष की है, कहना मानती है, लेकिन विच्छृङ्खल है और बिगाड़ दी गयी है।......"

"देश के इस भाग में कोई काम नहीं करता। हर समय लोग खेल और मौज की खोज में रहते हैं। मैं किसी को जानती नहीं इस-लिये नृत्य में एक दिन नहीं गयी। तब से मेरे विरुद्ध कुछ बातें होती ही रहती हैं।......"

"मुझे सात घण्टे काम करना पड़ता है, चार घण्टे छोटी लड़की के पढ़ाने में और तीन बड़ी के। यह अधिक है परन्तु मुझे इसकी चिन्ता नहीं।" मेरा कमरा ऊपर है, बड़ा है, शान्त है और मुझे पसन्द है। इस कुटुम्ब में बच्चों का एक जमघट है, हर उम्र के हैं। सब से छोटी लड़की छः मास की है और उससे बड़ा एक लड़का तीन

वर्ष का है। वह बड़ा तमाशा करता है। उसकी दाई ने उसे बताया है कि ईश्वर प्रत्येक स्थान में है। अपना छोटा-सा मुखड़ा दुखी बना कर वह पूछता है—"क्या वह मुझे पकड़ने आ रहा है?" क्या वह मुझे काटेगा? "उसकी बातें सुन कर बड़ी हँसी आती है।"

दूसरे पत्र में उसने लिखा—"मैं पढ़ाने के बाद कुछ पढ़ती हूँ। परन्तु नये अतिथियों का आगमन बहुत बाधा डालता है। छोटी लड़की जिसे मैं पढ़ाती हूँ प्रत्येक ऐसी बाधा से प्रसन्न होती है और उसे बाद में समझा सकना कठिन हो जाता है। आज एक और दृश्य हो गया। वह अपने नियत समय पर उठना ही नहीं चाहती थी। अन्त में विवश होकर मुझे उसका हाथ धीरे से पकड़ कर चारपाई से उठाना पड़ा। मैं अन्दर-अन्दर उबल रही थी। तुम कल्पना नहीं कर सकती कि इस प्रकार की छोटी चीज़ें मुझे कितना कष्ट पहुँचाती हैं। ऐसी बातें मुझे कई घंटे के लिये बीमार-सी डाल देती हैं।"

"सब के साथ बात करना। गप्प और फिर गप्प। बाद और विवाद के विषय होते हैं पड़ोसी, नाच और दावतें।......श्रमिकों के प्रश्न आदि से यहाँ के नवयुवकों को घृणा है।......लड़की के पिता पुरानी परिपाटी के मानने वाले परन्तु सज्जन और अच्छी प्रकृति के हैं। उनकी पत्नी के साथ रह सकना सुगम नहीं है। परन्तु जब कोई जान जाय कि उनकी बातों को कैसे लेना चाहिये तब वह भी बहुत अच्छा व्यवहार करती हैं। मैं समझती हूँ कि वह मुझे पसन्द करती हैं।"

"यदि यहाँ तुम मेरा आचार व्यवहार देखतीं? प्रत्येक रविवार को गिरजा जाती हूँ और कभी सर्दी या सिर दर्द का बहाना कर बचने का प्रयत्न नहीं करती। मैं स्त्रियों की ऊँची शिक्षा की भी चर्चा नहीं करती। क्योंकि अपनी बातों में अपने स्थान और स्थिति का सदा ध्यान रखती हूँ।"

"ईस्टर में मैं अपने घर जा रही हूँ। सोच कर हृदय आनन्द से

ऐसा उछलता है कि मैं प्रसन्नता से चिल्लाना चाहती हूँ, कठिनाई से उसे रोकती हूँ।"

एक दिन कच्ची सड़क पर साधारण और फटे कपड़े पहने किसानों के बच्चों को जब मेनिया ने देखा तो उसके मन में आया, क्यों न वह अपने प्रगतिशील विचारों को प्रयोग में लावे ? यह एक बड़ा सुन्दर अवसर है। गाँव के लड़के अधिकतर अशिक्षित हैं। यदि कोई स्कूल गया भी है तो उसने केवल रूसी वर्णमाला सीखी है। क्या ही अच्छा हो यदि इनके लिये पोलिश का गुप्त पाठ्यक्रम बनाया जाय जिससे इनमें राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय इतिहास के गौरव की भावना जागृत हो।

मेनिया ने इसकी चरचा बड़ी लड़की ब्रोनका से की। उसको फौरन ही बात भा गयी और वह सहायता के लिये तत्पर हो गयी। "देखो अच्छी तरह सोच लो" मेनिया ने कहा—"तुम जानती हो यदि दण्ड मिला तो हम लोग साइबेरिया भेजे जायँगे।" परन्तु साहस की छूत बहुत जल्दी लगती है। मेनिया ने उसकी आँखों में तेज और निश्चय देखा।

तीसरा पत्र—"गर्मी की छुटियों में मैं कहीं जा सकती थी लेकिन यहीं रह गयी। मैं पैसा ख़र्च नहीं करना चाहती थी।......मैं कई घंटे छोटी लड़की को पढ़ाती हूँ, बड़ी लड़की के साथ पढ़ती हूँ और एक मज़दूर के लड़के को एक घंटा पढ़ाती हूँ जिसको स्कूल के लिये तैयार कर रही हूँ। इसके अतिरिक्त मैं और ब्रोनका दो घंटे किसानों के बच्चों को पढ़ाते हैं। दस विद्यार्थी हैं। वे बड़े चाव से पढ़ते हैं फिर भी हमारा काम किसी समय बहुत कठिन हो जाता है। मुझे इससे सन्तोष ही होता है कि श्रम का फल क्रमशः अच्छा हो रहा है।.........इस तरह मेरा सारा दिन भरा रहता है और मैं स्वयं भी कभी थोड़ा और कभी अधिक पढ़ती हूँ।"

चौथा पत्र—"मेरे किसान शिष्यों की संख्या अब अट्ठारह है···। प्रतिदिन दो घंटे के अतिरिक्त बुध और शनि को मैं उन्हें पाँच घंटे देती हूँ। मेरा कमरा ऊपर है और उसके लिये अलग से सीढ़ी है इसलिये जिनके यहाँ नौकरी कर रही हूँ उन्हें कोई बाधा नहीं होती। उनके प्रति जो मेरा कर्त्तव्य है उसमें भी किसी तरह की कमी नहीं आने देती। मुझे इन छोटे किसान बच्चों से असीम सुख और परम सन्तोष मिलता है······।"

छोटी और बड़ी लड़की तथा उनके भाई को जो अब वारसा से वापस आ गया था पढ़ा लेने के बाद अनथक मेनिया ऊपर अपने कमरे में जाकर प्रतीक्षा में बैठी रहती और थोड़ी ही देर बाद जूतों की और नंगे पैरों की ध्वनि उसके शिष्यों के आगमन की सूचना देती। उसने एक मेज और कुछ कुर्सियाँ उधार ले लीं थीं जिससे लड़के लिखने का अभ्यास अच्छी तरह कर सकें। दीवाल श्यामपट का काम देती थी। अपने वेतन का एक अच्छा भाग निकाल कर वह इन्हें कापियाँ और कलम इत्यादि खरीद कर देती।

नौकरों, किसानों और मज़दूरों के ये बच्चे जो मेनिया को चारों तरफ़ से घेर लेते गन्दे रहते थे। कुछ के शरीर से दुर्गन्ध आती। कुछ उद्दण्ड और चित्त लगाने वाले भी नहीं थे। परन्तु अधिकांश बच्चों की आँखों से प्रकट होता कि उनमें अपने काम को पूरा करने की उत्कट इच्छा है। जब उनकी कुछ पूरी हुयी और सफेद कागज़ पर बड़े काले अक्षरों के अर्थ उनकी समझ में आये तब उनकी विजय का कोलाहल सुन कर मेनिया का हृदय प्रसन्नता से उछलने लगा। उनके अशिक्षित माता-पिता भी प्रायः कमरे के एक कोने में खड़े होकर अपने बच्चों की पढ़ाई देख मुग्ध होते। इससे मेनिया और प्रसन्न होती परन्तु उनकी समुद्र रूपी मूर्खता का विचार कर अपने को साधनहीन और निर्बल अनुभव करती।

७. लम्बी प्रतीक्षा—

किसानों के बच्चों को यह क्या सन्देह हो सकता था कि उनकी अध्यापिका मेनिया भी अपनी अपूर्णता पर विचार करती है और पढ़ाने की अपेक्षा पढ़ना अधिक पसन्द करती है। वह दिन में प्रायः सोचा करती कि जर्मनी, फ्रान्स और इंगलैण्ड आदि में इस समय युवक, युवतियाँ विश्वविद्यालय में पढ़ रहे होंगे। उसकी इच्छा सब से अधिक फ्रान्स जाने की थी। फ्रान्स की शान का उस पर बहुत प्रभाव था। बर्लिन और पीटर्सबर्ग में पोलैंड के अत्याचारी शासक थे। परन्तु फ्रान्स में स्वतन्त्रता सब को प्रिय है, सब के विचारों और विश्वास का वहाँ सम्मान किया जाता है और प्रत्येक पीड़ित अथवा निर्वासित का वहाँ स्वागत होता है चाहे वह जहाँ से भी आवे। वह सोचती क्या वह कभी पेरिस जा सकेगी?

उसकी सब आशाओं पर पानी फिर रहा था। उसने सोचा था कि यहाँ नौकरी में वह पर्याप्त रुपया पेरिस जाने के लिये बचा सकेगी। परन्तु उसने देखा कि वह भ्रम में थी। पेंशन के बाद पिता को भी सहायता की आवश्यकता होगी। बड़ी बहिन को पेरिस में कई वर्ष तक सहायता भेजने की बात है ही और अपना भी ख़र्च चलाना है। प्रतिभाशालिनी और विशेष गुणों से सम्पन्न होते हुये भी इस अवस्था में वह जैसे उसकी आयु की दूसरी लड़कियाँ वैसी ही निरुत्साहित हो रही थी। फिर भी वह हताश नहीं हुई। उसकी उच्च शिक्षा ग्रहण करने की इच्छा इतनी प्रबल थी कि वह प्रतिदिन रात्रि के समय समाज शास्त्र और फ़िज़िक्स पर पुस्तकालय से पुस्तकें लेकर पढ़ती और पिता से पत्र व्यवहार द्वारा अपने गणित के ज्ञान में वृद्धि करने का यत्न करती। बिलकुल अकेली वह एक किसान की तरह अपने काम में लगन से लगी रहती।

इन्हीं दिनों का स्मरण कर चालीस वर्ष बाद मेनिया ने लिखा था—"मुझे उस समय साहित्य में उतना ही रस था जितना समाज शास्त्र और विज्ञान में परन्तु धीरे-धीरे मेरी रुचि विशेष विषयों में बढ़ती गयी और मैंने गणित तथा फ़िज़िक्स को अपना प्रधान विषय बना लिया। उस समय की अकेले की पढ़ाई में मुझे बड़ी कठिनाई होती थी। विज्ञान की शिक्षा जो मुझे स्कूल में मिली थी वह बहुत अपूर्ण और फ्रान्स की अपेक्षा बहुत कम थी। फिर भी जो पुस्तकें इधर-उधर से मिल जाती थीं उनके द्वारा स्वयं परिश्रम कर मैंने अपना ज्ञान बढ़ाया और मुझे स्वतन्त्र काम करने की आदत पड़ी तथा बाद में वह अभ्यास मेरे लिये लाभदायक सिद्ध हुआ।"

उस समय के अपने कार्यक्रम के सम्बन्ध में मेनिया ने सुज़्की से (जहाँ वह नौकरी कर रही थी) अपनी चचेरी बहन को लिखा—"......मुझे जो करना पड़ता है उसमें ऐसे दिन भी होते हैं जिनमें सबेरे आठ से साढ़े ग्यारह तक और फिर ढाई से साढ़े सात बजे तक बिना दम लिये काम करना पड़ता है। साढ़े ग्यारह से ढाई के बीच मैं खाना खाती हूँ और कुछ घूमती हूँ। चाय के बाद या तो मैं छोटी लड़की को पढ़ाती हूँ या सीने-पिरोने का काम करती हूँ। सीने का काम मेरा पढ़ाते समय भी चलता रहता है। नौ बजे रात के बाद मैं अपनी पुस्तक उठाती हूँ और पढ़ना प्रारम्भ करती हूँ। सबेरे भी जल्दी उठने का प्रयत्न करती हूँ जिससे पढ़ने का समय मिल जाय परन्तु यह नित्य नहीं हो पाता।......"ताश के लिये चौथे खेलने वाले का स्थान मुझे भरना पड़ता है जो मुझे पुस्तकों से कुछ देर के लिये दूर खींच ले जाता है।

"मैं एक बार में कई चीजें पढ़ती हूँ। एक ही विषय पढ़ते रहने में थक जाती हूँ क्योंकि वैसे ही काम से लदी रहती हूँ। जब यह अनु-भव होता है कि पढ़ने में पूरा ध्यान नहीं लग रहा है तब मैं अलजबरा

या ट्रिगनामेंटरी के प्रश्न हल करने में लग जाती हूँ और वे मुझे फिर ठीक मार्ग पर लगा देते हैं……"

"भविष्य की मेरी योजना कुछ नहीं है। यदि है भी तो इतनी साधारण कि उसकी चरचा करना अनावश्यक है। मैं जितनी अच्छी तरह अपने को चला सकती हूँ चलाने का यत्न करूँगी और जब मैं कुछ नहीं कर सकूँगी तब इस संसार से विदा लूँगी। क्षति साधारण होगी और मेरे लिये रंज भी कम, उतना ही कम जितना कि प्रायः बहुतों के लिये होता है।"

"यही मेरी योजना है। कुछ लोग कहते हैं चाहे जो हो मुझे प्रेम-ज्वर का अनुभव करना ही पड़ेगा। परन्तु मेरी स्कीम में उसके लिये कोई स्थान नहीं है। अगर कभी था भी तो वह धुवें में उड़ गया है, उसे भूमि के नीचे गाड़ दिया है, उस पर ताला और मुहर लगा दिया है तथा बिलकुल भूल गयी हूँ—क्योंकि तुम जानती हो कि दीवाल से जो सिर टकराता है उसमें सिर ही टूटता है।"

जीवन से निराश होने का कारण था मेनिया का प्रेम और उसमें बाधा। श्री 'जेड' का जिनके यहाँ वह नौकरी कर रही थी, सब से बड़ा लड़का कैसिमीर छुट्टियों में जब अपने घर आया तो उसने मेनिया को देखा। वह अभी १६ वर्ष से कम ही की थी। लड़का थोड़ा ही उससे बड़ा था। वह मेनिया की घुड़सवारी, सुन्दर नृत्य, नाव खेने तथा सद्व्यवहार से बहुत प्रभावित हुआ। जितनी लड़कियों से अब तक उसकी भेंट हुई थी उन सब से मेनिया बिलकुल भिन्न प्रतीत हुई। मेनिया भी भावों से शून्य नहीं थी। उसके क्रान्तिकारी भावों के पीछे एक कोमल हृदय छिपा हुआ था। वह भी उस लड़के की ओर आकर्षित हुई। वह सुन्दर सुशील विद्यार्थी उसे अच्छा लगा। दोनों ने विवाह करने का निश्चय कर लिया।

कैसिमीर ने देखा कि मेनिया पर उसके घर के सब लोगों का

स्नेह है। पिता प्रायः उसके साथ टहलने जाते, माता उसे लड़की जैसी रखती और बड़ी बहन तो उसकी पूजा ही करती इसलिये कैसिमीर ने पिता आदि से विवाह की चरचा करने में भय नहीं किया और पूछा कि क्या उन्हें स्वीकृत है ? उत्तर में विलम्ब नहीं हुआ, पिता के क्रोध की सीमा न रही, माता को मूर्छा आते-आते बची। उनका प्यारा लड़का ऐसी लड़की से विवाह करेगा जिसके पास एक पैसा नहीं है, जो "दूसरों के घरों में" नौकरी करती फिरती हो। जो लड़का पड़ोस के धनी से धनी घराने में कल विबाह कर सकता है, उसे आख़िर हो क्या गया है ?

डांट और उपदेशों की भरमार से लड़का घबरा गया और उसका निश्चय टूट गया। उसमें चरित्र बल की कमी थी, वह क्रोध और घुड़कियों से डरता था। मेनिया के हृदय को चोट लगी और वह शिथिल तथा मौन हो गयी। उसने निश्चय किया कि ऐसी बात वह फिर कभी अपने मस्तिष्क में भी नहीं लायेगी। परन्तु प्रेम आकांक्षा के सदृश्य है, उसका अन्त इतनी सुगमता से नहीं होता।

मेनिया वहाँ की नौकरी छोड़ने का साहस नहीं कर सकी। वह अपने पिता को दुखी नहीं करना चाहती थी। उसे अपनी बड़ी बहन को भी पन्द्रह या बीस रूबल मासिक, अपने वेतन का आधा ५०० रूबल वार्षिक उसे मिलता था—भेजना पड़ता था। और फिर ऐसी नौकरी कहाँ मिलेगी ? वह अपने गर्व को पी गयी और इस प्रकार रहने लगी जैसे कुछ हुआ ही न हो।

मेनिया ने अपनी चचेरी बहन (जिसने एक मृतक शिशु को जन्म दिया था) को लिखा—"किसी माता के लिये यह कितना हृदय-विदारक है कि उसका सब कष्ट सहन निरर्थक हो जाय।" यदि सच्चे ईसाई की भाँति विरक्त होकर कोई कह सकता "ईश्वर की यही इच्छा थी और उसकी इच्छा पूरी होगी" तो आधा क्लेश वहीं समाप्त हो जाता परन्तु अभाग्यवश प्रत्येक इस प्रकार सन्तोष नहीं कर सकता।………इन

दार्शनिक बातों के लिये मुझे क्षमा करना।......जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मैं किसी को विश्वास से डिगाना नहीं चाहती। यदि बनावट नहीं सच्चाई हो तो प्रत्येक अपना विश्वास बनाये रखे। केवल आडम्बर से मुझे चिढ़ है। परन्तु आडम्बर का विस्तार जितना अधिक है उतना ही वास्तविक विश्वास का पाना दुर्लभ है। मुझे कृत्रिमता से घृणा है। परन्तु सच्ची धार्मिक भावना मुझे जहाँ मिलती है मैं उसका सम्मान करती हूँ, चाहे वह परिमित बुद्धि के ही लोगों में क्यों न हो ?

अपनी बहन हेला के सम्बन्ध में जब बरेच्छा के बाद उसके विवाह की बात टूट गयी थी मेनिया ने अपने भाई को लिखा—"मैं अनुभव कर सकती हूँ कि हेला के आत्म-सम्मान को कितना आघात पहुँचा होगा। सचमुच पुरुषों के सम्बन्ध में कोई क्या राय बनाये! यदि वे ग़रीब लड़कियों से विवाह नहीं करना चाहते तो भट्ठी में जायँ। उनसे कोई कुछ माँगने नहीं जाता। परन्तु वे किसी निर्दोष व्यक्ति की शान्ति को क्यों भंग करते हैं ?"

मेनिया का अपनी चचेरी बहन को पत्र—"मेरे विवाह की बात पर विश्वास न करना। वह निर्मूल है। बात बहुत फैल गयी है, परन्तु इसमें मेरा दोष नहीं।......भविष्य का मेरा स्वप्न बहुत ही साधारण है। बस मुझे एक कोना मिल जाय जहाँ मैं अपने पिता के साथ रह सकूँ। मेरा पृथक रहना उनको बहुत अखरता है। उनकी हार्दिक इच्छा है कि मैं उनके साथ रहूँ। अपनी स्वतन्त्रता पुनः प्राप्त करने और रहने का एक स्थान बनाने के लिये मैं अपना आधा जीवन देने को तत्पर हूँ। इसलिये यदि सम्भव हो सका—जो कुछ समय तक शायद न हो—तो मैं वारसा (अपने घर) जाकर रहूँगी, वहाँ किसी कन्या विद्यालय में अध्यापिका हो जाऊँगी और शिक्षा देकर अपनी आवश्यकता पूरी कर लूँगी। बस मैं यही चाहती हूँ। जीवन इस योग्य नहीं है कि इसके लिये बहुत चिन्ता की जाय......।"

भाई को पत्र—"मेरे पास जो अन्तिम टिकट है उसे मैं इस लिफाफे पर चिपकाने जा रही हूँ और अब मेरे पास एक पैसा नहीं है—एक नहीं! अतएव मैं तुम्हें छुट्टियों तक दूसरा पत्र न लिख सकूँगी जब तक सहसा कोई दूसरा टिकट मेरे हाथों में न आ जाय। ......तुम्हारी वर्षगाँठ पर अपनी शुभ-कामना भेजना चाहती थी परन्तु बिलम्ब हो गया। न पास में पैसा था न टिकट। मन बहुत दुखी होता है—और मैंने किसी से आजतक माँगना सीखा नहीं।......तुम नहीं जानते, कुछ ही दिन के लिये सही, मेरी घर आने की इच्छा कितनी प्रबल है। मेरे कपड़े तो फटे और पुराने हो ही गये हैं, मेरी आत्मा भी श्रान्त है।......बड़ी बहन ने बहुत दिनों से कोई पत्र नहीं भेजा, उनके पास भी शायद टिकट न हो। यदि तुम्हारे पास कोई हो तो मुझे अवश्य लिखना। पूरी बात ब्यौरे से लिखना। पिता और छोटी बहन का पत्र तो दुख ही दुख से भरा रहता है। मुझे बहुत कष्ट होता है। और फिर मेरा यहाँ का कष्ट अलग है। मैं उन्हें तुमको बतलाती—लेकिन न बताऊँगी। ब्रोनिया की चिन्ता न होती तो मैं यहाँ से त्याग पत्र दे देती......।"

८. छुटकारा—

मेनिया को गवर्नेस बने तीन वर्ष हो गये थे। उसके ये वर्ष बड़े नीरस रहे, कार्य अधिक और पुरस्कार कम। घर पर पिता की पेंशन हो गयी थी, परन्तु वह अपनी बेटियों की सहायता के लिये दूसरी नौकरी की खोज में लग गये। अप्रैल (१८८८) में पिता को एक बहुत कड़ी नौकरी मिली परन्तु वेतन अच्छा था। बड़ी लड़की ब्रोनिया के लिये उन्होंने फौरन एक मासिक रकम नियत कर दी। ब्रोनिया ने भी उसी समय मेनिया को लिखा कि अब वह उसे कुछ न भेजा करे। और पिता को

लिखा कि जो चालीस रूबल आप भेजते हैं उसमें से आठ रूबल काट कर जमा करते रहें। मेनिया ने जो रुपया मुझे दिया है वह इससे धीरे-धीरे वापस हो सकेगा। जब ब्रोनिया को रुपया जाना बन्द हुआ तब मेनिया की भी पूँजी शून्य से कुछ बढ़ने लगी।

पेरिस से बड़ी बहन का पत्र मिला कि उसकी डाक्टरी की पढ़ाई अच्छी तरह चल रही है और वह परीक्षाओं में सफल हो रही है। उसका एक पोलिश नवयुवक से प्रेम हो गया है। वह उसका सहपाठी है और बहुत तेज़ तथा सुन्दर है। एक ही कठिनाई है कि उसे रूसी पोलैंड में रहने की आज्ञा नहीं है और वहाँ जाने पर उसे साइबेरिया के लिये निर्वासित कर दिया जायगा।

मेनिया की नौकरी अब यहाँ समाप्ति पर थी। दूसरी जगह एक नौकरी उसे मिल गयी थी। ईस्टर की छुटियाँ आयीं। उसने 'ज़ेड' घराने से बिदा ली और अपने घर वारसा पहुँच कर बहुत प्रसन्न हुई। परन्तु शीघ्र ही दूसरी जगह के लिये, जहाँ नौकरी तय हुई थी चल पड़ी। ज़ोपाट (स्थान का नाम) पहुँचने पर उसे श्री और श्रीमती 'एफ़' स्टेशन पर मिले। पति और पत्नी दोनों उसे अच्छे लगे और बच्चों के प्रति भी वह आकर्षित हुई।

गर्मी में वह श्री 'एफ़' आदि के साथ पहाड़ गयी। वहाँ के सम्बन्ध में उसने लिखा कि यहाँ का वायुमंडल मुझे बहुत रुचिकर नहीं प्रतीत हुआ। वही लोग सदा बराबर दिखायी पड़ते हैं और जब देखो तब वे तरह-तरह के पहनावे और साधारणतः एक ही तरह की चीजों पर जिनमें उनकी दिलचस्पी होसी है बात करते रहते हैं।

वह शीघ्र ही पहाड़ से सब के साथ वारसा आ गयी क्योंकि उन लोगों ने वारसा में ही जाड़ा बिताने का निश्चय किया था। श्रीमती 'एफ़' बहुत सुन्दर और धनी थीं। उनके पास अच्छे-अच्छे कपड़े और बहुत-सी अमूल्य मणियाँ थीं। मेनिया उनके ठाट-बाट को चुपचाप देखती

रहती लेकिन उसे वह शौकीनी पसन्द नहीं थी। वह देखा करती कि बिगड़ी हुई स्त्रियों को धन किस तरह छोटे-मोटे आकर्षक पदार्थों में लुभाये रहता है। उसने इस आमोद-प्रियता को दूर से ही प्रथम और अन्तिम प्रणाम किया।

एक दिन सहसा पेरिस से ब्रोनिया का पत्र आ पहुँचा। उसने अगले वर्ष मेनिया को पेरिस आने और अपने घर में ठहरने के लिये आमंत्रित किया था। साधारणतः मेनिया को इसका स्वागत करना चाहिये था परन्तु वह दूसरी बातों की चिन्ता में पड़ गयी। यहाँ की नौकरी के बाद उसे पिता के पास रहना है, भाई और बहन हेला की सहायता करनी है। उसने ब्रोनिया को लिखा—"पेरिस का स्वप्न मैं बहुत दिनों से देखा करती थी परन्तु अगले वर्ष आ सकना तो कठिन ही जान पड़ता है। मैं हेला और ज़ोज़ेफ के लिये चिन्तित हूँ। क्या तुम उनके लिये कुछ नहीं कर सकतीं? किसी से कुछ रुपया उधार भी लेना पड़े तो अपने आत्म-सम्मान को दबा कर ले लो। भाई को कुछ धन मिल गया तो वह डाक्टरी पढ़ सकेगा। उसका होनहार जीवन नष्ट नहीं होना चाहिये।"

ब्रोनिया ने दूसरा पत्र भेजा और पेरिस आने के लिये हठ किया। परन्तु पेरिस तक आने का व्यय वह नहीं दे सकती थी। अन्त में यही निश्चय हुआ कि मेनिया नौकरी से छुट्टी पाकर एक वर्ष पिता के साथ वारसा में रहे और वहाँ ट्यूशन से कुछ रुपया बचा ले तब पेरिस जाने की तैयारी करे।

मेनिया ने अपनी नौकरी से छुट्टी ली और वारसा में पिता के साथ रहने लगी। अपने जन्म स्थान का जलवायु और पिता की बुद्धि-वर्द्धक बातचीत उसे बहुत प्यारी जान पड़ती। 'चलते-फिरते विश्व-विद्यालय' में वह फिर जाने लगी। इसी बीच उसके जीवन में एक महत्वपूर्ण घटना हुई। उसने पहले पहल एक वैज्ञानिक प्रयोगशाला में

प्रवेश किया।

उसका एक चचेरा भाई प्रयोगशाला का संचालक था। उसने रूसियों से डर कर संस्था का नाम 'उद्योग तथा कृषि संग्रहालय, रखा था और इसकी आड़ में पोलिश नवयुवकों को विज्ञान की शिक्षा दिया करता था।

(श्रीमती क्यूरी ने बाद में लिखा था) "इस प्रयोगशाला में काम करने के लिये मुझे थोड़ा ही समय मिलता था। प्रायः सायंकाल के समय या रविवार को मैं वहाँ जाती और अकेले ही भौतिक और रसायन विज्ञान की पुस्तकों को देख कर तरह-तरह के प्रयोग करती। कभी परिणाम आशातीत होता। किसी समय अपनी सफलता से बड़ा प्रोत्साहन मिलता और कभी असफलता से बिलकुल निराश हो जाती।……अनुभव से मैंने सीखा कि ऐसे विषयों में उन्नति न सरल होती है न शीघ्र परन्तु यहाँ के काम से प्रयोग द्वारा खोज की ओर मेरी रुचि बढ़ी।"

प्रयोग के इस काम में मेनिया को एक नवीन उन्माद प्रतीत हुआ। वह सो नहीं सकती थी। जीवन में उसे क्या करना था अब स्पष्ट हो गया। जान पड़ता उसे कोई गुप्त आज्ञा दे रहा है। वह जल्दी में थी, आगे बढ़ना चाहती थी। अपने सुन्दर और चतुर हाथों में जब वह परख-नली (test tube) आदि लेती तो उसे अपने बचपन और पिता के भौतिक-विज्ञान यंत्रों की स्मृति सहसा आ जाती। जीवन का सूत्र एक बार फिर उसके हाथ आ गया।

रात्रि उसकी व्यग्रता में व्यतीत होती परन्तु दिन को वह प्रगट रूप से शान्त रहती। पेरिस जाने की इच्छा उसकी बढ़ रही थी परन्तु घर को छोड़ कर इतनी दूर जाने की बात उसे कम व्यथा न पहुँचाती। हेला के लिये नौकरी की खोज और भाई के विवाह के प्रबन्ध का भी काम इस समय लगा हुआ था। और वहाँ जाने से

पहले एक बार वह कैसिमीर 'ज़ेड' से भी फिर मिलना चाहती थी। उसके प्रति मेनिया का प्रेम अब भी बना हुआ था। छुट्टियों (सितम्बर १८९१) में वह पहाड़ पर गयी। वहाँ कैसिमीर से उसकी भेंट हुई और दोनों की बातें हुईं। कैसिमीर ने जब बार-बार अपना संशय और भय प्रकट किया तब मेनिया के लिये असह्य हो गया और उसने आवेश में कहा—"यदि तुम इस प्रश्न के सुलझाने का मार्ग नहीं निकाल सकते तो मैं तुम्हें नहीं सिखा सकती।" जो कड़ी अब तक जुड़ी हुई थी टूट गयी। उसने अपने पिछले चौदह वर्ष का, जब से उसने पढ़ना प्रारम्भ किया था, मन ही मन सिंहावलोकन किया। अब वह (एक सप्ताह में) २४ वर्ष की हो जायगी। उसे कुछ करना चाहिये। वह तुरन्त ही ब्रोनिया को पत्र लिखने बैठ गयी।

"ब्रोनिया, मैं तुमसे अब निश्चित उत्तर चाहती हूँ। क्या तुम मुझे अपने घर में रखोगी, क्योंकि मैं अब आने को तैयार हूँ। मेरे पास यात्रा के लिये आवश्यक धन है। यदि बिना विशेष कष्ट के तुम मेरे भोजन का प्रबन्ध कर सको तो स्पष्ट लिखो………। यदि पेरिस आ सकी तो इन दिनों जो व्यथा मुझे हो रही है उससे कुछ शान्ति मिलेगी। फिर भी तुम पर मैं अपने को ज़बरदस्ती लादना नहीं चाहती। तुम्हें बच्चा होने वाला है। शायद मैं तुम्हारी भी कुछ सहायता कर सकूँ।……मैं तुम्हें किसी तरह कष्ट नहीं पहुँचाऊँगी, तुम्हारा समय नष्ट नहीं करूँगी।……साफ़-साफ़ लिखो।"

ब्रोनिया ने तार से यदि उत्तर नहीं दिया तो केवल तार की विलासिता के कारण और उसका पत्र पाने पर मेनिया यदि पहली गाड़ी नहीं पकड़ सकी तो इसलिये कि उसे भी अपना कुछ प्रबन्ध करना था। अपने सब रूबल उसने मेज पर बिछा दिये। पिता ने भी उसमें कुछ अपनी ओर से मिला दिया। वह अपना सब ख़र्च जोड़ने लगी। इतना पासपोर्ट के लिये, इतना रेल के किराये के लिये। सब प्रबन्ध

हो जाने पर वह स्टेशन के लिये तैयार हो गयी। पिता साथ गये। ट्रेन चलने के समय उसके आँसू बह चले। क्षमा याचना करते हुये उसने पिता से ये प्रेम-पूर्ण शब्द कहे—"मैं बहुत दिनों तक बाहर नहीं रहूँगी। दो वर्ष, तीन वर्ष अधिक से अधिक। जहाँ मैंने अपनी पढ़ाई समाप्त की और परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुई वापस आ जाऊँगी और हम साथ ही रहेंगे, और फिर कभी पृथक न होंगे।......ठीक है न?" पिता ने भर्राई हुई आवाज़ में कहते हुये "हाँ मेरी बच्ची मैनूसिया" और उसको गले से लगा लिया। "जल्द वापस आना, खूब परिश्रम करना, तुम्हें सफलता प्राप्त हो।"

रात के समय गाड़ी सीटी बजाती और शोर मचाती हुई जर्मनी से गुज़र रही थी। मेनिया अत्यन्त प्रसन्न थी। इसका अनुमान कर सकना उसके लिये इस समय सम्भव नहीं था कि पेरिस उसके जीवन में क्या परिवर्तन उत्पन्न करेगा। यद्यपि उसने बिना जाने साधारण से हट कर असाधारण तथा अंधकार से निकल कर ख्याति और प्रसिद्धि के पथ पर आज पग रखा था।

६. पेरिस—

मेनिया पेरिस के विश्वविद्यालय में भरती हो गयी। विज्ञान-विभाग की वह एक विद्यार्थी है यह सोच कर वह कितनी प्रसन्न होती। यहाँ रजिस्टर में उसका नाम "मेरी स्कलोदोवोस्की" लिखा गया। वह किसी को 'केवल मेरी' कहने न देती इसलिये वह गुम नाम सा रही क्योंकि लड़के उसके टेढ़े नाम का उच्चारण नहीं कर सकते थे। विद्यार्थी गण उस लजीली परन्तु दृढ़ मुखाकृति वाली लड़की को सदा साधारण और सादे वस्त्र में देख कर एक दूसरे से आपस में पूछते "वह कौन है?" यदि कोई उत्तर भी देता तो अस्पष्ट ही।

"कोई विदेशी है जिसका नाम असम्भव है। कक्षा में प्रथम पंक्ति में बैठती है और बात अधिक नहीं करती।"

इस समय मेनिया का नवयुवकों की ओर आकर्षण सब से कम था। उस पर अपने विद्यालय के गम्भीर प्रोफेसरों और शिक्षकों का प्रभाव था और वह उनके ज्ञान-भंडार से कुछ ग्रहण करना चाहती थी। कक्षा में उनके व्याख्यानों से वह बहुत प्रभावित होती। वह सोचती कि विज्ञान को शुष्क विषय कैसे कहा जाता है? सृष्टि क्रम का संचालन जिन अपरिवर्तनशील नियमों द्वारा होता है उनको समझने से अधिक मोहक और क्या हो सकता है? तथा मनुष्य की बुद्धि जो उनका पता लगाती है उससे अधिक चमत्कारपूर्ण और दूसरी वस्तु क्या हो सकती है? मेरी इस जीवन से सम्पूर्णतः सन्तुष्ट थी।

ब्रोनिया के पति ने अपने स्वसुर को लिखा—"यहाँ सब कुशल है। मेरी मन लगा कर अपना काम कर रही है। वह अपना प्रायः सारा समय विश्वविद्यालय में ही लगाती है और हम लोग केवल सायंकाल के भोजन के समय मिलते हैं। वह बहुत ही स्वतन्त्र है। यद्यपि आपने मेरी देख-रेख में उन्हें छोड़ा है परन्तु वह न मेरे प्रति नम्र है और न मेरा कहना ही मानती है। और मेरे अधिकार पूर्वक किसी बात के कहने की भी उन्हें कोई चिन्ता नहीं है।......सब होते हुये भी हम लोग एक दूसरे को अच्छी तरह समझते हैं और बहुत मेल से रहते हैं।......मेरी बहुत अच्छी तरह और स्वस्थ्य है।"

मेरी को इस घर में सब प्रकार का सुख था क्योंकि एक दूसरे का प्रत्येक ध्यान रखता परन्तु तब भी मेरी की पढ़ाई में बाधा पड़ती थी। बहनोई के मित्र आदि जो मिलने आते उनसे बाधा पड़ती। बहन और बहनोई दोनों ही डाक्टर थे। एक ही कमरा दोनों के दफ़्तर का काम देता था। नियत समय पर डाक्टर अपने रोगियों को देखते थे और उसके बाद ब्रोनिया जो रुग्ण स्त्रियाँ आतीं उन्हें देखती। रात को

जब किसी प्रसव के सम्बन्ध में ब्रोनिया को ले जाने के लिये घंटी बजती तो भी मेरी प्रायः जग जाती। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय का रास्ता वहाँ से एक घंटे का था और बस का किराया भी अधिक देना पड़ता था। आपस में परामर्श और बहुत वाद-विवाद के बाद यह निश्चय हुआ कि मेरी विश्वविद्यालय, और प्रयोगशाला के समीप कहीं घर ले ले।

ब्रोनिया का घर सादा था ही। मेरी के नये मकान में सामानों की और भी अधिक कमी थी। उसका जीवन यहाँ एकाकी व्यतीत होने लगा। तीन वर्ष तक वह केवल अध्ययन ही अध्ययन में लगी रही। अपने उद्देश्य में संलग्न उसका जीवन साधुओं या पादरियों के जैसा पूर्ण था। उसे अपना सारा खर्च यहाँ स्वयं वहन करना पड़ता था। पिता कुछ भेज दिया करते थे। चालीस रूबल में वह अपना काम चलाती थी। पराये देश में रहते हुये किसी स्त्री के लिये इतने—तीन फ्रैंक प्रतिदिन—में अपने खाने और कमरे के किराये के साथ-साथ, विश्वविद्यालय का शुल्क और किताब काग़ज़ का खर्च चला सकना साधारण बात नहीं थी।

अपने भाई को मेरी का पत्र—"तुमको पिता जी से ज्ञात हुआ होगा कि मैं एक नये घर में आ गयी हूँ। यहाँ से पन्द्रह मिनट में मैं रसायनशाला और बीस मिनट में विश्वविद्यालय पहुँच जाती हूँ। प्रारम्भ में मैं जितना परिश्रम करती थी उससे अब सहस्र गुना अधिक कर रही हूँ।......अपने कहे अनुसार तुम्हारी पत्नी पिता जी की देख-भाल अच्छी तरह कर रही हैं या नहीं? उनकी चिन्ता तो करती ही रहें लेकिन मुझे घर से न काट दें। पिता जी तो उनकी बड़ी प्रशंसा करते हैं। कहीं मुझे शीघ्र ही भूल न जायँ।"

मेरी जहाँ रहती थी वहाँ और दूसरे भी उसके ही जैसे निर्धन विद्यार्थी थे परन्तु वे संयुक्त प्रबन्ध से—एक ही कमरे में कई रहकर

और साथ भोजन बना कर—अधिक सुख से रह लेते थे। परन्तु मेरी अकेले ही रहना पसन्द करती थी। बहुत सुख की चिन्ता करना उसे अनावश्यक जान पड़ता था। उसे घर को सजानें या अच्छा भोजन बनाने की भी रुचि नहीं थी। वह सोचती कि जब उतने ही समय में वह भौतिक विज्ञान के कई पृष्ठ पढ़ सकती है या प्रयोगशाला में नये अनुसन्धान कर सकती है तब वह भोजन बनाने आदि में क्यों समय लगावे ? जानबूझ कर उसने मित्रों से भी मिलना कम कर दिया था।

मेरी ने जो कमरा लिया था वह बहुत सस्ता और छोटा था, जिसमें न बिजली, न पाइप और न कमरे को गर्म करने का प्रबन्ध था। उसने केवल अपनी आवश्यकता की छोटी-मोटी चीज़ें एकत्र कर ली थीं। लोहे की मुड़ जाने वाली एक चारपाई, एक फ़र्श, एक स्टोव, एक लकड़ी का सफेद मेज, एक कुरसी, एक हाथ धोने वाला चीनी का पात्र, एक पेट्रोलियम लैम्प जिस पर दो पेनी का सस्ता ढक्कन लगा हुआ था, एक घड़ा जिसमें नीचे से भर कर वह स्वयं पानी लाती थी, एक स्टोव जिस पर उसने अगले तीन वर्ष तक अपना भोजन बनाया, दो तश्तरी, एक चाकू, एक काँटा, एक चम्मच, एक प्याला और एक केतली तथा शीशे के तीन गिलास, जिनमें वह पोलैण्ड की प्रथा के अनुसार अपनी बहन और बहनोई को जब वे उसके यहाँ आते, चाय देती। यदाकदा ही जब कोई अतिथि आता, तो मेरी अपना छोटा स्टोव जलाती और उनके बैठने के लिये अपना भूरा ट्रंक और दराजें निकाल कर रख देती।

नौकर रखने का प्रश्न कैसे उठ सकता था। एक घंटे के लिये केवल सफाई के वास्ते भी यदि वह किसी को रखना चाहती तो आय-व्यय का लेखा ही न बैठता। सवारी का ख़र्च तो समाप्त हो ही गया था। प्रत्येक ऋतु में विश्वविद्यालय वह पैदल ही जाती। कोयले का ख़र्च उसने बहुत ही कम कर दिया था। एक या दो बोरे केवल जाड़ों के

लिये वह पास ही के दुकानदार से मोल लेती और हर स्तर पर रुकती और सुस्ताती हुई छठवें स्तर तक कई बार में स्वयं चढ़ा कर ले जाती। रोशनी पर भी जितना व्यय कम कर सकती करती थी। सायं-काल से पुस्तकालय में चली जाती। वहाँ कमरा भी गर्म रहता। तब तक वहाँ बैठी हुई पढ़ती जब तक पुस्तकालय के किवाड़ दस बजे बन्द न होने लगते। इसके बाद उसे इतने तेल की आवश्यकता रहती जितने से वह अपने कमरे में दो बजे रात तक पढ़ती रह सके। और तब थक कर मेनिया पुस्तकों का साथ छोड़ चुपचाप सो जाती।

घर के कामों में वह केवल सिलाई ही का काम जानती थी। परन्तु उसने कभी कोई कपड़ा ख़रीद कर अपने लिये ब्लाउज़ आदि नहीं सीया। वह अपने उन्हीं पुरानी चाल के कपड़ों से काम चलाती रही जिन्हें वारसा से साथ ले आयी थी। उन्हें सदा साफ़ रखती और कहीं फटे हों तो सी लेती। कपड़े तो अपने हाथ से धोती ही थी।

मेरी यह कभी स्वीकार न करती कि उसे भूख लग सकती है या सर्दी। कभी लापरवाही से और प्रायः इसलिये कि कोयला न खरीदना पड़े वह अंगीठी भी नहीं जलाती थी और इसकी भी चिन्ता न करती कि गणना आदि में उसकी अंगुलियाँ ठंडी पड़ रही है या उसका शरीर काँप रहा है। गर्म शोरवा या थोड़े से मांस से उसे आराम मिल सकता था परन्तु वह शोरवा बनाना जानती ही नहीं थी। मेरी न एक फ्रैंक अधिक व्यय कर सकती थी और न आध घंटा चाय बनाने में लगा सकती थी। वह मुश्किल से ही किसी मांस की दूकान में जाती, होटल की बात तो दूर रही जो बहुत ज्यादा मँहगा होता। हफ्तों वह केवल मक्खन रोटी और चाय पर रह जाती। जब उसे दावत का सुख लेना होता तो किसी दूकान में चली जाती और दो अंडे खा लेती या चाकलेट का टुकड़ा अथवा कुछ फल खरीद लेती।

मेरी जो कुछ मास पहले स्वस्थ और मज़बूत थी इस भोजन पर

पीली पड़ने लगी। मेज़ पर से उठते हुये प्रायः उसे चक्कर आ जाता। बिस्तर पर जाते-जाते उसे मूर्छा आ जाती और होश में आने पर अपने से स्वयं पूछती मुझे मूर्छा क्यों आयी? क्या मैं बीमार हूँ? उसे यह अच्छा न लगता कि वह बीमार है। उसका ध्यान इस ओर न जाता कि निर्बलता के कारण उसे मूर्छा आती है और उसका रोग केवल भूखा रहना है।

मेरी जब अपनी बहन के यहाँ जाती तो इसकी कोई चरचा न करती कि वह कैसे रह रही है। उसने क्या-क्या खाना बनाना सीखा तथा क्या खाती है इसका उत्तर वह एक या दो शब्दों अथवा हाँ या नहीं में दे देती। यदि उसके बहनोई कहते कि वह स्वस्थ नहीं दिखाई पड़ रही है तो यही उत्तर देती कि उसे बहुत परिश्रम करना पड़ता है। और इन सब व्यर्थ की बातों से अन्यमनस्क-सी होकर वह अपनी बहन के बच्चे के साथ जिसे वह बहुत प्यार करती थी खेलने लगती।

लेकिन एक दिन वह अपने एक साथी के सामने बेहोश हो गयी। वह दौड़ा हुआ उसके बहनोई के पास पहुँचा। थोड़ी देर बाद मेरी के बहनोई उसके यहाँ पहुँचे और देखा कि पीली पड़ी हुई मेरी दूसरे दिन का पाठ याद कर रही है। डाक्टरी परीक्षा के बाद उसने उसके प्लेट आदि तथा कमरे की होशियारी से जाँच की। उसे केवल एक चाय का पैकेट दिखायी पड़ा। वह सारी बात तुरन्त समझ गया और पूछने लगा—"तुमने आज क्या खाया है?" "आज? मैं नहीं जानती अभी थोड़ी देर हुयी खाना खाया है।" "तुमने खाया क्या?" "कुछ मकोय आदि और......बहुत-सी चीजें।" अन्त में मेरी ने विवश होकर स्वीकार किया कि उसने कल सायंकाल को तरकारियों का एक मुट्ठा और पाव भर फल खाया था, और तीन बजे सबेरे तक पढ़ती रही और केवल चार घंटे सोयी। फिर विश्वविद्यालय गयी और वहाँ से लौट कर उसने बची हुयी तरकारी खायी। उसके बाद ही उसे

मूर्छा आ गयी।

डाक्टर ने कुछ अधिक नहीं कहा। वह मेरी से बहुत क्रुद्ध था। उसे दुख था कि उसने अपना कर्तव्य स्वयं पूरा नहीं किया। मेरी के विरोध करते रहने पर भी उसने उसकी टोपी और कोट उसके हाथ में दिया और कहा कि इस सप्ताह के लिये जिन पुस्तकों की आवश्यकता हो ले लो और उसे अपने घर ले गया। बीस मिनट बाद ही ब्रोनिया ने पूरा खाना लाकर रख दिया और मेरी ग्रास के बाद ग्रास खाती चली गयी। खाते ही खाते जैसे उसके चेहरे का रंग बदल गया। रात के ग्यारह बजे ब्रोनिया ने मेरी के कमरे में जाकर स्वयं अपने हाथ से रोशनी बुझा दी। वहाँ के कई दिनों के भोजन और विश्राम से वह स्वस्थ हो गयी। शीघ्र ही उसे परीक्षा का भूत सताने लगा। उसने बचन दिया कि अब वह अपनी चिन्ता रखेगी और अपने यहाँ के लिये रवाना हो गयी। लेकिन दूसरे दिन से फिर वह हवा पर रहने लगी।

बस काम और काम। मेरी सफलता की धुन में हर समय पढ़ने में ही लगी रहती। वह गणित, भौतिक और रसायन विज्ञान की कक्षाओं में सम्मिलित होती। प्रोफेसर उसको महत्वपूर्ण खोज के काम देने में न हिचकते। और हर काम में वह अपनी तेज़ी और नवीनता दिखलाती। उसे प्रयोगशाला का शान्त वायुमंडल बहुत रुचिकर था और वह वहाँ मेज़ के सहारे सदा खड़ी हुई दिखाई देती। अपने काम में व्यस्त वह न शोर मचाती और न एक भी अनावश्यक शब्द अपने मुँह से निकालती।

उसने एक विषय में ही नहीं दो विषयों में एम० ए० होने का निश्चय किया। भौतिक विज्ञान और गणित में। उसकी पहले की साधारण योजनायें अब दिनों दिन बड़ी ही होती जा रही थीं। अपने पिता को पत्र लिखने का भी उसे समय न मिलता। लिखने में

कुछ डरती भी क्योंकि उसने कहा था कि वह जल्द ही वापस आ जायगी। जब पिता को मालूम हुआ कि मेरी एम० ए० की तैयारी कर रही है तो उन्होंने ब्रोनिया को लिखा कि मेरी ने अपने पत्र में कभी इसकी चरचा नहीं की। मुझे परीक्षा के ख़र्च का अनुमान हो जाय तो मैं उसे कुछ रुपया भेजने का प्रबन्ध करूँ। उन्होंने लिखा—"मैं अगले वर्ष तक इस घर को रखे रहूँगा। मेनिया अगर लौटी तो हम दोनों के लिये यह मकान बहुत सुविधाजनक है। धीरे-धीरे मेनिया के कुछ शिष्य हो जायँगे। जो कुछ उसे मिलेगा और जो थोड़ा बहुत मेरे पास है उसे मिला कर हम दोनों अच्छी तरह काम चला लेंगे।"

बहुत लजीली होते हुये भी मेरी दूसरों से मिले बिना कैसे रह सकती थी। वह देखती थी कि उसके दूसरे सहपाठी उसका आदर करते हैं और अपनी कृपा प्रदर्शित करते हैं—कभी कृपा से भी कुछ अधिक। मेरी इस समय बहुत सुन्दर थी। उसकी एक महिला मित्र एक दिन कुछ विद्यार्थियों से जो मेरी के सौन्दर्य के प्रशंसक थे झगड़ गयी और छाते से उन्हें मारने दौड़ी। मेरी को ऐसे लड़के पसन्द नहीं थे जो उससे प्रेम करना चाहते हों। हाँ, ऐसे साथी वह अवश्य चाहती थी जिनसे वह अपने काम के सम्बन्ध में बात कर सके। पढ़ाई के बीच जब उसे अवकाश मिलता तो वह उन विद्यार्थियों से बात करती जो भविष्य में फ्रान्स के उज्ज्वल वैज्ञानिक बनने वाले थे। उसे मैत्री या प्रेम करने के लिये समय नहीं था। वह तो इस समय गणित और भौतिक विज्ञान से प्रेम करती थी।

मेरी बहुत कुशाग्र बुद्धि की और अपने निश्चय में लोहे के समान कड़ी थी। अपने लिये जो उसने निश्चय किया उसे धैर्य और विधि-पूर्वक पूरा किया। १८६३ में उसने फ़िज़िक्स में प्रथम श्रेणी में एम० ए० किया और १८६४ में द्वितीय श्रेणी में गणित। फ्रेंच पर भी, जिसे वह बहुत टूटी-फूटी बोल सकती थी मेरी ने पूरा अधिकार प्राप्त कर

लिया ।

चालीस रूबल मासिक में ही पेरिस में अपना ज वन बिताने में वह सफल हुई । कभी-कभी अत्यन्त आवश्यक पदार्थों से अपने को वंचित कर किसी दिन वह थियेटर देखने भी चली जाती। फूलों से उसका प्रेम पेरिस में आकर घटा नहीं। जहाँ कुछ पैसे बचे वह नगर से दूर जंगल में चली जाती और वहाँ से खूब फूल एकत्र कर साथ ले आती ।

१८६१-१८६४, ये चार वर्ष उसके आशा और निराशा के बीच व्यतीत हुये । प्रत्येक वर्ष जब वह छुट्टियों में पिता के यहाँ जाती उसे सन्देह होने लगता कि वह पेरिस फिर जा सकेगी या नहीं। रुपये की कठिनाई रहती कि कहाँ से मिलेगा । १८६६ में स्थिति बहुत ही दुरूह हो गयी थी। परन्तु उसके एक साथी ने आकाश-पाताल एक कर वारसा की एक छात्रवृत्ति जो विदेश में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को दी जाती थी मेरी को दिलवा दी। छ सौ रूबल मिले ! पन्द्रह महीने के लिये ये पर्याप्त थे। मेरी जो दूसरों के लिये बहुत सुन्दरता से मांग सकती थी वह अपने निमित्त छात्रवृत्ति के लिये प्रयत्न करने की कल्पना भी नहीं कर सकती थी। कुछ वर्ष बाद जब मेरी ने छ सौ रूबल बचा कर उस संस्था के मंत्री को लौटाया जहाँ से यह छात्रवृत्ति मिली थी तो मंत्री के आश्चर्य की सीमा न रही। संस्था के जीवन में इस प्रकार की यह पहली ही घटना थी।

प्रयत्न, वीरता तथा धैर्य से भरे हुये ये चार वर्ष मेरी के लिये यद्यपि अधिक सुखप्रद नहीं थे, परन्तु उसे पूर्ण अवश्य प्रतीत होते थे । कितनी छोटी-मोटी परन्तु दुखदायक घटनाओं को उसने साहस के साथ सहन किया । एक ही जोड़ा जूता और उसका भी तल्ला खराब । कुछ दिन बाद वह बिल्कुल ही जवाब दे जाता । तब नया जूता खरीदना आवश्यक हो जाता । कई सप्ताह का बजट इसमें बिगड़ जाने का डर होता ।

भोजन या लैम्प के तेल में कमी कर जूते का अभाव मिटाया जाता। शरद ऋतु में मेरी को सर्दी का कष्ट बहुत अधिक होता। छठवीं स्तर का कमरा बर्फ हो जाता। वहाँ ठंडक इतनी हो जाती कि मेरी सो न सकती और काँपने तथा दाँत कटकटाने लगती। कोयला समाप्त हो चुका है। अब और कोई उपाय नहीं। वह उठती, लैम्प जलाती, सन्दूक खोल कर जितने कपड़े थे निकाल लेती। जितना पहन सकती पहन लेती और बाक़ी सब अपने ऊपर लाद लेती। इस पर भी जब सर्दी न जाती वह कुर्सी खींच कर सब कपड़ों के ऊपर रख लेती, इस आशा में कि बोझ और दबाव से कुछ गर्मी बनी रहेगी। बिना हिले-डुले उसे निद्रा की प्रतीक्षा करनी पड़ती। और इस बीच घड़े के पानी पर बर्फ की एक तह जम जाती।

अपनी इस निर्धनता को मेरी सदा गर्व से देखती रही। विद्यार्थी जीवन के बाद उसने सुखी और सम्पन्न जीवन व्यतीत किया परन्तु अपने सब से उत्तम काल में भी वह इतनी सन्तुष्ट नहीं रही जितनी इस समय। ग़रीबी और साथ ही विदेश में अकेले तथा स्वतन्त्र रह सकने का उसे गर्व था। उसका भविष्य अभी अनिश्चित और धुँधला ही था परन्तु उसका नाता भूत के उन महान वैज्ञानिकों से जुड़ गया था जिन्होंने उसकी ही तरह साधारण अँधेरे कमरों में रह कर अपनी उन्नति अथवा अवनति से विरक्त रहते हुये अपने काल तक के ज्ञान सम्पुट से आगे निकल जाने का यत्न किया था।

१०. पियरी क्यूरी—

मेरी ने प्रेम और विवाह को अपने जीवन के कार्यक्रम से अलग कर दिया था। उसका अपना एक नया संसार बन गया था जिसमें विज्ञान के अतिरिक्त देश और कौटुम्बिक प्रेम के लिये भी स्थान था।

जब से कैसिमीर वाली घटना हुई मेरी के मन में यह सन्देह सदा बना रहता कि ग़रीब लड़कियों के प्रति पुरुषों में आदर और प्रेम नहीं होता। अपने स्वप्न में मग्न, ग़रीबी से पीड़ित, मेरी सदा काम में व्यस्त रहती। अवकाश और उसके क्या दोष होते हैं इस का उसे पता भी न था। स्वाभिमान और संकोच तथा पुरुषों के प्रति उसका अविश्वास सदा उसकी रक्षा करते। परन्तु वह क्या जानती थी कि एक प्रतिभाशाली वैज्ञानिक अनजाने ही उसकी प्रतीक्षा कर रहा है।

मेरी को कई प्रकार के इस्पातों के चुम्बकीय गुणों की जानकारी प्राप्त करनी थी। उसने एक प्रोफेसर की प्रयोगशाला में प्रयोग प्रारम्भ कर दिया था परन्तु स्थान की कमी से उसका काम वहाँ अच्छी तरह न हो पाता। उसे किसी नये स्थान पाने की चिन्ता लगी हुयी थी।

एक पोलिश वैज्ञानिक प्रोफेसर से उसने अपनी कठिनाई बतलायी। प्रोफेसर ने पियरी क्यूरी का नाम बतलाया, और कहा यदि उसके साथ काम करो तो शायद तुम्हें एक कमरा मिल जाय। तुम कल मेरी पत्नी और मेरे साथ चाय पीने आओ तो उस वैज्ञानिक से तुम्हारा परिचय करा दूँ।

वह चायके लिये गयी। पियरी क्यूरी का व्यक्तित्व निराला था, शान्त, गम्भीर, और विरक्त। वैसे वह अधिकतर चुप ही रहे परन्तु उनकी तेजी उनके अविचलित नेत्रों और शान्त मुखाकृति से स्पष्ट थी। वर्तमान सभ्यता में बौद्धिक और नैतिक जीवन का मेल यदाकदा ही होता है। पियरी में यह अनुपम विशेषता उपस्थित थी।

पहले बात साधारण ही होती रही परन्तु शीघ्र ही वैज्ञानिक विषयों पर आ गयी। पियरी को देख कर अचम्भा हुआ कि मेरी कितनी सुगमता से उनके वैज्ञानिक विषयों को समझती है और कैसे बुद्धिमानी के प्रश्न करती है। यह कितना सुन्दर है कि कोई अपने सर्वप्रिय विषय

पर किसी महिला से अच्छी तरह वार्तालाप कर सकता है। पियरी का मेरी की तरफ आकर्षित होना स्वाभाविक था। वह उसका सौन्दर्य परन्तु किसी प्रकार की सजधज न देख कर चकित थे। पियरी ने पूछा—"क्या तुम सदा फ्रांस में रहोगी?"

मेरी ने उत्तर दिया—"कदापि नहीं। इस वर्ष परीक्षा में उत्तीर्ण होते ही मैं पोलैण्ड चली जाऊँगी। मेरी फिर आने की इच्छा है परन्तु मालूम नहीं आ सकूँगी या नहीं। पोलैण्ड में अध्यापिका होने का विचार है; मैं अपने को वहाँ उपयोगी बनाने का यत्न करूँगी। पोलों को यह अधिकार नहीं कि वे अपने देश को तिलाञ्जलि दे दें।" जब मेरी रूस के अत्याचार आदि के सम्बन्ध में दूसरे उपस्थित मित्रों से बात करने लगी तो पियरी को आश्चर्य हुआ कि कोई वैज्ञानिक अपने विषय को छोड़ कर दूसरी बातों के लिये कैसे एक क्षण का भी समय दे सकता है, और फिर मेरी के भविष्य के कार्यक्रम में तो ज़ार से लड़ने की भी बात है। पियरी की इच्छा हुई कि वह मेरी से फिर मिले।

पियरी क्यूरी एक फ्रांसीसी प्रतिभाशाली वैज्ञानिक थे। उनके देश-वासी उन्हें बहुत कम जानते थे। परन्तु दूसरे देशों के वैज्ञानिकों में उनका बहुत सम्मान था। क्यूरी घराना ही विद्वानों और वैज्ञानिकों का था। पियरी के पिता ने जब देखा कि उनका लड़का स्कूल आदि के नियमों को मानना पसन्द नहीं करता और स्वतन्त्र वृत्ति का है तो उन्होंने उसे स्वयं पढ़ाना प्रारम्भ किया, परन्तु बाद में उसे एक बहुत अच्छे अध्यापक के सिपुर्द कर दिया। उसका फल अच्छा ही हुआ। पियरी ने १६ वर्ष की आयु में भौतिक विज्ञान में बी० एस० सी० और १८ वर्ष में एम० एस० सी० कर लिया। दूसरे भाई ने भी विज्ञान में उपाधि प्राप्त की और दोनों ने मिल कर स्फटिक-विद्युत् (पीज़ो इलेक्ट्रीसिटी) विषयों का एक नया आविष्कार किया और फिर एक पत्र तैयार किया जिसके द्वारा विद्युत के छोटे-छोटे टुकड़ों का ठीक-

ठीक माप हो सकता था। अलग-अलग जगहों की नौकरी के कारण दोनों भाइयों को पृथक होना पड़ा। बड़े भाई दूसरे नगर में प्रोफेसर हो गये और पियरी पेरिस में ही अध्यापकी करने लगे। पियरी ने पढ़ाने के अतिरिक्त अपनी खोज का काम जारी रखा और "क्यूरी स्केल" और "क्यूरी ला" का आविष्कार किया। ऐसे महत्वपूर्ण और नवीन आविष्कारों के किये जाने पर भी फ्रांसीसी गवर्नमेन्ट केवल तीन सौ फ्रैंक मासिक पियरी को देती रही यद्यपि उन्हें अध्यापकी करते पन्द्रह वर्ष हो गये थे। परन्तु अन्य देशों में वह दूसरी ही दृष्टि से देखे जाते थे।

एक प्रसिद्ध अंग्रेज वैज्ञानिक लार्ड केलविन ने पियरी को लिखा—"आपने अपना बनाया हुआ यंत्र भेजने का कष्ट किया है उसके लिये बहुत धन्यवाद।······आप दोनों भाइयों का यह आविष्कार अद्भुत है।" उन्होंने दूसरे पत्र में लिखा—"मैं कल शाम पेरिस पहुँच रहा हूँ। बड़ी कृपा होगी यदि लिखें इस सप्ताह में किस दिन अपनी प्रयोगशाला में आप सुविधापूर्वक मिल सकेंगे।" लार्ड केलविन को पियरी से मिल कर आश्चर्य हुआ होगा कि लार्ड केलविन जिन्हें अपने विषय का पंडित समझते हैं। वह कैसी रद्दी जगह में बिना किसी सहायक के काम करते हैं और उन्हें पेरिस में कोई मुश्किल से ही जानता है।

पियरी एक बड़े वैज्ञानिक के अतिरिक्त कुछ और भी थे। उनका अध्ययन बहुत अधिक था। वह अच्छे लेखक थे। तथा उनमें कवि और कलाकार की भावुकता भी थी। वे ऐसे सरल स्वभाव के थे कि जब उन्हें एक प्रोफेसर के रिक्त स्थान के लिये कोशिश करने को कहा गया, तो उन्होंने उत्तर दिया—"किसी भी जगह के लिये उम्मीदवार होना बुरी बात है, और उसके निमित्त किसी तरह का प्रयत्न करने का मुझे अभ्यास नहीं। यह मुझे सर्वथा अपमानजनक प्रतीत होता है।"

जब भौतिक विज्ञान विद्यालय के संचालक ने उन्हें सम्मानित

करने का प्रस्ताव किया तो उन्होंने लिखा—"मेरी प्रार्थना है आप ऐसी कोई बात न करें……। मैं उसे अस्वीकार कर दूँगा क्योंकि मैंने निश्चय किया है कि मैं कभी किसी तरह का कोई सम्मान स्वीकार न करूँ। अपनी अस्वीकृति से दूसरों की दृष्टि में हँसी का पात्र नहीं बनना चाहता। आशा है आप मुझे इससे बचायेंगे।……मैं इसके लिये ही कृतज्ञ हूँ कि आपने मुझे सुविधापूर्वक काम करने का साधन प्रदान किया है।

११. मेरी का विवाह—

पियरी का कवि हृदय पहली ही भेंट में मन ही मन मेरी का बन्दी हो गया और वह उसकी विशेषता समझ गये। इसके बाद वह मेरी से दो तीन बार मिले और मित्रवत् व्यवहार करने लगे। उनकी नयी पुस्तक का जब दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ तो उन्होंने उसकी एक प्रति मेरी के पास भेजी। उस पर लिखा हुआ था—"श्रीमती स्कलोदोवोस्की को सादर और सप्रेम।"

प्रयोगशाला में एक दिन मेरी से भेंट होने पर पियरी ने पूछा क्या वह उसके घर मिलने आ सकते हैं? मेरी ने अपना पता दे दिया। मेरी की ग़रीबी देख कर पियरी का हृदय मसोसने लगा परन्तु इस परिस्थिति में उसके चरित्र का संतुलन देख कर वह मन ही मन उसकी प्रशंसा कर रहे थे। खाली कमरा, सादे कपड़े और अपनी सुदृढ़ मुखाकृति में मेरी उन्हें पहले कभी इतनी सुन्दर नहीं लगी थी। कई महीने बीत गये। जैसे-जैसे उनका परस्पर विश्वास और सम्मान बढ़ता गया उनकी मैत्री भी जड़ पकड़ती गयी। और वे एक दूसरे के बहुत समीप आने लगे। पियरी मेरी की सब सलाह मानते। उसके ही कहने से उन्होंने आलस्य छोड़ कर चुम्बकीय विज्ञान के अपने नये प्रयोग पर डाक्टरी

की डिग्री के लिये एक थीसिस लिखी।

मेरी अपने को अब तक स्वतन्त्र समझती थी। वह उस अन्तिम बात को सुनने के लिये तैयार नहीं थी जिसे पियरी को भी कहने का साहस नहीं होता था। एक दिन सायंकाल के समय पियरी मेरी के यहाँ गये। उसने अपने छोटे से स्टोव पर जल्दी से चाय तैयार की। चाय पीते हुये वैज्ञानिक विषयों पर बातें चल रही थीं कि पियरी ने अचानक कहा—"मैं चाहता था कि तुम एक बार मेरे माता पिता से मिलती। एक छोटे से मकान में हम लोग रहते हैं। वे लोग बहुत ही अच्छे हैं।" इसके बाद दोनों की कई बार भेंट हुई। और पियरी ने अपने दोनों के भविष्य के सम्बन्ध में बातें भी की और विवाह का प्रस्ताव भी किया परन्तु कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिला। एक फ्रांसीसी से विवाह कर अपने कुटुम्ब को सदा के लिये छोड़ देना, फिर सब राजनैतिक कामों से अपने को वंचित कर पोलैण्ड का परित्याग करना कर्त्तव्य से च्युत होना जान पड़ता था। परीक्षा पास करने के बाद बिना कुछ निश्चित रूप से कहे मेरी छुट्टियों में अपने घर चली गयी। पियरी को केवल मैत्री से सन्तोष नहीं था। मेरी छुट्टियों में जहाँ-जहाँ गयी पियरी का पत्र पहुँचता रहा। वह उसे पेरिस आने के लिये समझाते और लिखते कि मैं तुम्हारी प्रतीक्षा में हूँ।

पियरी ने मेरी को लिखा—"तुम्हारा कुछ समाचार मिलना मेरे लिये सब से अधिक सुख की बात थी। दो महीने से कोई समाचार नहीं मिला यह अच्छा नहीं लगता था। तुम्हारे छोटे से पत्र का मैंने बहुत स्वागत किया।......हम लोगों ने वादा किया है—क्या नहीं किया है?—कि हम लोग परम मित्र होंगे। हाँ, यदि तुम अपना निश्चय न बदल दो। बचन देने से कोई बँधता तो नहीं, और न ऐसी चीजें आज्ञा द्वारा करायी जा सकती हैं। फिर भी यह कैसा सुन्दर हो जिसकी पूर्ति कठिन ही जान पड़ती है, कि हम लोग अपने-अपने स्वप्नों—तुम

अपनी देश भक्ति, तुम और हम दोनों अपनी मानवता तथा विज्ञान के आदर्श—के अन्तर्गत एक दूसरे के समीप जीवन व्यतीत करें······। यदि हम दोनों मान लें कि हम लोग अभिन्न मित्र होंगे तो यह कैसे हो सकता है कि तुम एक वर्ष में फ्रांस छोड़ दो। यह तो प्लेटो वाली मैत्री हो जायगी, उन दो व्यक्तियों की जो एक दूसरे से कभी मिल न सकें। क्या यह अधिक अच्छा न होगा कि तुम मेरे ही साथ रहो। मैं जानता हूँ कि इस बात पर तुम रुष्ट होती हो, तुम इस पर कुछ कहना भी नहीं चाहती—और फिर मैं देखता हूँ कि तुम्हारे लिये हर दृष्टि से मैं सर्वथा अयोग्य हूँ।

"जहाँ तुम हो वहाँ आने की तुम्हारी स्वीकृति चाहता था······ परन्तु वहाँ शायद तुम एक ही दिन के लिये ठहर रही हो······।"

दूसरा पत्र—"मैं तुम्हारे यहाँ आने का निर्णय न कर सका। सोचता ही रह गया और अन्त में न आने की ही बात रखी। तुम्हारे पत्र से मेरी पहली धारणा यही हुई कि शायद तुम मेरा न आना अधिक पसन्द करोगी। फिर सोचा कि तब भी तुमने तीन दिन के लिये आने की बात लिखी है। मैं चलने ही वाला था परन्तु फिर जैसे संकोच ने आ घेरा कि तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध इस तरह तुम्हारा पीछा करूँ। रुकने का अन्तिम कारण था यह विचार कि शायद तुम्हारे पिता जी को मेरी उपस्थिति रुचिकर न हो और उनके सुख में कुछ बाधा पड़े। अब तो बहुत देर हो गयी, मुझे इसका खेद है मैं नहीं आया। हमारी मैत्री क्या दूनी न हो गयी होती यदि हम तीन दिन साथ रहते······?"

"क्या तुम नियति में विश्वास नहीं करतीं? क्या तुम्हें वह दिन याद है······जब भीड़ में मैंने तुम्हें अकस्मात खो दिया था? मुझे मालूम होता है हम लोगों की मैत्री बिना चाहे अकस्मात ऐसे ही टूट जायगी।······तुम्हारे लिये शायद यह अच्छा हो परन्तु मेरे मन में मालूम नहीं यह बात क्यों समा गयी है कि देश और कुटुम्ब से

निर्वासित कर मैं तुम्हें फ्रांस में रखूँ यद्यपि ऐसे त्याग के फल-स्वरूप तुम्हारे देने के लिये मेरे पास कोई अच्छी वस्तु नहीं है।"

"क्या तुम्हारा यह अभिमान नहीं है जब तुम कहती हो कि तुम बिलकुल स्वतन्त्र हो ? हम लोग सब अपने स्नेह और मुहब्बत से बँधे हुये हैं और जिनसे प्रेम करते हैं उनके प्रति अपनी भावनाओं के दास हैं, चाहे वे पक्षपातपूर्ण ही क्यों न हों ? जीवन निर्वाह के लिये हम लोगों को कमाना होगा ही और इस प्रकार यंत्र का एक भाग बनना ही पड़ेगा।"

"इस बात से बड़ा क्लेश होता है कि हम लोगों को समाज की रूढ़ियों से, जो मुझे घेरे हुये हैं, दबना पड़ता है। जिसकी जितनी शक्ति होती है उसके अनुसार कम या अधिक प्रत्येक को दबना पड़ता है। यदि हम पर्याप्त शक्ति नहीं लगा पाते तो समाप्त हो जाते हैं, और यदि अत्यधिक निर्बलता दिखाते हैं तो पतित हो जाते हैं और अपने से घृणा होने लगती है। दस वर्ष पहले जो मेरे सिद्धान्त थे उनसे मैं अब बहुत दूर हूँ। उस समय मैं सोचता था व्यक्ति को अपूर्ण नहीं होना चाहिये। जो करे बढ़ चढ़ कर करे और परिस्थितियों से किसी तरह प्रभावित न हो......। मैं मजदूरों की भाँति केवल नीली कमीज पहनता था......।"

तीसरा पत्र—"......तुम्हारे पत्र से मुझे परेशानी होती है। मेरी राय है तुम अक्तूबर में पेरिस अवश्य आवो। मुझे बहुत दुख होगा यदि तुम न आओगी। केवल मैत्री की स्वार्थ भावना से वापस आने को नहीं कह रहा हूँ, मेरा विश्वास है तुम यहाँ अधिक अच्छे रूप में लाभदायक तथा ठोस काम कर सकोगी......।"

"ऐसे व्यक्ति के सम्बन्ध में तुम्हारी क्या सम्मति होगी जो दीवाल से इस आशा में सिर टकराता है कि वह उसे गिरा देगा ? कितनी ही सुन्दर भावना से प्रेरित होकर ऐसा क्यों न किया जाय यह भावना मूर्खतापूर्ण और हास्यास्पद ही कही जायगी......।"

"तुम्हारी स्वार्थ सम्बन्धी धारणा विचित्र है। जब मैं बीस वर्ष का था मेरे एक बचपन के साथी की, जिससे मेरा प्रेम था मृत्यु हो गयी। मुझे अब भी साहस नहीं है कि उसके सम्बन्ध में सब बातें लिख सकूँ। मैं दिन रात उसी विचार में डूबा रहता और अपने को पीड़ित करने में सुख मानता। मैंने उस समय सच्चे हृदय से निश्चय किया कि मैं पादरी का जीवन व्यतीत करूँगा और अपनी तथा इहलोक की तनिक भी नहीं केवल परलोक की ही चिन्ता करूँगा……। तब से मैंने प्रायः स्वयं अपने से प्रश्न किया है कि क्या उस घटना को सर्वथा भुला देने के निमित्त मैंने यह चाल अपने ही लिये नहीं चली थी?"

"क्या तुम्हारे देश में पत्र-व्यवहार स्वतन्त्रता-पूर्वक किया जा सकता है? मुझे सन्देह है; और भविष्य में शायद यह अधिक उचित होगा कि मैं ऐसी बातें भी न लिखूँ जो दार्शनिक हैं। क्योंकि मालूम नहीं उनका क्या अर्थ लगाया जाय और तुम व्यर्थ में फँसो……।"

चौथा पत्र—"तुम्हारा चित्र पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। इसे भेज कर बड़ी कृपा की। मैं तुम्हें हृदय से धन्यवाद देता हूँ।"

"तुमने अन्त में आने का ही निश्चय कर लिया, बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं बहुत चाहता हूँ हम लोग ऐसे मित्र बनें जो पृथक ही न हों। क्या तुम सहमत नहीं हो?"

"मैंने तुम्हारा चित्र अपने भाई को दिखलाया। क्या ठीक नहीं किया? उन्होंने बड़ी प्रशंसा की और कहा—"इनके नेत्रों में बड़ी दृढ़ता है यदि उसे हठ न कहें।"

जब मेरी अपने वचन के अनुसार अक्तूबर में लौट कर आयी तो पियरी का हृदय आनन्द से भर गया। मेरी ने पेरिस में अपना यह अन्तिम वर्ष समझा था। पहले वाले कमरे को छोड़ कर वह अब अपनी बहन के औषधालय के बगल में एक कमरा लेकर रहने लगी। पियरी ने अपना अनुनय विनय यहाँ भी जारी रखा। उनका प्रेम

जितना प्रबल था उतना ही पवित्र। उनका आकर्षण उसकी ओर केवल प्रेम के कारण नहीं था, उन्हें मेरी की अत्यधिक आवश्यकता भी प्रतीत होती थी।

पियरी ने एक बार मेरी से प्रस्ताव किया कि यदि तुम्हें मेरे लिये प्रेम नहीं है तो क्या तुम यह पसन्द करोगी कि हम दोनों एक मकान में दो स्वतंत्र भाग बना कर रहें और मिल कर साथ काम करें ? अथवा मैं पोलैण्ड चला जाऊँ और वहाँ कोई सम्मानित पद प्राप्त करूँ तो क्या तुम मुझसे विवाह करोगी ? मैं फ्रेंच पढ़ाऊँगा और साधन के अनुरूप तुम्हारे साथ खोज के काम में लगूँगा। जिस गवर्नेस का एक पोलिश कुटुम्ब ने पहले तिरस्कार किया था उसके ही समक्ष आज एक प्रतिभाशाली पुरुष नम्र प्रार्थी के रूप में खड़ा था।

मेरी ने अपनी व्याकुलता और व्यग्रता ब्रोनिया से प्रकट की और यह भी बतलाया कि पियरी फ्रांस छोड़ने तक को तैयार है। इतना बड़ा त्याग करने का तो उसे अधिकार नहीं है परन्तु इतनी दूर तक जाने की बात सोचना ही उनके प्रेम की प्रबलता का द्योतक है।

जब पियरी को पता चला कि मेरी ने अपनी बहन से इसके सम्बन्ध में कहा है तो ब्रोनिया से जिससे वह पहले कई बार मिल चुके थे स्वयं मिलने गये। ब्रोनिया को पियरी ने पूरी तरह जीत लिया और मेरी के साथ अपने घर आने के लिये कहा। जब दोनों बहनें वहाँ गयीं, पियरी की माता ने ब्रोनिया को अलग ले जाकर कहा, "अपनी छोटी बहन से कह देना, संसार में एक आदमी भी ऐसा नहीं जो मेरे पियरी की बराबरी कर सके। तुम्हारी बहन सोच-विचार न करे। वह उसके साथ दूसरों की अपेक्षा कहीं अधिक प्रसन्न रहेगी।"

दस महीने जब और बीते तब कहीं जाकर इस हठी लड़की ने विवाह की बात स्वीकार की। १४ जुलाई १८९५ को मेरी के भाई

जोजफ ने कुटुम्ब की ओर से स्नेह-पूर्ण सन्देश भेजा—"श्री क्यूरी की बरेच्छित होने के लिये मैं अपनी हार्दिक शुभ-कामना भेजता हूँ। तुम्हें उनके साथ सुख और प्रसन्नता प्राप्त हो जिसकी तुम मेरी तथा दूसरों की दृष्टि में जो तुम्हारे विशाल हृदय और उज्ज्वल चरित्र से परिचित हैं सर्वथा अधिकारिणी हो।......मैं समझता हूँ तुमने अपने हृदय की बात मान कर ठीक किया, इसके लिये तुम्हें कोई बुरा नहीं कह सकता। तुम्हें जानते हुये मेरा विश्वास है कि तुम सदा पोलिश तथा हृदय से इस कुटुम्ब का एक अभिन्न अंग बनी रहोगी। हम लोग भी सदा तुमसे प्रेम करते रहेंगे और तुम्हें अपना ही समझेंगे।

"......मेरा नमस्कार श्री क्यूरी से कहना और कह देना कि अपने कुटुम्ब के एक सदस्य के रूप में मैं उनका स्वागत करता हूँ। मेरी पूर्ण शुभकामना तथा मैत्री उनके लिये है। आशा है वह भी अपनी मैत्री मुझे देंगे।"

थोड़े दिन बाद मेरी ने अपने बचपन के मित्र केज़िया को लिखा "जब तुम्हें यह पत्र मिलेगा तुम्हारी मेनिया अपना नाम बदल चुकी होगी। पिछले वर्ष जिनके सम्बन्ध में मैंने कहा था उनसे मेरा विवाह होने जा रहा है। खेद है कि मुझे सदा पेरिस में रहना होगा परन्तु मैं क्या करूँ। भाग्य ने एक दूसरे को ऐसा बाँध दिया है कि हम लोग पृथक होने की बात सोच ही नहीं सकते......।"

२६ जुलाई को मेरी अपने कमरे में अन्तिम बार जगी। बहुत ही सुहावना दिन था और अपनी बड़ी बहन के दिये हुये नये कपड़े आज पहन कर वह भी बहुत सुन्दर और हरी भरी देख पड़ रही थी। उसके सहपाठियों ने ऐसा आलोक उसके मुख पर पहले नहीं देखा था। आज म० स्कोलोदोवोस्की मैडेम पियरी क्यूरी होने जा रही थी। "मेरे पास कोई और कपड़ा नहीं है सिवाय उसके जो मैं रोज पहनती हूँ," मेरी ने अपने बहनोई की माता से कहा। "यदि आप मुझे भेंट देने जा

रही हैं तो कृपया ऐसा कपड़ा दीजिये जो व्यवहार में लाया जा सके, जिसे मैं बाद में पहन कर प्रयोगशाला जा सकूँ।"

"मेरी को अपने विवाह का ढंग पसन्द था। छोटी चीजों में भी दूसरे विवाहों से इसमें कुछ विशेषता थी। न सफेद पोशाक, न सोने की अँगूठी, और न विवाह की दावत। धार्मिक संस्कार भी कोई पूरे नहीं किये जाने वाले थे। पियरी स्वतंत्र विचार के थे ही और मेरी ने भी बहुत दिनों से सब धार्मिक कृत्य बन्द कर दिया था। वकीलों की भी आवश्यकता नहीं थी क्योंकि वर-वधू दोनों के पास संसार में कोई वस्तु नहीं थी। केवल दो चमकती हुई साइकिलें थीं जिन्हें दोनों ने उस धन से खरीदा था जो उन्हें भेंट स्वरूप किसी सम्बन्धी से प्राप्त हुआ था। इन्हीं साइकिलों पर उनका विचार गर्मी में गाँवों में जाकर घूमने का था।"

"विवाहोत्सव के अवसर पर उपस्थित थे, केवल ब्रोनिया और उसके पति, कुछ बहुत ही समीपवर्ती मित्र, विश्वविद्यालय के लोग, और प्रो० स्कलोदोवोस्की—मेरी के पिता—जो हेला के साथ वारसा से आये थे। प्रो० स्कलोदोवोस्की ने विशेष रूप से वृद्ध डाक्टर क्यूरी (पियरी के पिता) से बहुत ठीक फ्रेंच में बात करने का यत्न करते हुये द्रवित हृदय और धीमी आवाज़ में कहा—मुझे भरोसा है कि मेरी आपको ऐसी लड़की मिली है जो आपके स्नेह की पात्र होगी। जब से उसने जन्म लिया है मुझे कभी कष्ट नहीं दिया।"

विवाह के पश्चात् पियरी मेरी को लेने आये। अपने माता-पिता के यहाँ मेरी को ले जाने के लिए पियरी को लकजेमबर्ग स्टेशन जाना था। जब मेरी और पियरी बस पर सवार हुये तो ऊपर बैठे हुये वे अपने परिचित स्थानों को देखते जाते थे और विश्वविद्यालय के विज्ञान विभाग की ओर से जब बस निकली तो मेरी ने अपने साथी का हाथ धीरे से दबाया। पियरी ने जब मेरी की ओर देखा तो पियरी

के नेत्रों में प्रकाश और शान्ति थी।

१२. पति-पत्नी–

मेरी अपने कार्यों को सदा सफलता पूर्वक करती। एक वर्ष तक वह सोच-विचार में पड़ी रही परन्तु विवाह हो जाने पर इस जीवन को भी उसने बहुत सुन्दर बनाने का यत्न किया। प्रारम्भ में कुछ दिनों तक वे दोनों साइकिलों पर चढ़ कर नगर से बाहर निकल जाते और जितना घूम सकते घूमते। थैले में कुछ कपड़े और भोजन की सामग्री रख लेते। दिन भर चल कर सायंकाल को किसी सराय में ठहर जाते जहाँ रात के सन्नाटे में कोई आवाज़ तक न सुनाई पड़ती। हाँ, कभी-कभी दूर से भूकने की आवाज़, चिड़ियों की बोली या बिल्लियों की म्यों-म्यों सुनाई पड़ जाती। जब वे जंगलों में प्रवेश करते या चट्टानों पर चढ़ना चाहते तो साइकिल हाथ में लेकर पैदल चलने लगते। पियरी को बचपन से ही गाँव बहुत प्रिय थे और वह गाँवों के शान्त वायुमंडल में लम्बी यात्रा किया करते। वह कहते कि दिन में ही क्यों अधिक चला जाय, रात को क्यों नहीं। समय की भी चिन्ता न करते। कभी प्रातः और कभी सायंकाल को निकल पड़ते। और यह न सोचते कि एक घंटे में लौटना है या दो तीन दिन में।

परन्तु अब मेरी के साथ रहने से पियरी के भ्रमण पहले की अपेक्षा कहीं अधिक सुखदायक होते। प्रेम ने उसके आनन्द को और बढ़ा दिया था। एक दिन घूमते हुये वे एक तालाब के पास पहुँचे। तालाब में भाँति-भाँति के कीड़ों-पतंगों को देख कर पियरी प्रफुल्लित हुये। वायु और जल के जन्तुओं का उन्हें अदभुत ज्ञान था। मेरी बैठी सुस्ता रही थी कि इतने में डर कर चिल्ला उठी। "पियरी......सच-मुच पियरी" मेरी ने रोष में और बच्चों की तरह भयग्रस्त होकर

कहा। पियरी घबरा गये। "क्या तुम्हें मेघे नहीं पसन्द हैं?" "हैं, लेकिन अपने हाथ में नहीं।" पियरी ने कहा—"तुम्हारी भूल है। मेघों को छूने में बड़ा आनन्द आता है। अपना हाथ खोलो। अब देखो यह कैसा अच्छा लगता है।" पियरी ने मेघे को वापस ले लिया और मेरी निश्चिंत हो मुस्कराने लगी। ये दिन उनके बड़े सुख के बीते। आपस का प्रेम बढ़ता गया और इतने दिनों के साथ में ही वे सदा के लिये एक हो गये।

पियरी जब मेरी के घर गये तो उसके घर वालों ने उन्हें बहुत पसन्द किया। मेरी के पिता पियरी से केमिस्ट्री, बच्चों की शिक्षा, तथा फ्रांस और पोलैण्ड के सम्बन्ध में बड़े प्रेम और उत्साह से बातें करते। पियरी स्वयं भी मेरी के भाई, बहन, बहनोई और पिता की ओर बहुत आकर्षित हुये। उनमें दूसरे देश वालों के प्रति अविश्वास की भावना थी ही नहीं। अपने प्रेम का एक नया प्रमाण देने के लिये मेरी के नहीं-नहीं करते रहने पर भी पियरी ने पोलिश सीखना प्रारम्भ कर दिया।

इसी प्रकार जब मेरी पियरी के पिता के यहाँ गयी तो सारा कुटुम्ब उसके स्वभाव और चरित्र से मुग्ध हो गया। पियरी के पिता को यह ध्यान भी नहीं हुआ कि मेरे पुत्र ने एक ऐसी निर्धन कन्या से विवाह किया है जो पेरिस में एक छोटे से कमरे में जीवन व्यतीत किया करती थी और दूसरे देश की रहने वाली है। पियरी के भाई तो मेरी की बुद्धि और चतुराई देख कर चकित हो गये। मेरी भी शीघ्र ही सब से प्रेम करने लगी।

मेरी ने देखा कि उसके श्वसुर का राजनैतिक विषयों में बड़ा अनुराग है। परन्तु पियरी के सम्बन्ध में मेरी ने बाद में लिखा था—"राजनीति में सक्रिय भाग लेने की ओर पियरी का झुकाव नहीं था। अपनी शिक्षा और भावनाओं से वह प्रजातंत्रात्मक और

समाजवादी विचारों से सहमत थे परन्तु किसी दलगत सिद्धान्त का उनके मन पर प्रभाव नहीं था......वह व्यक्तिगत अथवा सार्वजनिक जीवन, किसी में भी, हिंसा के प्रयोग में विश्वास नहीं रखते थे।"

मेरी और पियरी के मकान में तीन छोटे कमरे थे। उनके सजाने का कोई यत्न उन्होंने नहीं किया। पियरी के पिता ने कुछ कुर्सी और मेज़ आदि देना चाहा परन्तु उसे भी उन्होंने अस्वीकार कर दिया। प्रत्येक सोफा और कुर्सी उन वस्तुओं की वृद्धि ही तो करती जिनकी प्रतिदिन प्रातः सफाई करना और पूरी सफाई के दिन पालिश करना आवश्यक होता। मेरी इसे कर नहीं सकती थी, उसके पास समय नहीं था। और फिर सोफा या कुर्सी की आवश्यकता ही क्या थी जब दोनों ने किसी से घर पर मिलने या किसी के यहाँ जाने का विचार ही छोड़ दिया था। सादी और शून्य दीवालें, लकड़ी का एक सफेद मेज़ और पुस्तकें, यही वस्तुयें कमरे में दिखाई पड़तीं। मेज के एक सिरे पर पियरी और दूसरे पर मेरी बैठ जाते और दोनों के बीच मेज पर फिजिक्स आदि की पुस्तकें, लेख, तथा एक पैट्रोलियम लैम्प और फूलों का गुच्छा रखा रहता। कोई मिलने वाला यदि आता भी तो केवल इन दो कुर्सियों, जिनमें से एक भी उसके लिये न होती, और फिर पियरी तथा मेरी की शीलपूर्ण परन्तु आश्चर्य चकित दृष्टि के सामने वहाँ से फौरन चल देने के और उसके लिये मार्ग ही क्या होता?

पियरी का एक ही लक्ष्य था, मेरी के समीप रहते हुये वैज्ञानिक अनुसन्धान में लगे रहना। विज्ञान सम्बन्धी कार्य के अतिरिक्त पत्नी का भी उत्तरदायित्व उस पर था। पियरी को पाँच सौ फ्रैंक मासिक मल रहे थे। दोनों सीधे-सादे थे, उनका काम इतने में चल जाने की सम्भावना थी, और मेरी कम खर्च में काम चलाना जानती थी। उसने फौरन ही एक हिसाब की कापी खरीदी।

मेरी प्रातः और मध्याह्न का समय प्रयोगशाला में व्यतीत करती।

प्रयोगशाला उसके सुख का साधन था परन्तु उसे इसका भी ध्यान रखना पड़ता कि घर में झाड़ू देना, बिस्तर लगाना, और पियरी के कपड़े ठीक रखना है, तथा उनके लिये अच्छा भोजन बनाना है क्योंकि कोई मजदूरिन तो थी नहीं।

मेरी बाजार जाने के लिये तड़के उठती और प्रयोगशाला में जाने के पहले दिन के खाने के लिये शाक आदि काट कर रख जाती। शाम को स्कूल से लौटते हुये वह पियरी को डेयरी में और बनिये की दूकान पर ले जाती। कहाँ वह शोरवा बनाना भी पहले नहीं जानती थी परन्तु अब तो उसके लिये सब तरह का खाना बनाना सीखना आवश्यक हो गया था। वह अपनी बहन के यहाँ चुपके से जाकर बनाना सीखती और घर पर आकर पियरी के लिये अच्छी चीज़ें तैयार करने का यत्न करती। परन्तु पियरी दूसरी बातों में इतने व्यस्त और अपने विचारों में ऐसे मग्न रहते कि उन्हें इसका ज्ञान ही न होता कि मेरी को इन चीजों के लिये कितना परिश्रम करना पड़ता है।

मेरी को इसका बड़ा भय रहता कि कहीं उसकी सास उसे भोजन बनाते देख कर यह न कह पड़े कि इसके घर पर क्या इसे यह। सिखाया गया है। वह प्रतिदिन भोजन बनाने की विधि पुस्तकों में देखती, उसके अनुसार बनाती, और पुस्तक पर ही एक किनारे अपनी उन्नति और सफलता नोट कर लेती। प्रायः वह ऐसी वस्तुयें बनाना पसन्द करती जो सादी हों और ऐसी भी जिसे अंगीठी पर रख कर वह स्कूल जा सके और जो धीरे-धीरे पकती रहें। फिर भी खाना बनाना उतना ही कठिन था जितना रसायन-विज्ञान। परन्तु धीरे-धीरे उसने उन्नति की। पहले चीजें जल कर खराब हो जाती थीं, अब वह उन्हें ठीक बना लेने लगी। आठ घंटे विज्ञान सम्बन्धी खोज, और दो तीन घंटे घर का काम, मेरी के लिये इतना पर्याप्त नहीं था।

सायंकाल को व्यय का विवरण लिखने के पश्चात्—पियरी का कितना हुआ और मेरी का कितना—मेरी अपनी मेज पर 'फेलोशिप प्रतियोगिता' के पाठ्यक्रम की तैयारी के लिये बैठ जाती। दूसरे किनारे पर पियरी अपने काम में लगे रहते। दोनों की दृष्टि जब कभी मिल जाती तो मेरी को पियरी से सराहना और स्नेह का सन्देश मिल जाता और दोनों में प्रेम-पूर्ण मुस्कान का आदान-प्रदान हो जाता। दो-तीन बजे रात तक उनके कमरे में धीमा प्रकाश दिखाई पड़ता और वहाँ की शान्ति कभी-कभी पन्नों के उलटने या कलमों के चलने की आवाज़ से ही भंग होती।

मेरी का अपने भाई को पत्र (नवम्बर २३-१८९५)—"हम लोग अच्छे हैं और स्वस्थ हैं……। मैं कमरों आदि की व्यवस्था धीरे-धीरे कुछ ठीक करती जा रही हूँ परन्तु मैं उसे ऐसा ही स्वरूप देना चाहती हूँ जिसमें मुझे अधिक चिन्ता न करनी पड़े क्योंकि मेरा कोई सहायक नहीं है। केवल एक स्त्री एक घंटे के लिये आती है जो बरतनों को साफ करती है और दूसरे भारी काम कर देती है।"

"थोड़े-थोड़े दिनों पर हम दोनों अपने श्वसुर के यहाँ चले जाते हैं……प्रायः साइकिल पर ही जाते हैं। जब मूसलाधार पानी बरसता है तब रेल पर चले जाते हैं। अभी तक मेरी नौकरी तय नहीं हुई है……।"

दूसरा पत्र—"हमारा जीवन पूर्ववत चल रहा है। हम लोग ब्रोनिया, उसके पति तथा पियरी के माता-पिता के अतिरिक्त किसी और से नहीं मिलते। मुश्किल से ही थियेटर जाते हैं या किसी दूसरे मनबहलाव में सम्मिलित होते हैं। हम लोग ईस्टर में सम्भवतः कई दिन की छुट्टी मनावेंगे और कहीं घूमने के लिये निकल जायँगे।… गाँवों में हरियाली ही हरियाली है……। यहाँ पेरिस की सड़कों पर भी फूल बड़े सस्ते बिकते हैं और हम लोग गुच्छे के गुच्छे खरीद कर

घर में आते हैं।"

मेरी का भाई और भाभी को पत्र—"इस वर्ष घर आने की मेरी कितनी इच्छा थी। चाहती थी तुम दोनों को हृदय से लगाऊँ। परन्तु दुख है कि इसे सोच भी नहीं सकती। न मेरे पास समय है न पैसा। ......जिस परीक्षा में मैं बैठ रही हूँ वह मध्य अगस्त तक समाप्त होगी।"

मेरी जब इस परीक्षा में प्रथम हुई तो पियरी बहुत ही प्रसन्न हुये। और परीक्षा के बाद ही दोनों गाँव की तरफ घूमने निकल गये।

विवाह के दूसरे वर्ष मे मेरी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहा। वह गर्भवती हो गयी। उसे बच्चे की बहुत लालसा थी। परन्तु मेरी नहीं जानती थी कि वह इसमें इतनी बीमार हो जायगी और प्रयोगशाला में खड़ी भी न हो सकेगी। उसने अपने मित्र (केज़िया) को लिखा—

"पिछले हफ्तों में मेरी तबीयत बिलकुल अच्छी नहीं रही। इसी कारण न लिखने की शक्ति थ। न मन में उत्साह। मुझे बच्चा होने वाला है परन्तु इस अभिलाषा की पूर्ति में बड़ी क्रूरता है। दो महीने से मुझे बराबर चक्कर आ रहा है, सबेरे से रात तक। यद्यपि मैं देखने में बीमार नहीं लगती परन्तु निर्बलता बढ़ती जा रही है, थक जाती हूँ, काम नहीं करते बनता और न किसी तरह का उत्साह रह गया है। मेरी सास बहुत अधिक बीमार है। इस कारण अपनी इस अवस्था से और उद्विग्न हूँ।"

पियरी और मेरी पिछले दो वर्ष में एक घंटे के लिये भी अलग नहीं हुये थे। जुलाई १८९७ में थोड़े दिन के लिये पहले पहल मेरी अपने पिता के साथ पोर्ट ब्लैक़ में जाकर रही। पियरी ने मेरी को लिखा—

"......तुम्हारा पत्र आज मिला, बहुत ही प्रसन्न हुआ।...... यहाँ कोई विशेष बात नहीं है सिवाय इसके कि तुम्हारा यहाँ न होना

मुझे बहुत अखरता है, मेरी आत्मा उड़कर तुम्हारे साथ चली गयी है……।"

मेरी ने उत्तर दिया—"……दिन बड़ा सुन्दर है……तुम्हारे बिना मैं बहुत दुखी हूँ, जल्दी आवो। मैं रोज सवेरे से शाम तक तुम्हारी प्रतीक्षा करती हूँ परन्तु तुम आते नहीं देख पड़ते।……मैं अच्छी हूँ, जितना काम कर सकती हूँ करती हूँ परन्तु पोयंकारे की पुस्तक जितना मैं समझती थी उससे अधिक कठिन है। इसके सम्बन्ध में तुमसे बात करूँगी और आवश्यक तथा कठिन अंश तुम्हारे साथ पढ़ूँगी।"

पियरी ने लिखा—"……मैं अपनी परमप्यारी मेरी को जिससे मेरा जीवन ओत-प्रोत है सोचा करता हूँ। मैं चाहता हूँ मुझे कुछ नयी शक्ति प्राप्त हो जाय। जब मेरा मन पूरी तरह तुम पर लगा रहता है, जैसा कि अभी लगा हुआ था, तो मुझे ऐसा आभास होता है कि मैं तुम्हें यहाँ से बैठा हुआ देख सकूँगा, जो तुम कह रही हो वह जान लूँगा, और तुम्हें भी इसका अनुभव करा सकूँगा कि इस क्षण में मैं पूर्णतः तुम्हारा हूँ—परन्तु तुम्हारा स्पष्ट चित्र देख सकने में सफल नहीं हो पाता।"

अगस्त के प्रारम्भ में पियरी मेरी के पास गये। मेरी का यह आठवाँ महीना था। पागलों की सी विवेकशून्यता में पियरी और मेरी साइकिल पर बहुत दूर तक घूमने निकल गये। मेरी ने कहा कि वह बिल्कुल अच्छी है और पियरी ने उस पर विश्वास कर लिया। पियरी का विचार था कि मेरी को कभी कुछ हो ही नहीं सकता। परन्तु कुछ अधिक दूर पहुँचने पर मेरी ने लज्जित हो कर अपनी विवशता प्रकट की। वह अब आगे नहीं जा सकती थी। दोनों पेरिस लौट आये।

पेरिस में मेरी को लड़की हुई। 'आइरीन' एक सुन्दर बच्चा जो

बाद में नोबल पुरस्कार विजेता हुई। पियरी के पिता डाक्टर क्यूरी की देख-रेख में बच्चे ने जन्म लिया और मैडेम क्यूरी ने दाँत पर दाँत रखे, बिना एक शब्द मुँह से निकाले प्रसव पीड़ा को सहन किया। मेरी ने अपने ऊपर बहुत कम व्यय किया। परन्तु घर का कुल व्यय जब इस मास में लगभग ४६० फ्रेंक हुआ तो उसे देख कर मेरी खिन्न हुई और अपनी खिन्नता प्रकट करने के लिये उसने ४६० फ्रेंक के नीचे दो बड़ी मोटी-मोटी लकीरें अपनी हिसाब की कापी में खींच दी।

वैज्ञानिक और कौटुम्बिक जीवन के बीच केवल एक के चुन लेने की बात मेरी ने कभी नहीं सोची। उसने प्रेम, मातृत्व और विज्ञान तीनों को प्रसन्नता पूर्वक अपनाया। इनमें से वह किसी एक को भी धोखा नहीं देना चाहती थी। अपने दृढ़ संकल्प और लगन से वह तीनों में सफल हुई।

मेरी ने अपने पिता को लिखा—"मैं अपनी छोटी रानी की अब भी पूरी सेवा कर रही हूँ। परन्तु इधर हम लोग कुछ चिन्तित हो गये थे। पिछले तीन सप्ताह से आइरीन का वजन अकस्मात घट गया है और वह बीमार तथा बिल्कुल सुस्त और निर्जीव दिखाई देने लगी है। उसका वजन बढ़ गया तब तो मैं ही उसकी देख भाल करती रहूँगी, नहीं तो एक दाई रख लूंगी यद्यपि इससे मुझे कष्ट होगा और खर्च भी बढ़ जायगा……। आइरीन मेरे अथवा नौकर के साथ रोज टहलने जाती है और मैं उसे एक छोटे चीनी के पात्र में नहलाती हूँ।" डाक्टरों की सम्मति से मेरी ने एक आया तो रख लिया परन्तु उसे वह स्वयं नहलाती और सवेरे, दोपहर, शाम और रात में उसके कपड़े बदलती। उसने प्रयोगशाला में अब अपना काम प्रारम्भ कर दिया। जब वह वहाँ कार्य करती आया बच्चे को देखती। तीन मास में ही मेरी ने एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ चुम्बकीय विज्ञान पर तैयार किया जिसकी बड़ी प्रशंसा हुई।

आइरीन के जन्म के पूर्व से ही मेरी का स्वास्थ्य गिरने लगा था। इस समय भी उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था। उसके बहनोई तथा एक दूसरे डाक्टर ने उसकी परीक्षा की। उन्होंने उसके बायें फेफड़े में क्षय रोग के चिह्न बताये। उसकी माता क्षय से ही मरी थी इसलिये डाक्टरों को अधिक सन्देह हुआ और उन्होंने मेरी को कहीं पहाड़ पर जा कर रहने की सम्मति दी। परन्तु हठी मेरी ने सुनी अनसुनी कर दी और जाने से इंकार किया। उसे चिन्ता थी प्रयोगशाला, पति, पुत्री और घर की।

दाँत निकलने के कष्ट में यदि आइरीन के तनिक भी आँसू देख पड़ जाते, उसे सर्दी लग जाती अथवा और कोई भी छोटा-मोटा कष्ट हो जाता तो उससे घर की शान्ति भंग हो जाती और दोनों वैज्ञानिक बिना सोये चिन्ता में सारी रात व्यतीत कर देते। कभी ऐसा भी होता कि मेरी सहमी हुई स्कूल से घर की ओर दौड़ पड़ती कि आया ने कहीं बच्चे को खो तो नहीं दिया परन्तु ज्योंही दूर से गाड़ी में कोई सफेद-सी चीज दिखाई पड़ती मेरी की व्याकुलता दूर हो जाती।

आइरीन के जन्म के थोड़े ही दिन बाद मेरी की सास की मृत्यु हो गयी। उसके श्वसुर मेरी के साथ आकर रहने लगे। उनसे मेरी को बड़ी सहायता मिलती। आइरीन उनसे बहुत ही अधिक हिल-मिल गयी और वही आइरीन के सब से अच्छे साथी और प्रथम अध्यापक हुये।

१३. रेडियम का आविष्कार—

घर का काम और बच्चे की सेवा करते हुये भी मेरी इस समय एक अत्यन्त महत्वपूर्ण खोज में लगी हुई थी। १८९७ के अन्त में उसने विश्वविद्यालय की उपाधियाँ प्राप्त कीं और अब डाक्टर की

उपाधि के लिये उसे निबन्ध लिखना था। इसका विषय क्या हो ? वैज्ञानिक हेनरी बेक्रल की पुस्तक मेरी ने पहले पढ़ी थी। दुबारा उसने फिर पढ़ा। हेनरी ने यूरेनियम के लवणों की जाँच की थी परन्तु अपने अनुमान से सर्वथा भिन्न उन्होंने एक नया दृश्य यह देखा कि यूरेनियम लवण बिना बाह्य प्रकाश के स्वतः एक विशेष प्रकार की रश्मियाँ, जिनका स्वरूप अस्पष्ट है, अपने अन्दर से बाहर को विसर्जित करता है। हेनरी इस निश्चित मत पर भी पहुँचे थे कि ये रश्मियाँ सूर्य के समक्ष रखने से नहीं निकलतीं बल्कि जब यूरेनियम यौगिक (Compound) महीनों तक अंधकार में रखा रहता है तब भी निकलती हैं। पहले पहल हेनरी ने ही इस दृश्य को देखा परन्तु इस प्रकाश अथवा विकिरल (Radiatian) का क्या स्वरूप है और यह कहाँ से प्रस्फुटित होता है यह उनके लिये एक पहेली हो रही। इसका ही स्वरूप समझ कर बाद में मेरी ने इसको रश्मि शक्तित्व या रेडियो ऐक्टिविटी का नाम दिया।

हेनरी की इस खोज ने दोनों क्यूरियों को आकर्षित किया। मेरी ने इसे अपने निबन्ध का विषय बनाया। यह शक्ति कहाँ से आती है और इसका स्वरूप क्या है ? मेरी को यह एक सर्वथा नवीन क्षेत्र देख पड़ा। उसके सामने समस्या थी कि इस विषय पर वह कहाँ प्रयोग करे। पियरी के यत्न करने पर फ़िज़िक्स स्कूल का एक सब से नीचे का कमरा मिला जो गोदाम के काम में लाया जाता था और जिसमें सील बहुत अधिक थी। आवश्यक साधनों और यंत्र आदि की कमी थी हो। कमरे में सील के कारण यंत्र ठीक काम नहीं करते थे और मेरी के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ता था। उसने एक दिन अपनी नोट बुक में लिखा "तापमान यहाँ ६·२५ है" और फिर उसके सामने दस '!' ऐसे चिह्न लगा दिये।

इस खोज में मेरी को सब से अधिक सहायता 'क्यूरी इलेक्ट्रो-

मीटर' से मिली जिसका आविष्कार पियरी और उनके भाई ने किया था। कई सप्ताह के बाद मेरी इस परिणाम पर पहुँची कि यूरेनियम की मात्रा के अनुपात में ही विकिरण उत्पन्न होता है। और इस विकिरण पर किसी वाह्य पदार्थ जैसे प्रकाश, तापमान अथवा उसके किसी रसायनिक योग का प्रभाव नहीं पड़ता। मेरी जितना इस अनुसन्धान की तह में पहुँचती उसे मालूम होता कि यूरेनियम रश्मियाँ सर्वथा नवीन हैं और जिनका पता अब तक नहीं था। वे किसी दूसरे पदार्थ के समान नहीं हैं और न उन पर किसी का प्रभाव पड़ता है। उनकी शक्ति यद्यपि निर्बल है परन्तु उनका व्यक्तित्व असाधारण है।

बहुत परिश्रम करने के पश्चात् मेरी इस परिणाम पर पहुँची कि यह विकिरण एक तात्विक-गुण (atomic property) है। मेरी ने इसकी भी परीक्षा करनी प्रारम्भ की कि विकिरण केवल यूरेनियम मे ही है या और दूसरे पदार्थों में भी। उन सब रसायनिक पदार्थों के शुद्ध तथा यौगिक (Compound) रूप का अध्ययन मेरी ने किया जिनकी अब तक जानकारी थी और उसने देखा कि यूरेनियम से ही नहीं दूसरे तत्व थोरियम के यौगिक से भी उसी तरह की रश्मियाँ निकलती हैं। मेरी का अनुमान सत्य निकला और उसने अब इसे नया नाम देने का निश्चय किया। इसका नाम मेरी ने रेडियोएक्टिविटी (रश्मि शक्तित्व) रखा और जिन रसायनिक पदार्थों जैसे यूरेनियम और थोरियम में यह विकिरण हो उन्हें रश्मितत्व (Radio clements) का नाम दिया।

मेरी प्रति दिन कोई न कोई नया प्रयोग करती रहती। उसकी जिज्ञासा जाग्रत हो चुकी थी। एक दिन अचानक उसे पता चला कि जिन पदार्थों की वह परीक्षा करती है उनमें यूरेनियम और थोरियम जितना विद्यमान है उससे हिसाब में कहीं अधिक रश्मि शक्तित्व की शक्ति होती है। मेरी ने सोचा इसमें कुछ भूल न हो। उसने बार-बार

जाँच की और इसे ठीक ही पाया। विकिरल का यह आधिक्य आता कहाँ से है? एक ही उत्तर था। खनिज पदार्थों में कोई रश्मि-शक्तित्व पदार्थ है और वह स्वतः एक नवीन रसायनिक तत्व है जिसका अभी तक पता नहीं था। एक नवीन तत्व!

मेरी बहुत प्रसन्न हुई। अपनी बड़ी बहन के पास जा कर उसने एक दिन कहा "विकिरल एक नये रसायनिक तत्व से आता है। वह तत्व क्या है इसका मुझे पता लगाना है। जिन वैज्ञानिकों से मैंने इसके सम्बन्ध में कहा वे कहते हैं, शायद मैंने प्रयोग में भूल की हो। परन्तु मुझे विश्वास है कि भूल नहीं है।"

अब तक पियरी साधारणतः अपने परामर्श से ही मेरी की सहायता करते थे परन्तु इस नये तत्व के पता लगाने के जटिल काम में पियरी ने अपना आवश्यक अनुसन्धान सम्बन्धी कार्य छोड़ कर मेरी के साथ काम करना प्रारम्भ किया। अब दो वैज्ञानिकों का सम्मिलित प्रयत्न प्रारम्भ हुआ। और इस समय से लेकर (मई या जून १८९८ से) बराबर ८ वर्ष तक पति पत्नी विज्ञान के क्षेत्र में साथ ही काम करते रहे। यह कह सकना बड़ा कठिन था कि किसी काम में पियरी और मेरी का अलग-अलग क्या हिस्सा था। "हमने पाया" "हम लोगों ने देखा" इसी तरह वे अपने प्रयोग आदि के सम्बन्ध में सदा लिखते और जब दोनों में से किसी एक की प्रधानता प्रकट करना आवश्यक होता तो "हम लोगों में से एक" की यह सम्मति है, इस प्रकार लिखते।

पियरी और मेरी ने लगभग तीन मास तक अपना प्रयत्न साथ-साथ जारी रखा। उन्होंने उस तत्व को यूरेनियम के एक खनिज में जो पिचब्लैंडी (Pitch-blende) कहलाता है, देखना शुरू किया। और विश्लेषण तथा अनुसन्धान द्वारा उन्हें मालूम हुआ कि पिचब्लैंडी के दो भिन्न-भिन्न रसायनिक अंशों में रश्मिशक्तित्व केन्द्रित है। जुलाई १८९८ में इन दो पदार्थों में से वे एक की निश्चित रूप से घोषणा कर सके।

इसका नाम रखना पड़ेगा" पियरी ने उसी स्वर में कहा जैसे छोटी आइरीन का ही नाम चुनना हो। मेरी एक क्षण के लिये चुप हुई। उसने सोचा यह आविष्कार रूस, जर्मनी, आस्ट्रिया सभी देशों में प्रकाशित होगा जो पोलैंड पर हकूमत करते हैं। क्यों न इसका नाम अपनी जन्मभूमि पर रखूँ जो दुनिया के नकशे से मिटा दी गयी है ? और उसने धीरे से कहा "क्या इसे 'पोलोनियम' कहा जाय ?"

ऐकेडमी की कार्यवाही (जुलाई १८९८) में लिखा हुआ है "यदि इस पदार्थ की वास्तविकता सिद्ध हो गयी तो हम लोग इसे 'पोलोनियम' नाम देने का विचार रखते हैं। हममें से एक के पूर्व देश के नाम पर ही इसे नामांकित किया गया है।" इस नाम से ही प्रकट है कि फ्रांसीसी महिला होते हुये भी मेरी अपने देश को नहीं भूली थी। मेरी ने इस आविष्कार की सूचना फौरन ही पोलैंड भेजी और वारसा तथा पेरिस में यह एक ही समय पर प्रकाशित हुआ।

अपने छोटे मकान में पियरी और मेरी का कौटुम्बिक जीवन पूर्ववत् चल रहा था परन्तु अब मेरी और पियरी को पहले की अपेक्षा बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ता। जब गर्मी आयी और मेरी को अवकाश मिला तो उसने बाजार से कुछ टोकरी फल खरीदे और उन्हें पकाकर शरद ऋतु के लिये रख दिया। और वह भी सहस्रों दूसरी नवयुवतियों के समान छुट्टियों में अपने पति और बच्चे के साथ भ्रमण करने निकल गयी। वे पहाड़ों पर चढ़ते, इधर-उधर घूमते और नदी में स्नान करते। 'पोलोनियम' के सम्बन्ध में बात करते हुये सोचते कि लौटने पर वे नवीन उत्साह से अपने खोज के काम में लग सकेंगे।

मेरी के उत्साह में एक बात से बाधा पड़ी। ब्रोनिया ने जो अभी तक पेरिस में ही रहती थी पोलैंड जाने का निश्चय किया। उसका वहाँ पर एक सैनिटोरियम बनाने का विचार था। उसके चले जाने से

मेरी को बहुत दुख हुआ। मेरी ने बहन को पत्र लिखा—"तुम नहीं समझ सकतीं कि तुमने मेरे जीवन को कैसा अपूर्ण बना दिया है। तुम्हारे और तुम्हारे पति के चले जाने के बाद मेरे पति और बच्चे के अतिरिक्त अब मेरा पेरिस में कोई रहा ही नहीं। मुझे प्रतीत होता है कि घर और स्कूल के अतिरिक्त पेरिस का मेरे लिये अस्तित्व ही नहीं रहा। अपने पति से पूछना कि जो हरे पौदे वे छोड़ गये हैं क्या उन्हें पानी देना है, यदि देना है तो कितनी बार? क्या इन्हें अधिक गर्मी पहुँचाने और धूप दिखाने की आवश्यकता है?

"वर्षा, कीचड़ तथा खराब ऋतु होते हुये भी हम लोग अच्छे हैं। आइरीन बड़ी हो रही है। खाने में बहुत परेशान करती है। खीर के अतिरिक्त कुछ खाती ही नहीं, अंडे भी नहीं। मुझे लिखना, इस आयु के बच्चे को क्या-क्या खिलाना उचित होगा?"

आइरीन की छोटी-छोटी बातों से मेरी प्रेम करती थी। उसके नोटबुक से कुछ मनोरंजक बातों का पता चलता है। "आइरीन कहती है—'धन्यवाद'" "दोनों हाथ और दोनों पैर के सहारे वह खूब चल लेती है। कहती है 'गोगली'—'गोगली'—'गो'। वाटिका में दिन भर रहती है। लुढ़क जाती है, फिर स्वयं उठती है और बैठ जाती है।"

आइरीन का प्रथम दाँत निकलना मेरी के नोट बुक में लिखा हुआ था। उसका वजन और वह क्या खाती है यह भी मेरी प्रतिदिन नोट करती। नोटबुक में एक स्थान पर लिखा हुआ है—"बाई तरफ नीचे की ओर आइरीन को सातवाँ दाँत निकला है, वह अकेली आधी मिनट तक खड़ी हो सकती है। पिछले तीन दिन से हम लोग उसे नदी में नहला रहे हैं। पहले रोती थी परन्तु आज (चौथा दिन) रोना बन्द कर दिया और हाथ से पानी उछालती रही। वह बिल्ली के साथ खेलती है और युद्ध घोष करती हुई उसका पीछा करती है। वह अब

अनजान लोगों से नहीं डरती। खूब गाती है और जब कुर्सी पर बैठती है तो मेज पर पहुँच जाती है!"

तीन मास पश्चात् मेरी ने लिखा है—"आइरीन बहुत अच्छी तरह चल सकती है। उसे अब हाथों के सहारे की आवश्यकता नहीं रही।"

लगभग तीन मास बाद फिर—"आइरीन के अब पन्द्रह दाँत हैं।"

ऊपर के दो नोट के बीच कि "आइरीन अच्छी तरह चल सकती है" और "आइरिन के पन्द्रह दाँत हैं" मेरी और पियरी का एक दूसरा महत्वपूर्ण नोट मिलता है जो ऐकेडमी की २६ दिसम्बर १८६८ की कार्यवाही में लिखा हुआ है। यह पिचब्लैंडी (Pitch-blende) के दूसरे नवीन रसायन तत्व के सम्बन्ध में है। उसकी कुछ पंक्तियाँ ये हैं—"जो विभिन्न कारण ऊपर बताये गये हैं उनसे हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि नये रश्मि शक्तित्व पदार्थ (Radio active subtance) में एक नया तत्व है जिसका नाम हम लोग 'रेडियम' रखते हैं। नये रश्मिशक्तित्व पदार्थ का रश्मिशक्तित्व काफी अधिक है अतएव रेडियम का रश्मिशक्तित्व तो बहुत ही अधिक होगा।"

१४. रेडियम के प्रत्यक्ष दर्शन-

रेडियम का आविष्कार उन मूल सिद्धान्तों में क्रान्तिकारी परिवर्तन उत्पन्न करता था जिन्हें वैज्ञानिक संसार अब तक मानता चला आ रहा था। अतएव भौतिक विज्ञानवादी इसे फौरन मान लेने के लिये तैयार नहीं था। उसका इस खोज की नवीनता से प्रभावित होना स्वाभाविक था परन्तु उसकी सम्मति में अभी और अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता थी और वह इसे तब मानना चाहता था जब यह आविष्कार और निश्चित रूप धारण कर ले। केमिस्ट के विश्वास

के लिये तो और भी अधिक स्थूल स्वरूप की आवश्यकता थी। वह तो जब तक पदार्थ को देख न ले, छू न ले और उसके वजन आदि की जाँच न कर ले सन्तुष्ट होता ही नहीं। इन सब बातों की पूर्ति के लिये मेरी और पियरी ने चार वर्ष तक सतत परिश्रम किया।

शुद्ध रेडियम और पोलोनियम की प्राप्ति दोनों का उद्देश्य था। इसमें तीन कठिनाइयाँ थीं। जब तक (ore) आवश्यक खनिज बहुत अधिक मात्रा में न मिले इस नये धात को पृथक करना सम्भव नहीं था। परन्तु इतनी बड़ी मात्रा में आवश्यक खनिज (ore) मिले कहाँ से? और ऐसा स्थान कहाँ मिले जहाँ यह प्रयोग किया जाय? फिर इस सब के लिये धन कहाँ से आवे?

अपने एक मित्र से उन्होंने एक खान के मालिक को पत्र लिखवाया। खनिज (ore) के ख़रीदने और उसे पेरिस लाने में काफ़ी व्यय होता था। अपनी अल्प आय में से ही पियरी और मेरी ने इस व्यय को वहन करने का निश्चय किया और फ्रांस की गवर्नमेन्ट या विश्वविद्यालय से न तो उधार और न सहायता लेने की बात सोची क्योंकि वे जानते थे कि दोनों के अधिकारी वर्ग केवल उनकी हँसी उड़ायेंगे। यदि वे लिखते तो उनका पत्र फाइलों में पड़ा रह जाता और उत्तर के लिये, जो शायद नहीं ही आता, महीनों तक प्रतीक्षा करनी पड़ती। विश्वविद्यालय में क्या उन्हें कम से कम कोई कमरा काम करने के लिये मिल सकता है? परन्तु यह भी उन्हें नहीं मिला और जहाँ पियरी पढ़ाते थे उसी फ़िज़िक्स स्कूल के एक छप्पर के नीचे उन्हे अपना काम प्रारम्भ करना पड़ा। उसमें न कोई सामान ठीक था और न उसकी दशा ही ऐसी थी जिसमें कोई काम कर सकता परन्तु मेरी को इससे ही सन्तोष करना पड़ा। इस छप्पर के सम्बन्ध में वे एक बात से निश्चिन्त थे, इस ख़राब जगह को देने से कोई इंकार नहीं करेगा।

छप्पर में काम शुरू करते ही उन्हें आस्ट्रियन गवर्नमेंट की ओर।

से एक टन खनिज बिना मूल्य मिलने की सूचना प्राप्त हुई। थोड़े ही दिन पश्चात एक बहुत बड़ी गाड़ी प्रयोगशाला के सामने आकर खड़ी हो गयी। मेरी और पियरी दोनों ही उसे देखने के लिये दौड़ पड़े। पियरी अपने स्वभावानुसार शान्त रहे परन्तु बोरों को उतरते देखकर मेरी की प्रसन्नता का कुछ ठिकाना न रहा।

छप्पर असुविधा का मानो केन्द्र था। गर्मी में बहुत गर्म, सर्दी में बहुत सर्द। बरसात में पानी टपकता। पानी टपकने की जगहों पर दोनों ने चिह्न बना दिये थे जिससे वहाँ यन्त्र आदि न रखे जाँय। छप्पर में गन्दा गैस निकलने के लिये कोई चिमनी नहीं थी इसलिये वे प्रायः आंगन में काम करते और ज्योंही पानी आता अपने सामान सहित अन्दर भागते। वहाँ दम न घुटे इसलिये किवाड़ और खिड़कियों को थोड़ा खोले रहते यद्यपि उनसे बर्फ जैसी ठंडी वायु आती रहती। डाक्टरों को मेरी के फेफड़े के सम्बन्ध में जो सन्देह था, उसका यहाँ अच्छा उपचार हो रहा था।

इस छप्पर के जीवन के सम्बन्ध में मेरी ने बाद में लिखा था—"न हमारे पास पैसा था न प्रयोगशाला, और न इस कठिन काम में कोई सहायक। जैसे अभाव से भाव की उत्पत्ति करनी थी।......... यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि मेरे पति और मेरे जीवन का यह भाग सब से अधिक वीरता का था।......तब भी इस जर्जर छप्पर में ही हमारा सब से सुन्दर और सुखद जीवन व्यतीत हुआ क्योंकि काम में हम लोगों ने अपना सर्वस्व लगा रखा था। अपने बराबर ऊँचे छड़ों से कभी-कभी मैं दिन भर उबलते हुये लोहे के थक्कों को चलाती रहती और सायंकाल के समय थक कर चूर-चूर हो जाती।"

इस स्थिति में पियरी और मेरी ने दस वर्ष (१८९२-१९०२) काम किया। दिनों के काम महीनों और महीनों के वर्षों में बढ़ते चले गये। १८९९ में मेरी ने अपनी बड़ी बहन को लिखा—

"हम लोगों का जीवन सदा एकसा ही रहता है। हम लोग खूब काम करते हैं परन्तु अच्छी तरह सोते हैं इसलिये स्वास्थ्य बिगड़ता नहीं। सायंकाल का समय बच्चे की सेवा में व्यतीत होता है। प्रातः उसके कपड़े बदलती हूँ और खाना खिलाने के बाद लगभग नौ बजे बाहर जाती हूँ। इस पूरे वर्ष में हम लोग न थियेटर देखने और न कहीं संगीत सुनने गये। एक बार भी नहीं। यह हमें अच्छा ही लगा।......मुझे घर की बहुत याद आती है, विशेष कर तुम्हारी, तुम्हारे पति की और पिता की। यहाँ बिलकुल अकेले होने की बात सोच कर मन दुखी होता है। और कोई शिकायत मुझे नहीं है। हम लोगों का स्वास्थ्य खराब नहीं है, आइरीन अच्छी तरह बढ़ रही है, और पति तो मुझे इतने अच्छे मिले हैं जैसे वे कोई स्वप्न के वस्तु हों। मेरे अनुमान के भी परे था कि मैं ऐसा व्यक्ति पाऊँगी। वह तो स्वर्ग की सच्ची देन है और जैसे-जैसे हम लोगों के दिन साथ-साथ व्यतीत हो रहे हैं हमारा प्रेम एक दूसरे के प्रति बढ़ता जाता है।

"हमारा विज्ञान सम्बन्धी कार्य उन्नति पर है। उस विषय पर मुझे शीघ्र ही एक व्याख्यान देना है।......"

मेरी ने अपने पत्र में कार्य की उन्नति के सम्बन्ध में संकेत सा ही किया है परन्तु वह वास्तव में बहुत तेजी से उन्नति कर रहा था। उन्हें कुछ सहायकों की आवश्यकता थी। अभी तक केवल दो सहायक ऐसे मिले थे जो अपने काम से समय निकाल कर थोड़ा वक्त यहाँ देते। परन्तु अब पूरा समय देने वाले और दक्ष वैज्ञानिकों की उन्हें ज़रूरत थी। काम इतना अधिक था और साधन इतना अपूर्ण कि पियरी अकेले थक जाते। साधन के अभाव से मेरी को भी अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता। पियरी कभी कहने लगते, जब तक पर्याप्त रूप से साधन एकत्र न हों क्यों न इसे कुछ दिनों के लिये स्थगित कर दिया जाय। परन्तु मेरी को काम रोकना स्वीकार नहीं

था क्योंकि अब वह सफलता के समीप थी।

आइरीन को नहला कर सुला देती। वह सदा सुलाने के थोड़ी देर बाद तक आइरीन के पास बैठती। यह एक प्रथा-सी थी। फिर वह प्रयोगशाला में पहुँच जाती। रात के समय माता को अपने पास न पाकर आइरीन जग कर "मी-मी" पुकार कर चिल्लाती रहती जब तक मेरी उसके पास आ न जाती। मेरी सीढ़ी पर चढ़ती हुई फौरन दौड़ कर अपनी चार वर्ष की बच्ची के पास पहुँच जाती और जब तक वह पूरी तरह सो न जाती वहाँ बैठी रहती। पियरी बराबर प्रतीक्षा में रहते और अधीर हो जाते। सरल और स्नेहपूर्ण होते हुये भी वह अपना पूर्ण अधिकार मेरी पर रखना चाहते थे। मेरी उनकी ही रहे यही उनकी आकांक्षा रहती। साथ रहते-रहते एक क्षण के लिये भी यदि वह मेरी से अलग होते तो उन्हें मालूम होता कि जैसे वह सोच ही नहीं सकते। और यदि मेरी आइरीन के पास देर तक बैठ जाती तो वह कुछ कुपित होकर कहते—"तुम्हें बच्चे के अतिरिक्ति और किसी चीज़ का ध्यान रहता ही नहीं।"

मेरी रात को भी काम करती। दिन भर काम से थकी हुई एक दिन जब मेरी घर लौटी तो उसका मन वहाँ लगता ही न था। आज उसे श्रम का फल-हाथ आता दिखाई देता था। रात के नौ बजे थे। मेरी ने प्रयोगशाला चलने की इच्छा प्रकट की। पियरी स्वयं भी यही चाहते थे। दोनों गये। प्रयोगशाला पहुँच कर मेरी ने कहा रोशनी न जलाओ। रेडियम तेजी से सुन्दर रूप में चमक रहा था। देखो! देखो! मेरी ने कहा। मेरी रेडियम की तरफ झुकी हुई उत्सुकता से ऐसा देखने लगी मानो एक घंटा पूर्व वह अपने बच्चे के ही पास बैठी हो। पियरी की भी दृष्टि उसी ओर थी और उन्होंने प्रेम पूर्वक मेरी के बालों में अपनी अँगुलियाँ फेरीं। क्या मेरी इस अलौकिक सायंकाल को जीवन पर्यन्त विस्मरण कर सकती थी?

ठीक पैंतालीस मास के पश्चात् सन् १६०२ में मेरी अपने प्रयोग में सफल हुई और एक ग्रेन का दसवाँ हिस्सा शुद्ध रेडियम उसने तैयार किया और इस नये तत्व का परमाणु भार (atomic weight) २२५ निश्चित किया। रसायज्ञों ने भी अब इस स्पष्ट प्रमाण के सामने सिर झुका दिया।

रेडियम की सत्ता अब सर्वथा स्वीकृत थी।

१५. पियरी और मेरी की तपस्या—

पियरी यदि अपनी पूरी शक्ति वैज्ञानिक कार्य में लगा सकते तो उन्हें बहुत सुख मिलता। परन्तु उनके सामने जीवन के दूसरे संघर्ष भी थे। पियरी को पाँच सौ फ्रैंक मासिक मिलता था। इसके लिये उन्हें वर्ष में एक सौ बीस लेक्चर स्कूल में देना पड़ता। जब तक आइरीन का जन्म नहीं हुआ था इस आय में किसी तरह काम चल जाता था परन्तु उसके जन्म के बाद एक नौकर और दाई का रखना आवश्यक हो गया। इसके कारण खर्च पूरा पड़ने में कठिनाई होने लगी और यह परमावश्यक हो गया कि उनकी आय कुछ बढ़े। यदि पियरी सोरबान में प्रोफेसर के पद पर नियुक्त हो जाते तो उन्हें दस हजार फ्रैंक वार्षिक मिलता और कम घंटे पढ़ाना भी पड़ता। और यदि वहाँ कहीं प्रयोगशाला का उपयोग करने को मिल जाता तो पियरी को और चाहिये ही क्या था। उनकी आकांक्षा इतनी ही थी खोज के लिये प्रयोगशाला और भौतिक विज्ञान के नवयुवक विद्यार्थियों को शिक्षा देने के लिये प्रोफेसरी का पद।

परन्तु जहाँ पियरी दूसरे की कठिनाइयों और गुत्थियों को सरलता पूर्वक सुलझा सकते थे वहाँ वह अपने लिये किसी पद आदि के निमित्त प्रयत्न करने में सर्वथा असमर्थ थे। वह एक प्रतिभाशाली पुरुष थे,

प्रतिद्वन्दिता से उन्हें एक स्वाभाविक अरुचि-सी थी। अन्दर-अन्दर युक्तियाँ चलाने या पार्टी बनाने का ज्ञान उन्हें था ही नहीं। उनके वास्तविक गुण भी उनके लिये लाभदायक न होते क्योंकि वह उनसे लाभ उठाना जानते ही नहीं थे। अपने मित्रों के लिये अपने को मिटा देने तथा प्रतिद्वन्दियों के सामने से भी हट जाने को वह सदा तैयार रहते। हेनरी पोवनकारे के शब्दों मे "वह बहुत ही रद्दी उम्मीदवार थे।" और इसका ही परिणाम था कि जब प्रोफेसरी के एक रिक्त स्थान के लिये इनका नाम प्रस्तावित हुआ तो एक दूसरे उम्मीदवार को इनकी अपेक्षा अधिक वोट मिले यद्यपि इनके कामों और खोज की वहाँ बहुत प्रशंसा की गयी।

पियरी का आदर फ्रांस ने तो नहीं किया परन्तु प्रोफेसरी के एक पद के लिये पियरी को जेनेवा से पत्र प्राप्त हुआ। दस हजार फ्रैंक वार्षिक पुरस्कार के अतिरिक्त मकान के लिये अलग भत्ता और एक प्रयोगशाला तथा दो सहायक भी दिये जाने वाले थे। प्रयोगशाला में यन्त्र आदि की जो कमी होगी, उसकी पूर्ति कर दी जायगी यह भी सूचित किया गया था। और मेरी को भी प्रयोगशाला में एक पद प्रदान किये जाने की बात थी। जिस सम्मान और सत्कार से पियरी और मेरी को आमन्त्रित किया गया था उससे प्रभावित होकर पियरी और मेरी स्विटजरलैंड गये। वहाँ उनका प्रेमपूर्ण स्वागत हुआ। परन्तु कुछ ही समय बाद वे सोचने लगे, क्या रेडियम के कार्य को त्याग कर उन्हें यहाँ रहना चाहिये? रेडियम सम्बन्धी सब सामान यहाँ लाना सुविधाजनक नहीं था इसलिये उस कार्य में बाधा पड़ना स्वाभाविक था। पियरी ने अपनी कृतज्ञता तथा खेद प्रकट करते हुये अपना त्याग पत्र जेनेवा भेज दिया। रेडियम के लिये उन्होंने अपने साधारण सुख को तिलांजलि दी।

पेरिस लौट कर पियरी ने एक दूसरे स्कूल में अध्यापन कार्य स्वीकार

किया। यहाँ पुरष्कार कुछ अधिक था। मेरी को भी एक दूसरे स्कूल में अध्यापिका की जगह मिल गयी। इससे आर्थिक कठिनाई हल हुई यद्यपि दोनों का परिश्रम बहुत बढ़ गया और यही समय था जब कि उन्हें अपनी सारी शक्ति रश्मिशक्तित्व में लगानी थी।

१६०२ में पियरी के एक प्रोफेसर मित्र ने उनसे विज्ञान परिषद की सदस्यता के लिये उम्मीदवार बनने का आग्रह किया। उन्होंने पियरी से कहा तुम्हारा हो जाना निश्चित है। पियरी पहले हिचके फिर उनकी बात मान गये। उन्हें विज्ञान परिषद के सदस्यों के यहाँ जाने में बड़ा संकोच होता था। इन्हें यह छोटी बात प्रतीत होती। परन्तु भौतिक विज्ञान विभाग द्वारा ऐकेडेमी के लिये सर्वसम्मति से नामांकित किये जाने पर उन्होंने उम्मीद-वार बनना स्वीकार कर लिया। अपने मित्र के कहने पर वह सदस्यों से मिलने गये। उनकी इसमें क्या दशा हुई इसका एक पत्रकार ने अच्छा वर्णन किया है—"सीढ़ियों पर चढ़ना, घंटी बजाना, अपने आने की सूचना देना, और फिर आने का कारण बताना इन सब से ही वह संकोच से दब जाते।......परन्तु इससे भी बुरा यह था कि उन्हें अपनी उपाधियों, और विज्ञान की जानकारी तथा अपने काम और गुणों का बखान स्वयं करना पड़ता। वह इन्हें मनुष्य की शक्ति के परे प्रतीत होता। इसके फल स्वरूप वह अपने विरोधी की प्रशंसा करते, और देर तक, तथा कहते कि वह मुझसे कहीं अधिक योग्य है......।"

६ जून को मालूम हुआ कि पियरी को २० और उनके विरोधी को ३२ वोट मिले। पियरी ने अपने मित्र को लिखा—"मुझे खेद है कि इस अच्छे परिणाम के लिये लोगों के यहाँ जाने में समय नष्ट करना पड़ा। भौतिक विज्ञान विभाग ने सर्वसम्मति से मुझे नामांकित किया था इसलिये मैंने इस विषय को आगे बढ़ने दिया। मैं तुम्हें यह सब

लिख रहा हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ तुम मेरी भावनाओं को जानना चाहोगे परन्तु यह न समझना कि इन छोटी घटनाओं से मैं विशेष प्रभावित होता हूँ।"

ठीन पाल ऐमेल ने पियरी क्यूरी को एक पत्र भेजा कि मन्त्रियों ने मुझे 'लोज़ियन आव आनर' की उपाधि के लिये नाम भेजने को कहा है। मैं चाहता हूँ आप अपना नाम इसके लिये दे दें। वह पियरी के स्वभाव से परिचित थे इसलिये उन्होंने लिखा कि आपके लिये इसका मूल्य कुछ नहीं है परन्तु आपकी खोज और योग्यता को देखते हुये मैं आपका नाम अपनी सूची में रखना ही चाहता हूँ। पाल ने मेरी क्यूरी को भी, जो उनकी विद्यार्थी रह चुकी थीं, लिखा कि वह पियरी क्यूरी को राजी कर लें और उन्हें किसी तरह अस्वीकार न करने दें। यदि वह स्वीकार कर लेंगे तो सम्भवतः मन्त्रिगण की रुचि उनके कामों में बढ़ेगी और प्रयोगशाला के लिये धन आदि मिलने में भी सहायता मिलेगी।

इस बार पियरी ने किसी की बात नहीं मानी। उन्हें यह बात हास्यास्पद मालूम होती थी कि एक वैज्ञानिक को उसके काम के लिये समुचित साधन तो प्रदान न किया जाय परन्तु प्रोत्साहन के निमित्त उसे एक चमकदार पदक दिया जाय। उन्होंने पाल ऐमेल को उत्तर दिया—"कृपया मन्त्री महोदय को मेरी ओर से धन्यवाद दीजिये और उन्हें बतला दीजिये कि सम्मानित होने की मुझे तनिक भी इच्छा नहीं है परन्तु हाँ एक प्रयोगशाला की अत्यधिक आवश्यकता है।"

सुखी जीवन निर्वाह करने की आशा पियरी और मेरी छोड़ चुके थे। प्रयोगशाला के अभाव में वे अपने छप्पर में ही काम करते रहे। पढ़ाने और अपने खोज के काम में लगे हुये वे खाना और सोना तक भूल जाते। पियरी को पैरों में पीड़ा भी होने लगी थी। कभी-कभी वह बहुत बढ़ जाती जिससे वे चारपाई पर पड़ जाते।

मेरी अपने को स्वस्थ समझती थी परन्तु वह भी प्रतिदिन दुर्बल होती जा रही थी और प्रत्येक सप्ताह उसका वज़न घटता जाता था।

एक मित्र ने पियरी को लिखा—"मैडेम क्यूरी को देखकर मैं चकित रह गया। उनमें बड़ा परिवर्तन हो गया है।......मैं यह बतलाना चाहता हूँ कि इतना परिश्रमपूर्ण बौद्धिक जीवन व्यतीत करने की उनमें पर्याप्त शक्ति नहीं है। और जो मैं उनके लिये कहता हूँ वही आपके लिये भी है। केवल एक उदाहरण दूँगा। आप दोनों मुश्किल से ही कुछ खाते हैं। दो टुकड़े कबाब और एक प्याले चाय में होता क्या है?......

"आप लोग अपने भोजन में पर्याप्त समय नहीं देते। आप जिस समय चाहते हैं खाते हैं, और शाम को इतनी देर में खाते हैं कि पाचनशक्ति स्वभावतः काम करने से इन्कार करती होगी। किसी एक दिन अनुसन्धान में लगे रहने के कारण सायंकाल में विलम्ब हो जाय परन्तु आपको इसे आदत बना लेने का अधिकार नहीं है। ......यह आवश्यक नहीं है कि जीवन के प्रत्येक क्षण में आप वैज्ञानिक चरचा करें और उसे ही सोचे जैसा आप इस समय करते हैं। आपको अपने शरीर को सांस लेने का तो समय देना चाहिये। आप भोजन के लिये निश्चिन्त बैठें और धीरे-धीरे खाया करें तथा ऐसी बातें न करें जो मस्तिष्क को थकाने वाली हो। आप खाते समय न भौतिक विज्ञान पर बात करें और न उस पर कुछ पढ़ें।..... ।"

इस तरह की डांट और चेतावनियों का उत्तर पियरी और मेरी इस प्रकार देते "हम लोग विश्राम तो करते हैं, गर्मियों में छुट्टी मनाते हैं।"

गर्मियों में वह साइकिलों पर बहुत दूर घूमने निकल जाया करते। इसी को वे विश्राम समझते। क्या वास्तव में इससे उन्हें पूरा विश्राम मिल जाता था? वे जाते भी तो वहाँ देर तक न ठहरते। दो

ही तीन दिन बाद पियरी को फिर अपने काम का ध्यान आने लगता और वह अपनी पत्नी से कहते "बहुत समय से हम लोग कुछ कर नहीं रहे हैं।"

विवाह के पश्चात् प्रथम बार पियरी के साथ मेरी अपनी बहन के यहाँ गयी। वहाँ उसके पिता, भाई, दोनों बहनें तथा उनके पति सभी मौजूद थे। पिता अपने लड़के-लड़कियों को सकुटुम्ब एक साथ देखकर बहुत सुखी हुये। पहले के दुख के दिन उन्हें याद थे। अब सब को सुखी और उन्नतिशील अवस्था में देखकर इस आयु में भी उनमें स्फूर्ति और नव-जीवन का उद्रेक होता। दूसरे देश के होने के कारण पियरी सब का ध्यान आकर्षित करते। उन्हें पोलैंड का भ्रमण कराया गया। उस देश का सौन्दर्य देखकर वह मेरी से कहते "मैं समझ सकता हूँ कि तुम्हें यह देश क्यों इतना प्यारा है।" वह नई सीखी हुई पोलिश में ही सब बात करते। उच्चारण उनका शुद्ध न होता परन्तु जितना अभ्यास उन्होंने कर लिया था उसे देख कर सब को आश्चर्य होता और मेरी मन ही मन प्रसन्न होती और गर्व से फूली न समाती।

लगभग तीन वर्ष बाद मेरी को फिर पोलैंड जाना पड़ा लेकिन दूसरी ही परिस्थिति में। पिता की कड़ी बीमारी का समाचार पाकर वह वहाँ दौड़ी हुई पहुँची। परन्तु पिता की मृत्यु हो चुकी थी। वह अर्थी के पास झपटी हुई गयी और उसे खोलने के लिये हठ करने लगी। उसकी बात माननी ही पड़ी। पिता की निर्जीव मुखा-कृति देखकर वह द्रवित हो गयी। उसको इसका बहुत दुख था कि वह पिता के पास आकर नहीं रह सकी। पिता इसके लिये बहुत लालायित थे यद्यपि उन्होंने अन्तिम दिनों में इससे सन्तोष कर लिया था कि मेरी का अनुसन्धान अमूल्य है और वह अपना काम नहीं छोड़ सकती। दो वर्ष यदि वह और जीवित रहते तो अपनी पुत्री

की प्रसिद्धि और नोबुल पुरस्कार की प्राप्ति से निस्सन्देह उन्हें अपार सुख मिलता।

आनेवाले अगले वर्ष मेरी के लिये कुछ दुखदायी रहे। अपनी बड़ी बहन को (अगस्त २५,१९०३) उसने लिखा—"इस घटना से इतनी व्यग्र हूँ कि किसी को लिखने का साहस तक नहीं कर सकती। नये बच्चे की बात मन में इतनी निश्चित हो चुकी थी कि मुझे किसी तरह सन्तोष होता ही नहीं और मैं बहुत अशान्त हूँ। कृपया लिखो कि क्या मेरे श्रम के कारण ऐसा हुआ क्योंकि यह तो मुझे स्वीकार करना ही पड़ेगा कि मैंने कभी काम में कमी नहीं की। मुझे अपने बल पर पूरा विश्वास था परन्तु अब मुझे इसका बहुत दुख है क्योंकि मैंने इसका मूल्य बुरी तरह दिया। बच्चा—एक छोटी लड़की—अच्छी हालत में था और जीवित था। और मुझे बच्चे की कितनी लालसा थी।"

इसके बाद पोलैंड से एक दुखदायी समाचार मिला। कुछ दिन की ही बीमारी में बड़ी बहन के लड़के की मृत्यु हो गयी। मेरी ने अपने भाई को लिखा—"मुझे इस समाचार से बहुत दुख हुआ। वह लड़का तो स्वास्थ्य की प्रतिमा था। यदि सब चिन्ता करते हुये भी किसी का बच्चा ऐसे हाथ से निकल जा सकता है तो अपने दूसरे बच्चों को कोई कैसे रखे और किस तरह उसका पालन-पोषण करे। अब तो मैं अपनी बच्ची की ओर बिना भयभीत हुये देख ही नहीं सकती। ब्रोनिया के दुख से हृदय बहुत व्यथित है।"

इन दुःखों के साथ-साथ पियरी का अस्वस्थ रहना उसे और चिन्तित रखता। गठिये के कष्ट से पियरी रातों सो न सकते, अपना समय पीड़ा और कराहने में बिता देते। मेरी अत्यन्त दुखी हो उन्हें देखती रहती। यह सब होते हुये भी पियरी और मेरी का अध्यापन कार्य जारी रहा।

पियरी ने हताश होकर एक बार कहा ही "यह जीवन जो हम लोगों ने चुना है बड़ा दुरूह है।" मेरी ने पहले इसे अस्वीकार करना चाहा परन्तु उसने जब पियरी को इतना निरुत्साहित होते देखा तो उसे चिन्ता हुई कि उन्हें कोई कठिन रोग तो नहीं लग गया है। महीनों से वह मृत्यु के भय से भरी हुयी थी। करुणापूर्ण शब्दों में उसने कहा—"पियरी।" पियरी ने पूछा—"क्या है प्यारी?" "पियरी......यदि हम लोगों में से कोई एक न रहे तो......दूसरे को जीवित नहीं रहना चाहिये......हम लोग एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते। क्या रह सकते हैं?" पियरी ने दृढ़ता से कहा—"तुम भूल करती हो। चाहे जो हो यदि किसी को अपना काम वैसे करना पड़े जैसे बिना आत्मा के शरीर तब भी उसे अपना काम करते ही जाना चाहिये।"

१६. मेरी और पियरी का अपूर्व त्याग—

वैज्ञानिक दुखी हो या सुखी, धनी हो या निर्धन, स्वस्थ्य हो या अस्वस्थ्य उसके सामने उसका लक्ष्य सर्व प्रथम रहता है। १८९९ से १९०४ तक में पियरी और मेरी ने कभी साथ और कभी पृथक अथवा किसी दूसरे सहकारी के साथ विज्ञान सम्बन्धी बत्तीस रचनायें प्रकाशित कीं। प्रत्येक में नवीनता और नयी खोज थी। इसके अतिरिक्त रश्मिशक्तित्व (Radio activity) सम्बन्धी प्रसिद्धि विदेशों में इस समय धूम मचा रही थी।

इंगलैंड, जर्मनी, आस्ट्रिया, डेनमार्क आदि के बड़े से बड़े लोगों के पत्र दोनों के पास रेडियम की जानकारी के सम्बन्ध में आते रहते। केवल पाँच वर्ष पूर्व वैज्ञानिकों का विश्वास था कि ब्रह्माण्ड निश्चित पदार्थों का बना हुआ है, और ऐसे तत्वों का बना है जो सदा के

लिये नियत हैं जो कभी बदलते नहीं। अब पता चला कि गतिमान के प्रत्येक क्षण में रेडियम के परमाणु अपने में से हीलियम गैस (Helium gas) के अणु उत्पन्न करते रहते हैं और बहुत बड़े वेग से उन्हें बाहर फेंकते हैं। प्रकृति जिसका वाह्य स्वरूप अचेतन और गतिविहीन देख पड़ता है उसमें उत्पत्ति, संघर्ष, हत्या, और आत्म-हत्या होती रहती है। इसमें जन्म और मृत्यु दोनों का अनन्त नाटक हो रहा है। रश्मिशक्तित्व की इस नयी खोज से दार्शनिकों को अपना दर्शन और भौतिक विज्ञान वालों को अपना विज्ञान पुनः प्रारम्भ करने की आवश्यकता प्रतीत हुई।

मेरी ने अपने निबन्ध का विषय रेडियम ही चुना था। इसी पर उसे डाक्टर की उपाधि प्रदान की गयी।

रेडियम का एक अदभुत गुण यह भी मालूम हुआ कि उससे मनुष्यमात्र का कल्याण होगा क्योंकि कैंसर के भयानक रोग को दूर करने में वह सहायक हो सकता है।

जब यह उपचार सम्बन्धी गुण विदित हुआ तो रश्मिशक्तित्व प्रधान खनिजों की प्रत्येक स्थान में खोज होने लगी। शुद्ध रेडियम कैसे बनाया जा सकता है यह जानने की उत्सुकता लोगों में उत्पन्न हुई। यूनाइटेड स्टेटस से पियरी के पास एक पत्र आया। उसे पढ़ कर पियरी ने अपनी पत्नी से कहा "इसमें सन्देह नहीं कि रेडियम का व्यवसाय अब बहुत बढ़ने वाला है। सारे संसार को रेडियम की आवश्यकता होगी। अमेरिका के कुछ यंत्र विशेषज्ञों ने मुझसे पूछा है कि रेडियम किस प्रकार तैयार होता है।" मेरी ने विशेष उत्सुकता प्रकट नहीं की और कहा "हाँ तब?" "हम लोगों को निर्णय करना है कि क्या हम इसे सब को स्पष्ट रूप से बतला दें?" मेरी ने धीरे से कहा "हाँ, अवश्य।" "या" पियरी ने कहा "हम लोग रेडियम के आविष्कारक होने के कारण उसके मालिक भी बन सकते हैं। इसके तैयार करने का उपाय बताने

के पूर्व हम लोग इसे पेटेंट करा सकते हैं और फिर जहाँ भी संसार में यह बने हमारे सर्वाधिकार सुरक्षित रहेंगे।" मेरी ने क्षण भर विचार किया, "यह असम्भव है, यह वैज्ञानिक भावनाओं के विरुद्ध होगा।" पियरी का जैसे बोझ हलका हो गया। "मैं भी ऐसा ही सोचता हूँ। परन्तु मैं नहीं चाहता कि निर्णय बिना समझे-बूझे कर लिया जाय। हम लोगों का जीवन कठिन है और शायद सदा के लिये कठिन रहेगा। हम लोगों की एक पुत्री है, शायद और बच्चे भी हों। उनके लिये और अपने जीवन में हमें भी इस पेटेन्ट द्वारा पर्याप्त धन प्राप्त हो सकता है। हमारा जीवन सदा के लिये सुखी हो जायगा और प्रतिदिन का अनावश्यक श्रम भी बच जायगा।" हँसते हुये पियरी ने यह भी कहा "हम अपनी एक अच्छी प्रयोगशाला बनवा सकेंगे।" मेरी की आँखें जैसे स्थिर हो गयीं। वह आर्थिक लाभ के इस पक्ष पर एक क्षण के लिये विचार करने लगी। परन्तु फौरन ही इस विचार को मन से हटाते हुये उसने कहा "भौतिक विज्ञानवादी अपनी खोज पूरी तरह प्रकाशित कर देते हैं। यदि हमारी खोज का व्यवसायिक भविष्य भी है, तो यह एक संयोग है। इससे हमें लाभ नहीं उठाना चाहिये। और फिर रेडियम रोगों को अच्छा करने में सहायक होने जा रहा है...... इससे लाभ उठाना मुझे असम्भव प्रतीत होता है।"

उसने अपने पति को समझाने की चेष्टा नहीं की। जो बातें वह कह रही थी उसमें वह और पियरी दोनों पूर्णतया सहमत थे। पियरी बहुत सन्तुष्ट हुए और उन्होंने इस रूप में उत्तर दिया जैसे कोई साधारण-सी बात तय हुई हो, "तो मैं आज अमेरिका के इंजिनियरों को लिख दूँगा और जो सूचनायें वे चाहते हैं दे दूँगा।"

रेडियम की उन्नति क्रमशः किस प्रकार हुई यह अमेरिका में एक सुन्दर ग्रंथ के रूप में प्रकाशित हुआ और उसमें पियरी के उस पत्र का चित्र भी दिया गया जिसमें पियरी ने वहाँ के इंजिनियरों के रेडियम

सम्बन्धी सब प्रश्नों का उत्तर दिया था।

मेरी और पियरी ने धन और निर्धनता के बीच निर्धनता को आज सदा के लिये चुन लिया था, परन्तु वे प्रसन्न थे। अपने इस वार्तालाप के थोड़ी ही देर बाद दोनों अपनी साइकिलों पर घूमने निकल गये और फूल तथा पत्तियों से लदे हुये अपने घर वापस आये।

१७. नोबेल पुरस्कार— पति और पत्नी की प्रसिद्धि—

स्विटजरलैंड प्रथम देश था जिसने पियरी और मेरी को अपने यहाँ प्रोफेसरी स्वीकार करने के लिये आमंत्रित किया था। फ्रांस में पियरी को १८९५ और १९०१ में दो पुरस्कार मिले थे। मेरी को भी एक पुरस्कार तीन बार मिल चुका था। परन्तु उनकी योग्यता के अनुरूप अभी तक कोई विशेष सम्मान उन्हें प्राप्त नहीं हुआ था इंगलैंड इसमें सर्वप्रथम रहा। जून १९०३ में रेडियम पर भाषण देने के लिये लंदन के रायल सोसायटी की ओर से उन्हें निमंत्रण मिला। पति और पत्नी दोनों वहाँ गये।

उनका भाषण सुनने के लिये रायल सोसायटी में इंगलैंड के छोटे और बड़े सब वैज्ञानिक एकत्र हुये। मेरी पहली महिला थी जिसे इस संस्था के अधिवेशन में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ। पियरी ने अपनी धीमी आवाज में बोलते हुये रेडियम की उत्पत्ति के सम्बन्ध में बतलाया और उसके प्रयोग भी दिखलाये। उसे देख कर उपस्थित लोगों में बड़ा उत्साह रहा और दूसरे दिन सारा लंदन रेडियम के आविष्कार करने वालों को देखने के लिये उत्सुक था। अनेक निमंत्रण मिले और बड़ी-बड़ी दावतें हुईं। इनमें सहस्रों की दृष्टि महिला भौतिक विज्ञानवादी पर पड़तीं। वह अपने समीप बैठी हुई स्त्रियों को हीरे जवाहरात पहने देख कर चकित होती। एक रोज उसे अपने पति की

ओर देख कर अचम्भा हुआ कि वह भी इन स्त्रियों की ओर देख रहे थे जो इन बातों से सदा अन्यमनस्क रहते। मेरी स्वयं सदा एक सादे काले रंग के पोशाक में रहती और उसके तेजाव से जली हुयी अँगुलियाँ बिलकुल नंगी होती, विवाह वाली अंगूठी भी उन पर न दिखाई पड़ती।

वहाँ से लौटने पर उसने अपने पति से कहा, "मुझे इसका पता नहीं था कि ऐसे भी रत्न होते हैं, वे कितने सुन्दर थे।" पियरी हँसने लगे। "जानती हो मैंने उस समय क्या सोचा। मैं यह हिसाब लगाने लगा कि इन सब से कितनी प्रयोगशालायें स्थापित की जा सकती हैं। जब मैं बोलने के लिये खड़ा होने वाला था उस समय तक उनकी संख्या असंख्य तक पहुँच चुकी थी।"

पेरिस वापस आने पर लगभग पाँच मास वाद उन्हें फिर सूचना मिली कि लंदन की रायल सोसायटी अपना सब से बड़ा पुरस्कार डेवी-मेडल देकर उन्हें सम्मानित करना चाहती है। मेरी की तबीयत अच्छी नहीं थी इसलिये पियरी अकेले ही वहाँ गये और सोने का एक भारी मेडल, जिस पर दोनों के नाम खुदे थे, साथ ले आये। उसे कहाँ रखें यह उनके लिये एक समस्या हो गयी। कभी उसे खो देते और फिर ढूँढ़ निकालते। अन्त में उन्होंने उसे आइरीन को दे दिया। ६ वर्ष की आयु में उसके लिये यह बहुत ही आनन्द का दिन था। जब मित्रगण पियरी से मिलने आते तो वह उन्हें दिखलाते कि आइरीन अपने नये खिलौने से कैसा खेलती है।

शीघ्र ही उनके सम्मान का अत्यन्त महत्वपूर्ण अवसर आया। १० दिसम्बर १९०३ को स्टाकहोम से स्वीडन की विज्ञान एकेडेमी ने प्रकाशित किया कि इस वर्ष के नोबेल पुरस्कार का आधा श्री क्यूरी और श्रीमती क्यूरी को मिलेगा। दोनों को स्वीडन आने और पुरस्कार स्वीकार करने के लिये आमंत्रित किया गया। पियरी ने एकेडेमी के मंत्री को लिखा—"हमें भौतिक विज्ञान के लिये नोबेल पुर-

स्कार का अर्धांश देकर हमारा बड़ा सम्मान किया गया है। एकेडेमी के हम बहुत आभारी हैं और हार्दिक धन्यवाद देते हैं………। १० दिसम्बर को स्वीडन आ सकना हम लोगों के लिये बहुत कठिन है। पढ़ाई का काम जो हमारे सिपुर्द है उसमें इस समय आने के कारण बहुत हानि होगी। कुछ दिन के लिये स्वीडन में ठहर कर हम वहाँ व्याख्यान आदि भी न दे सकेंगे और न स्वीडन के वैज्ञानिकों से परिचय प्राप्त करने का पूरा अवसर मिलेगा। इसके अतिरिक्त मैडेम क्यूरी का स्वास्थ्य गर्मियों में अच्छा नहीं था और अब तक वह पूरी तरह स्वस्थ्य नहीं हुई हैं……।"

मेरी ने नोबेल पुरस्कार मिलने की घोषणा के ठीक एक दिन बाद ११ दिसम्बर १६०३ को अपने भाई को लिखा—"……हम लोगों को आधा नोबेल पुरस्कार मिला है। मैं नहीं जानती कुल कितना होगा। शायद सत्तर हजार स्वर्ण फ्रैंक हो। हम लोगों के लिये तो यह बहुत बड़ी सम्पत्ति है।……इस समय घर में चिट्ठियों की भरमार है और पत्रकार तथा फोटोग्राफरों की धूम। चाहती हूँ शान्ति के लिये कहीं पृथ्वी में धँस जाती। हम लोगों को अमेरिका में व्याख्यान देने के लिये बुलाया गया है और पूछा गया है कि हम क्या लेंगे।……कुछ भी मिले, स्वीकार न करने का ही विचार है। बड़ी कठिनाई से उन निमंत्रणों से छुट्टी मिली है जो इस सम्मान में लोग हमें देना चाहते हैं……।"

मेरी इस पत्र में अपने दोनों की प्रसिद्धि, प्रशंसापत्रों के ढेर और दूसरे देशों के आमंत्रण आदि की शिकायत करती-सी जान पड़ती है। उसे यह सब रुचिकर नहीं था। इस पुरस्कार से उसे एक सुख अवश्य मिला, पियरी को अध्यापकी से फुरसत मिली जो उनके स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत आवश्यक था। उन्होंने अपने व्यय पर प्रयोगशाला के लिये एक सहायक भी नियुक्त किया। इस रुपये में

से मेरी ने बीस हजार फ्रैंक ऋण के रूप में ब्रोनिया को भी दिया जिससे वह अपने उपचार गृह का प्रारम्भिक कार्य अच्छी तरह चला सके। मेरी क्यूरी को एक दूसरे (आसीरीस) पुरस्कार का भी आधा प्रदान हुआ। इसमें पचास हजार फ्रैंक मिले। इससे मेरी की पूँजी कुछ और बढ़ गयी। परन्तु मेरी की हिसाब की कापी देखने से मालूम होता है कि इसमें से बहुत से लोगों को सहायता दी गयी और बहुत दिनों तक पियरी के भाई और मेरी की बहनों को धन तथा ऋण भी दिया गया। पोलिश विद्यार्थियों तथा अपने दूसरे पुराने मित्रों की सहायता की गयी। इसके अतिरिक्त मेरी ने बहुत से वैज्ञानिक संस्थाओं को चंदे दिये। अपने लिये उसने केवल एक स्नानागार बनवाया और एक कमरे को ठीक करा लिया। परन्तु उसे न तो अपने हैट बदलने का ध्यान आया और न उसने अपनी अध्यापकी ही छोड़ी।

मेरी की प्रसिद्धि इस समय अपनी सीमा पर पहुँच चुकी थी। पत्रकार और फोटोग्राफर तथा दर्शकों की अपार भीड़ रहती। उनके सम्बन्ध में हजारों लेख पत्रों में प्रकाशित होते और उनके पास अनगिनत तार आते। परन्तु वे इन चीजों से प्रसन्न न होते। हाँ, इससे उन्हें संतोष अवश्य था कि स्वीडिश एकेडेमी ने उनका सम्मान किया। अपने आदरणीय मित्रों के प्रशंसात्मक पत्रों से भी उन्हें प्रसन्नता होती। परन्तु उन्हें अभी बहुत काम करना था और यह सब उन्हें व्यवधान-सा प्रतीत होता। समाचार पत्रों में तो यह दशा थी कि न केवल पियरी, मेरी और उनकी छोटी पुत्री, उनकी बिल्ली तक का भी वर्णन रहता। उनका सीधा-सादा घर और प्रयोगशाला का छप्पर भी प्रशंसा का विषय बन गया था। वह घर "सन्तों की कुटी" बन गया। परन्तु इन बातों से दोनों वैज्ञानिकों को अपने विचार-विनिमय और शान्ति में जो पहले उन्हें भरपूर मिलती थी बड़ी बाधा होती जान पड़ती।

पियरी के पत्रों से इसका अच्छा दिग्दर्शन होता है। पियरी ने

(जनवरी २२, १६०३) अपने एक मित्र को लिखा—"मैं तुम्हें बहुत दिनों से लिखना चाहता था परन्तु जो असन्तोष-जनक जीवन इस समय व्यतीत हो रहा है उसके कारण नहीं लिख सका, क्षमा करना। रेडियम के लिये सहसा जो रुचि उत्पन्न हो गयी है उसे देख ही रहे होंगे। इससे हम लोग बहुत ही विख्यात और सर्वप्रिय हो गये हैं। इस पृथ्वी के प्रत्येक देश के पत्रकार और फोटोग्राफरों ने हमें घेरा है। मेरी पुत्री अपनी आया से जो बात करती है वह भी प्रकाशित कर दी गयी है। हर तरह के लोगों के पत्र आते हैं और वे मिलने भी आते हैं। हस्ताक्षर लेने वाले तथा दूसरे सांसारिक और आडम्बरपूर्ण व्यक्ति बराबर ही आते रहते हैं। प्रयोगशाला में एक क्षण की भी शान्ति नहीं मिलती और हर रात बहुत बड़ी संख्या में पत्र लिखने पड़ते हैं। ऐसा जान पड़ता है जैसे मैं पूर्ण मूर्खता से आच्छादित हूँ।"

पियरी का पत्र एक दूसरे मित्र को—"हमसे सदा लेख माँगे जाते हैं और व्याख्यान के लिये कहा जाता है। कुछ वर्ष बीत जाने पर जब वे देखेंगे कि हमने कुछ काम नहीं किया है तो इन्हीं लोगों को अचम्भा होगा......।"

उसी मित्र को दूसरा पत्र—"(जनवरी १५, १६०४) समाचार पत्रों ने भूल कर दी है, मेरा व्याख्यान १८ फरवरी को है। इस भूल के कारण मेरे पास दो सौ टिकटों की और माँग आ गयी है। मैंने उत्तर देना बन्द कर दिया है।

"व्याख्यान से मैं सर्वथा ऊब गया हूँ। मैं ऐसे समय शान्त स्थान की कामना करता हूँ जहाँ व्याख्यानों पर प्रतिबन्ध हो और पत्रकार दण्डित हों।"

अपने भाई को मेरी का पत्र—"......जब देखो तब कोलाहल। लोग काम में जितनी भी बाधा डाल सकते हैं डाल रहे हैं। अब मैंने साहस से काम लेने का निश्चय कर लिया है और मैं अब किसी

आगन्तुक से नहीं मिलती। परन्तु तब भी वे मुझे कष्ट देते ही हैं। सम्मान और ख्याति से हम लोगों का जीवन नष्ट हो गया है।"

भाई को दूसरा पत्र—"......मेरी कामना है तुम सब स्वस्थ रहो परन्तु यह भी चाहती हूँ कि तुम्हें कभी इतना पत्र-व्यवहार और इतनी भेंट न करनी पड़े जितनी इस समय मुझे करनी पड़ रही है। मुझे खेद है कि जो पत्र हमें मिले थे उन्हें मैंने फेंक दिया। कुछ उनमें शिक्षा-पूर्ण भी थे। रेडियम पर कवितायें, आविष्कारकों के पत्र, दार्शनिक पत्र और दूसरे विभिन्न प्रकार के पत्र। कल एक अमेरिका निवासी ने पूछा कि क्या वह मेरे नाम पर एक घुड़दौड़ का नाम रख सकते हैं! और फिर हस्ताक्षर और चित्र के लिये तो सैकड़ों प्रार्थनायें! मैं कठिनाई से ही इनका उत्तर देती हूँ। परन्तु उनके पढ़ने में मेरा समय अवश्य नष्ट होता है।"

पियरी का अपने एक मित्र को पत्र—"......पहले कभी इतनी अधिक अशान्ति नहीं रही। ऐसे दिन भी आते हैं जब हमें साँस लेने का भी अवकाश नहीं मिलता। और फिर हम लोगों ने मनुष्यों से बहुत दूर रह कर जंगलियों की तरह जीवन व्यतीत करने का स्वप्न देखा था।"

मेरी का पत्र—"हमारा शान्तिमय और परिश्रमी जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। मैं नहीं जानती क्या कभी हम लोग अपना पुराना संतुलन प्राप्त कर सकेंगे?"

मेरी ने इन दिनों की याद कर बाद में लिखा था—"अपने कार्य की गुरुता से ही हम लोग थक जाते थे जो वाह्य साधनों की अपूर्णता के कारण हमारी सामर्थ्य के परे था। प्रसिद्धि ने इसमें और वृद्धि कर दी है। हम लोगों ने स्वेच्छापूर्वक एकान्त जीवन ग्रहण किया था। उसके नष्ट होने से हम लोगों को वास्तविक दुख है और ऐसा प्रतीत होता है जैसे विपत्ति आ गयी हो।"

प्रसिद्धि से क्यूरियों को कुछ लाभ होता, प्रोफेसरी मिलती, प्रयोग-शाला और उसके लिये आवश्यक धन तथा सहायक प्राप्त होते, परन्तु इनकी प्रतीक्षा का समय बढ़ता ही गया। पियरी और मेरी इससे असन्तुष्ट थे और उन्हें इसका क्षोभ था। पिछले चार वर्षों में पियरी को जिन पदों से वंचित रखा गया उसका उन्हें ध्यान आता। फ्रांस ही ऐसा देश था जिसने सब से अन्त में उनका बड़प्पन अनुभव किया नोबेल पुरस्कार तथा डेवी मेडल प्राप्त होने के बाद ही पेरिस का ध्यान इस ओर गया कि पियरी को विश्वविद्यालय में प्रोफेसरी का पद दिया जाय।

पियरी स्वभाव से एक निस्पृह व्यक्ति थे। उनमें प्रतियोगिता की भावना थी ही नहीं। 'आविष्कार की प्रतियोगिता' में भी वह बिना किसी कष्ट के अपने साथियों से पीछे रह जाना सहन कर लेते। उनका कहने का स्वभाव था, "क्या हुआ मैंने अमुक पुस्तक प्रकाशित नहीं की जब कि किसी और ने प्रकाशित कर दी है।

पियरी की लोकोत्तर निस्पृहता तथा होड़ से दूर रहने की भावना का मेरी पर असीम प्रभाव था। वह स्वयं प्रशंसा से दूर भागती। प्रसिद्धि से भागना उसका स्वाभाविक गुण था। जहाँ मेरी की ओर अनेक दृष्टियाँ पड़तीं वह डर कर सिकुड़ जाती और घबराहट में उसे चक्कर-सा आ जाता।

मेरी का कार्य इतना अधिक था कि वह अपनी शक्ति का लेश-मात्र व्यर्थ नष्ट नहीं करना चाहती थी। उसे पत्नी, माता, वैज्ञानिक, अध्यापिका, सभी का भार निभाना था और उसके पास एक क्षण का भी ऐसा समय नहीं था जिसमें वह सम्मानित और ख्याति प्राप्त महिला के स्थान की पूर्ति कर सके।

ईव लिखती है—"मैं देखना चाहती थी कि प्रसिद्धि की इस परा-

काष्ठा पर पहुँचने से मेरी माता में शायद कुछ परिवर्तन आया हो। यह पहला ही उदाहरण था जिसमें किसी स्त्री ने वैज्ञानिक क्षेत्र में इतना सम्मानित स्थान प्राप्त किया हो। उनके पत्रों से मैं खोज निकालना चाहती थी कि क्या किसी समय मेरी माता में भी अहंकार अथवा विजय का मिथ्या गर्व उत्पन्न होता है? परन्तु यह प्रयास व्यर्थ था। जब कभी वह प्रसन्न दिखाई पड़ती तो अपनी प्रयोगशाला के शान्त वायुमंडल में अथवा गृह की घनिष्ठता में। दिन प्रतिदिन वह अपने को धुँधला और अकिंचन् बनाने, तथा गुप्त रखने का प्रयास करती। जो अनजान व्यक्ति उस तक आकर पूछते—'क्या आपही मैडेम क्यूरी हैं?' तो वह दबी हुई आवाज़ में और भय को छिपाते हुये कहतीं, 'नहीं शायद आपने ग़लती की।'

एक उदाहरण बहुत ही सुन्दर है। दोनों पति-पत्नी सभापति लूबे के साथ एलिस महल में दावत खाने गये। एक महिला ने आकर मेरी से पूछा "क्या आप पसन्द करेंगी कि मैं ग्रीस के राजा से आपका परिचय करा दूँ?" मेरी ने नम्रता और अत्यन्त सरलता से उत्तर दिया "मुझे तो इसकी कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती।" वह स्त्री अवाक् रह गयी परन्तु जब मेरी ने उस महिला का चकित मुख देखा और घबरा कर पहिचाना कि वही श्रीमती लूबे हैं तो वह लज्जित हुयी और अपने को संभाल कर कहा "परन्तु—परन्तु ठीक है जो आप कहेंगी वह करूँगी। जैसी आपकी इच्छा हो।"

एक अमेरिकन पत्रकार श्रीमती क्यूरी से मिलने के लिये भेजा गया। वह ढूँढ़ता हुआ इनके घर पहुँचा। मेरी अपने दरवाजे की सीढ़ी पर बैठी हुई अपने नहाने के जूते से बालू झाड़ रही थी। पत्रकार ने सोचा इससे श्रीमती क्यूरी के बारे में पूछूँ, यह तो श्रीमती क्यूरी हो नहीं सकतीं। उसके पूछने पर ज्योंही मेरी ने सिर उठाया वह पहचान गया क्योंकि मेरी के सहस्रों चित्र पत्रों में प्रकाशित हो चुके

थे। वह अवसन्न-सा रह गया और अपनी नोटबुक लिये उसके पास बैठ गया। मेरी ने देखा अब वह भाग नहीं सकती। उसने छोटे-छोटे वाक्यों में उत्तर दिया "हाँ, पियरी और मैंने रेडियम का आविष्कार किया है। हाँ, दोनों का काम अब भी जारी है"। पत्रकार ने मेरी के प्रारम्भिक जीवन, उनके काम के ढंग तथा खोज में लगी हुई महिला की मनोवृत्ति कैसी होती है इसके सम्बन्ध में जानना चाहा। मेरी ने इन शब्दों में उत्तर दिया जिसे वह प्रायः दुहराया करती—"विज्ञान में हमें पदार्थों से मतलब होना चाहिये व्यक्तियों से नहीं।" इस उत्तर से उसने पत्रकार को चुप कर दिया।

१८. प्रति दिन—

क्यूरी नाम इस समय एक "बड़ा नाम" था। दोनों क्यूरियों के पास कुछ धन भी हो गया था, परन्तु पियरी की अस्वस्थता मेरी को सदा चिन्तित बनाये रहती। पियरी को गठिया का कष्ट शुरू हो गया था। कभी दर्द में कमी होती फिर कष्ट बढ़ने लगता। परन्तु कार्य की ओर पियरी का ध्यान सदा लगा रहता। मेरी को भी वह एक क्षण बैठने न देते। छोटी-सी आयु से लेकर अब तक मेरी कभी काम से नहीं हटी। इस समय भी वह बहुत अधिक परिश्रम कर रही थी। परन्तु सतत कार्य करते हुये अब छत्तीस वर्ष की आयु में मेरी का कभी-कभी श्रान्त अनुभव करना स्वाभाविक था। उसकी किसी समय इच्छा होती कि वह रेडियम को थोड़ी देर के लिये भूल जाय, खूब सोये, खाय और कुछ सोचे ही नहीं। परन्तु पियरी यही चाहते कि उनकी प्रतिभा-शाली जीवन-संगिनी विज्ञान के ही संसार में रहे और उसी पर सब न्योछावर कर दे जैसा उन्होंने स्वयं कर रखा था।

मेरी इस समय गर्भवती थी। जब समय पूरा होने को आया

उसकी बड़ी बहन उसके पास आ गयी। उस समय मेरी बिलकुल शान्त परन्तु श्रांत देख पड़ती। पति की बीमारी की चिन्ता उसे बहुत अधिक थी। उसे किसी वस्तु में रस न आता। न विज्ञान में और न जीवन में, उस बच्चे से भी नहीं जो जन्म लेने वाला था। वह कहती—"मैं क्यों दूसरे बच्चे को इस संसार में ला रही हूँ? जीवन बड़ा कठिन और सारहीन है……।" प्रसवकाल कष्टदायक रहा। ६ दिसम्बर (१६०४) को दूसरी लड़की ईव ने जन्म लिया। छोटे बच्चे की मुस्कान और उसकी अठखेलियों ने मेरी को जैसे एक नया जीवन प्रदान किया। छोटे बच्चों से उसके हृदय में सदा प्रेम का उद्रेक होता। आइरीन की तरह इस छोटे बच्चे के पहले पहल चलने और दाँत आदि निकलने की बात वह अपनी नोटबुक में लिखती रही। प्रयोगशाला के कार्य में भी उसे अब एक नया उत्साह मिला। इसी समय रूस की १६०५ की क्रान्ति हुई जिसमें पोलिश लोगों ने भी ज़ार के विरुद्ध की गयी क्रान्ति का समर्थन किया क्योंकि उन्हें भी स्वतंत्र होने की आशा थी। मेरी क्रान्ति के सब समाचार बहुत ध्यान से पढ़ती।

मेरी ने अपने भाई को लिखा (२६ मार्च १६०५)—"इस कठिन परीक्षा में हम लोगों के देश को भी कुछ लाभ होगा ऐसी आशा तुम लोगों को है। ब्रोनिया और उसके पति की भी यही सम्मति है। क्या ही सुन्दर होता यदि यह आशा निराशा में परिणत न होती! मेरी हार्दिक अभिलाषा यही है और मैं बराबर इसके सम्बन्ध में सोचती रहती हूँ। जो भी हो मेरा विश्वास है कि क्रान्ति का समर्थन आवश्यक है। शीघ्र ही कुछ रुपये इस कार्य के लिये भेजूंगी क्योंकि खेद है मैं कोई कार्य स्वयं नहीं कर सकती।

"……घर में कोई नयी बात नहीं है। बच्चे अच्छी तरह हैं। ईव बहुत कम सोती है और यदि पालने में उसे जागती हुई छोड़ कर

चली जाती हूँ तो बड़ा विरोध करती है।......मैं उसको तब तक गोद में लिये रहती हूँ जब तक वह चुप नहीं हो जाती।

"......मैंने पहली फरवरी से अध्यापन कार्य प्रारम्भ कर दिया है।......मुझे काम बहुत है, घर और बच्चों की देख-भाल, पढ़ाना, और प्रयोगशाला। नहीं जानती सब का कैसे प्रबन्ध करूँ।"

पियरी इस समय अच्छे थे और मेरी भी प्रसन्न थी। नोबेल पुरस्कार सम्बन्धी व्याख्यानमाला के लिये दोनों स्वीडन गये। ६ जून (१६०५) को पियरी ने अपनी और अपनी पत्नी की ओर से स्टाकहोम की विज्ञान परिषद् के सामने रेडियम पर भाषण दिया। उन्होंने बतलाया कि रेडियम ने किस प्रकार भौतिक-विज्ञान, रसायन-विज्ञान, भूगर्भशास्त्र, वायु-विज्ञान पर अपना प्रभाव डाला है और ज्ञानपुँज का विकास किया है। रेडियम ने अच्छाई की सेवा की है।

पियरी ने अन्त में कहा—"क्या यह बुराई का भी सहायक हो सकता है? दुष्ट हाथों में रेडियम बहुत भयानक सिद्ध हो सकता है। हम पूछ सकते हैं कि प्रकृति के रहस्यों को जान कर क्या मानवता लाभ उठा सकती है, क्या वह इतनी परिपक्व हो गयी है, और क्या इस प्रकार के ज्ञान द्वारा क्षति पहुँचने की सम्भावना नहीं है? नोबेल के आविष्कारों का उदाहरण अनूठा है, परम शक्तिशाली विस्फोट से भी लोकहित के कार्य हुये हैं। ऐसे आततायियों के हाथों में, जो लोगों को युद्ध की ओर ले जाते हैं, वे विध्वंस के भी साधन बन जाते हैं। मैं उन लोगों में हूँ जो नोबेल के समान यह विश्वास करते हैं कि नवीन आविष्कारों द्वारा मानव को हानि की अपेक्षा लाभ अधिक होगा।"

स्वीडन के वैज्ञानिकों का स्वागत पियरी और मेरी दोनों को अच्छा लगा। वहाँ से लौट कर पियरी ने (२५ जुलाई १६०५) अपने एक मित्र को लिखा—"मेरी पत्नी और मैंने अभी स्वीडन की बहुत अच्छी

यात्रा की है। वहाँ हम लोग सर्वथा निश्चिन्त थे और हमारे लिये यह पूर्ण विश्राम का समय रहा। स्टाकहोम में जून में मुश्किल से ही कोई था और इस कारण स्वागत आदि में अधिकारियों वाला भाग बहुत ही कम था। बच्चे और मेरे पिता अच्छे हैं। मेरी पत्नी पहले से अच्छी है और मैं भी पहले की अपेक्षा बहुत स्वस्थ हूँ यद्यपि हम दोनों ही शीघ्र थक जाते हैं।

बाहरी लोगों के आक्रमण से अपने को बचा कर मेरी और पियरी फिर अपना सादा और छिपा हुआ जीवन व्यतीत कर रहे थे। घर के प्रबन्ध की चिन्तायें कम हो गयीं थीं। भारी काम करने के लिये एक नौकरानी तथा खाना बनाने, परसने और दूसरे कामों के लिये एक दूसरी स्त्री थी। उसे अपने मालिकों को देख कर अचम्भा होता। ऐसा मालूम होता जैसे वे इस संसार में रहते ही नहीं। वह व्यर्थ ही इसकी प्रतीक्षा में रहती कि वे उसके खाने की कभी प्रशंसा करेंगे। एक दिन उसने साहस करके पूछा ही "आपने जो चीज़ अभी खायी क्या उसे पसन्द किया ?" उत्तर सुन कर वह भौचक्की रह गयी। पियरी को इसका पता भी न था कि वह कौन सी चीज़ खा रहे हैं। उन्होंने कहा "अच्छा तो मैंने यह खाया—हाँ, हाँ, यही खाया होगा।"

अत्यन्त अधिक काम होने पर भी बच्चों की देख-रेख के लिये मेरी समय निकाल ही लेती। काम की अधिकता से विवश होकर उसने बच्चों को नौकरों के सिपुर्द कर रखा था परन्तु जब तक वह इसका स्वयं पता न लगा लेती कि आइरीन और ईव ने अच्छी तरह सो और खा लिया है, तथा उन्हें नहला कर कंघी कर दी गयी है, या उन्हें जुकाम अथवा और किसी तरह का कष्ट नहीं है, उसे चैन न पड़ता। फिर आइरीन स्वयं इसमें बहुत तेज़ थी, यदि मेरी तनिक भी कम ध्यान देती तो वह स्वयं टोकती। वह अपनी माता पर ईर्ष्या-पूर्ण अधिकार प्रकट करती और मुश्किल से छोटे बच्चे की देख-रेख करने देती।

दोनों पति-पत्नी ड्रेसिंग गाउन और स्लीपर पहने अपना सायंकाल अधिकतर वैज्ञानिक ग्रन्थों के पढ़ने या अपनी नोटबुक में कठिन गुत्थियाँ सुलझाने में व्यतीत करते। तब भी वे चित्रकला की प्रदर्शनी में दिखलाई पड़ते और वर्ष में सात या आठ बार नाटक या संगीत में दो घंटे के लिये हो आते। वहाँ से पियरी और मेरी प्रसन्न होकर घर लौटते परन्तु विशेष खेलों का उन पर कई दिनों तक प्रभाव रहता और वे उदास दिखाई पड़ते। पियरी के पिता उनकी गम्भीर मुद्रा देख कर मुस्कराते हुये कहते "यह मत भूल जावो कि तुम लोग वहाँ प्रमोद और आनन्द की दृष्टि से गये थे।"

पियरी और मेरी सत्कार और स्वागत से सदा दूर भागते इसलिये वे निमंत्रण और उत्सव आदि में कभी नहीं दिखाई पड़ते थे। परन्तु अधिकारी वर्ग द्वारा जब विदेश के वैज्ञानिकों का स्वागत और निमंत्रण करते तब उनका जाना आवश्यक हो जाता। अतएव कभी-कभी पियरी को अपने मोटे ऊनी कपड़े जो वह प्रतिदिन पहनते थे उतार कर शाम की पोशाक पहननी पड़ती। ऐसे अवसर पर मेरी को भी अपनी शाम की पोशाक जो उसके पास कुल एक ही थी पहननी पड़ती। इस एक पोशाक को वह वर्षों रखे रहती जिसे वह दर्जी से सुधरवाती और उलटवाती रहती। कोई दूसरी स्त्री जो तनिक भी शौकीन होती इसे पसन्द न करती परन्तु मेरी को न कोई शौक था और न अच्छे नवीन पहनावे का कुछ ज्ञान। उसके विवेकपूर्ण जीवन और गम्भीर चरित्र के कारण इन बातों से भी उसमें कोई अनोखापन न प्रकट होता और पहनावे में भी उसकी अपनी एक विशेषता देख पड़ती। सायंकाल का पहनावा पहन कर बालों को गूंथे हुये मेरी जिस समय लजाती हुई गले में सोने का एक हार डाल लेती वह बहुत ही सुन्दर दिखाई पड़ती।

यदि मेरी संयोग से अपने यहाँ कुछ लोगों को निमंत्रण देती तो सदा यत्नशील रहती कि भोजन अच्छा बने और घर भी प्रसन्न दिखाई

पड़े। बाजार में जाकर इधर से उधर घूमती हुई अच्छे फल और शाक चुनने में वह व्यस्त दिखाई पड़ती। मिठाई अच्छी है या नहीं, दूकानदार से गम्भीरतापूर्वक पूछती। और फूल बेचने वालों से गुलाब और दूसरे फूलों के गुच्छे खरीद कर ले आती। उनके सुन्दर गुलदस्ते तैयार करती और समीप की दूकान से केक आदि कुछ और चीजें भी मँगवा लेती। इस व्यस्त गृह में ऐसी छोटी-मोटी दावतें भी एक हलचल मचा देती। भोजन परस जाने से पहले मेरी मेज़ को फिर एक बार देख कर कुर्सी आदि ठीक कर देती। मेहमानों में प्रायः दूसरे देशों के प्रसिद्ध वैज्ञानिक आदि या पोलिश मित्र हुआ करते। कभी लज्जाशील आइरीन के प्रमोद और प्रसन्नता के लिये भी मेरी बच्चों की दावत किया करती।

सात आठ व्यक्ति पियरी और मेरी के मित्र थे जिनका उनके घर में सदा स्वागत होता। सब वैज्ञानिक ही वैज्ञानिक थे। रविवार को तीसरे पहर वे लोग बाग़ में एकत्र होते। मेरी भी वहाँ जाती और ईव की छोटी गाड़ी के पास छाया में बैठ कर कपड़ों को सीने या चकती आदि लगाने का काम करती हुई सब की बातें सुनती रहती।

फ्रांस में इस समय पियरी और मेरी की बहुत चरचा थी। रेडियम एक जादू का शब्द बन गया था। एक बार फिर एकेडेमी आफ साइंस की सदस्यता के लिये पियरी को नामांकित किया गया। मित्रों का आदेश और परामर्श प्रारम्भ हो गया। एक ने लिखा (२२ मई १९०५)—"......आपका नाम स्वभावतः सूची में सब से ऊपर है और कोई प्रतियोगी भी महत्व का नहीं है। आपके चुने जाने में सन्देह नहीं है फिर भी यह आवश्यक है कि आप साहस करके एकेडेमी के सदस्यों के यहाँ एक बार हो आइये। आपको जो न मिले उनके यहाँ अपना कार्ड एक कोने पर मोड़ कर छोड़ आइये। दूसरे सप्ताह में इसे प्रारम्भ कीजिये। दो सप्ताह में यह काम समाप्त हो जायगा।"

उसी मित्र का दूसरा पत्र—"जिस तरह हो सके प्रबन्ध करें परन्तु २० जून से पहले आप प्रत्येक सदस्य के यहाँ जाने का कष्ट उठाइये चाहे आपको किराये की मोटर भी लेनी पड़े।

"जो कारण आप बतलाते हैं वह सिद्धान्त की दृष्टि से बहुत सुन्दर हैं परन्तु प्रचलित रीति के लिये कुछ तो रियायत कीजिये। आपको यह भी तो सोचना चाहिये कि एकेडेमी के सदस्य होकर आप दूसरों के लिये अधिक उपयोगी बन सकेंगे।"

३ जुलाई १६०५ को पियरी एकेडेमी के सदस्य हो गये। बस हो ही गये क्योंकि बाईस वैज्ञानिकों ने उनके विरोधी को वोट दिया। पियरी ने अपने मित्र को इस सम्बन्ध में लिखा—"न चाहता हुआ और एकेडेमी की अनिच्छा होते हुये भी मैं अपने को एकेडेमी में पाता हूँ केवल एक बार सब के यहाँ हो आया था और जो नहीं मिले उनके यहाँ कार्ड छोड़ आया था। हर एक ने कहा कि मुझे पचास वोट मिलेंगे। शायद इसी से मैं न होते-होते किसी तरह हो गया।

"......क्या लाभ है? वहाँ बिना तरकीब के कुछ हो ही नहीं सकता......कुछ इस कारण भी मेरे विरोधी थे कि मैं उनके यहाँ कई बार नहीं गया। एक ने मुझसे पूछा कि कौन-कौन तुम्हें वोट देने जा रहा है। मैं नहीं जानता, मैंने कहा, क्योंकि मैंने किसी से यह पूछा ही नहीं। उसने कहा "अच्छा, आपने पूछना ही पसन्द नहीं किया।" और यह बात फैल गयी है कि मैं घमंडी हूँ।

पियरी का दूसरा पत्र—(६ अक्तूबर १६०५)—"......एकेडेमी में सोमवार को गया परन्तु तुम्हें सच बताना चाहता हूँ कि मैं वहाँ अपनी उपयोगिता समझ नहीं पाया। मुझे किसी सदस्य से कोई मतलब नहीं और न मीटिंग में ही कोई रस है। मुझे स्पष्ट जान पड़ता है कि वह क्षेत्र मेरा नहीं है।"

पियरी के एक दूसरे पत्र की एक पंक्ति—"मैं अब तक नहीं जान

पाया कि एकेडेमी से क्या लाभ है।"

१९०४ के प्रारम्भ में पियरी को भौतिक-विज्ञान का प्रोफेसर बनाये जाने की सूचना दी गयी। इसे स्वीकार करने के पहले पियरी ने पूछा कि मेरे कार्य के साथ प्रयोगशाला कहाँ रहेगी। प्रयोगशाला की बात सुन कर आश्चर्य प्रकट किया गया। उसका तो कोई प्रश्न था ही नहीं। पियरी ने एक नम्र पत्र में इस पद को अस्वीकार करने की सूचना भेज दी। फिर परामर्श हुआ और विश्वविद्यालय ने प्रयोगशाला बनाने और उसके लिये डेढ़ लाख फ्रैंक धन देने का प्रस्ताव किया। धारा सभा ने इसे स्वीकार कर लिया। पियरी का अनुमान था कि यह धन केवल यंत्र तथा प्रयोगशाला की अन्य वस्तुयें खरीदने के लिये है, परन्तु इसी में कई कमरे भी बनना था।

पियरी ने अपने मित्र को (३१ जनवरी १९०५) लिखा—"...... मेरे लिये दो कमरे बनाये जा रहे हैं। इसमें बीस हजार फ्रैंक खर्च होगा। जो रुपया यंत्रों आदि के खरीदने के लिये दिया गया है उसी में से यह लिया जायगा।"

दूसरा पत्र (७ नवम्बर १९०५)—"मैं कल से पढ़ाना शुरू करूँगा। परन्तु प्रयोग करने में बड़ी असुविधा होती है क्योंकि पढ़ाना विश्व-विद्यालय में पड़ता है और प्रयोगशाला दूसरे स्थान पर है।......मैं न अधिक अच्छा हूँ और न अधिक बीमार। परन्तु मैं शीघ्र ही थक जाता हूँ, मेरी काम करने की शक्ति अधिक नहीं रह गयी है। इसके विपरीत मेरी पत्नी बहुत अधिक काम करती हैं। बच्चों की सेवा, स्कूल जाना, और प्रयोगशाला सभी काम वह कर लेती हैं। वह अपना एक मिनट भी नष्ट नहीं करतीं। प्रयोगशाला में नियमपूर्वक काम करती हैं और मुझसे अधिक उसके काम को उन्नति देती हैं। दिन का अधि-कांश भाग उनका वहीं व्यतीत होता है।"

धीरे-धीरे दो कमरे बन कर तैयार हुये परन्तु वे पर्याप्त नहीं थे।

एक धनी स्त्री ने इनकी कठिनाइयों को देखते हुये किसी शान्त स्थान में प्रयोगशाला बना देने की इच्छा प्रकट की। पियरी ने उन्हें अपना नकशा बताया।

पियरी ने (६ फरवरी १९०६) एक पत्र उस महिला को लिखा— "प्रयोगशाला के स्वरूप का विवरण इस पत्र के साथ भेज रहा हूँ। स्थिति के अनुसार जैसा परिवर्तन आप करना चाहें इसमें कर सकती हैं। गाँव में प्रयोगशाला रखने पर हमारा बहुत अधिक ज़ोर है क्योंकि हम लोग चाहते हैं कि जहाँ हम काम करें वहीं हमारे बच्चे भी रहें। बच्चों और प्रयोगशाला दोनों पर ही निरन्तर आँख रखनी पड़ती है। जब घर और प्रयोगशाला एक दूसरे से दूर हो तो मेरी पत्नी को बहुत असुविधा होती है। समय-समय पर यह दुहरा काम उनकी शक्ति के परे हो जाता है।

"वैज्ञानिक अनुसंधान की दृष्टि से पेरिस के बाहर एक शान्त जीवन बहुत ही अच्छा होगा और प्रयोगशालायें यदि ऐसे स्थान पर बदल दी जायं तो लाभ ही होगा। फिर मध्यवर्गीय बच्चों का जीवन नगर में नष्ट हो जाता है और वहाँ के वायुमंडल में उनका पालन पोषण मेरी पत्नी को उचित नहीं जान पड़ता।

"आपने जो अनुग्रह तथा सम्मान हम लोगों के प्रति दिखलाया है उससे हम बहुत प्रभावित हुये हैं। कृपया हम लोगों का सादर प्रेम और मेरा हार्दिक धन्यवाद स्वीकार कीजिये।"

परन्तु उस महिला की उदार वृत्ति का कोई परिणाम नहीं निकला। कहीं जाकर आठ वर्ष बाद मेरी ने प्रयोगशाला का निर्माण किया, जिसे देखना पियरी के भाग्य में नहीं था। मेरी के जीवन साथी को एक प्रयोगशाला के लिये अन्त तक प्रतीक्षा करनी पड़ी जो उनके जीवन की एकमात्र अभिलाषा थी इसकी कसक मेरी के हृदय में सदा बनी रही।

विश्वविद्यालय में जो दो कमरे पियरी को मिले थे, उनके सम्बन्ध में मेरी ने बाद में लिखा था—"बस इतनी ही सुविधा दी गयी। कौन इससे दुखी न होगा जब वह देखे कि फ्रांस के एक सब से उत्तम वैज्ञानिक के लिये प्रयोगशाला का भी उपयुक्त प्रबन्ध नहीं हो सका जब कि उसकी प्रतिभा बीस वर्ष की आयु में ही चमक उठी थी। यदि वह जीवित रहते तो बाद में जो सुविधायें मिलीं उनसे वह जल्द या देर में अवश्य लाभ उठाते परन्तु सैंतालीस वर्ष की आयु तक उन्हें वे प्राप्त नहीं हुईं। क्या कोई उस दुख का अनुमान कर सकता है जो किसी निर्लोभी और उत्साही कार्यकर्ता को उसके महान स्वप्न की पूर्ति में साधनों की कमी के कारण निरन्तर बाधा पड़ने से होता है? क्या बिना क्षोभ और दुख के उस क्षति को जिसका निराकरण सम्भव न हो सोचा जा सकता है, जिसके कारण राष्ट्र का महान अहित हो और उसकी सर्वोत्तम सन्तानों की प्रतिभा, साहस और शक्ति निष्फल बना दी जाय?

"......यह सच है कि रेडियम का आविष्कार बहुत ही ख़राब दशा में हुआ—एक छप्पर के नीचे जो अब ऐतिहासिक कहानियों की चीज़ बन गया है, परन्तु उसने हमारी शक्ति को क्षीण किया और हमारी सफलताओं में विलम्ब। साधन कुछ भी और अच्छे होते तो पाँच वर्ष का काम दो में हो जाता और उसकी परेशानी भी कम होती।"

क्यूरियों की दृष्टि से मंत्रियों का सर्वोत्तम निर्णय पियरी को तीन सहकारी देने का था, प्रयोगशाला के प्रधान, एक सहायक तथा एक और कार्यकर्ता। प्रधान मेरी नियुक्त हुई। रेडियम का आविष्कार कर लेने के इतने दिनों बाद पहली बार (नवम्बर १६०४) दो हजार फ्रैंक वार्षिक पर वह अपने पति की प्रयोगशाला में नियमानुसार प्रधान नियुक्त हुई।

छप्पर से उन्होंने बिदा ली। वे अपनी सब चीजें नये स्थान पर ले गये। परन्तु उन्हें यह छप्पर इतना प्यारा था कि कभी-कभी पति-पत्नी हाथ में हाथ डाले हुये वहाँ जाते और उसकी भीगी दीवालें तथा सड़े हुये तख्तों को देखते।

नयी जगह पर पियरी और मेरी का काम सुन्दरतापूर्वक साथ-साथ चलने लगा। हर समय नयी बातों के जानने और समझने का प्रयत्न दोनों करते रहते। आपस में एक दूसरे की प्रशंसा भी होती और कभी-कभी बहस भी। इन दोनों प्रतिभाशाली व्यक्तियों में सह-कारी और सहयोगी की सद्भावना सदा बनी रहती और उनमें कभी प्रतियोगिता की झलक भी न दिखाई पड़ती। एक दिन कुछ सहका-रियों को गणित के किसी प्रश्न में कठिनाई हुई। उन्होंने पियरी से उसे पूछा। पियरी ने कहा जरा ठहर जाइये, मेरी आती होंगी। उनका चल राशि कलन गणित (integral calculas) का ज्ञान आपकी कठिनाइयों को शीघ्र दूर कर देगा। और वास्तव में कुछ ही मिनट बाद मेरी ने आकर उसे हल कर दिया।

घर में भी दोनों का परस्पर प्रेम अटूट था यद्यपि दोनों के स्वभाव में कुछ अन्तर था। पियरी कल्पनाविभूत और अधिक शान्त थे। मेरी मानवीय और कुछ अधिक उत्साही परन्तु पिछले ग्यारह वर्षों में एक दूसरे के प्रति उन्हें कोई रियायत करने की आवश्यकता नहीं पड़ी और बड़ी से बड़ी तथा छोटी से छोटी चीजों में उनका काम सदा सम्मिलित रूप से होता रहा। यदि कोई मित्र आते और पियरी से पूछते कि आइरीन को अपने बच्चों के साथ खेलने के लिये ले जाऊँ तो वह कहते "मैं नहीं जानता, मेरी अभी हैं नहीं, उनसे बिना पूछे कैसे कहूँ।" और मेरी जब कभी वैज्ञानिकों की किसी मीटिंग में बहस में पड़ जाती और अपने को गुत्थियों में उलझती हुई देखती तो वह लजाती हुई अपने पति की ओर दृष्टि डालती जिससे वह उसकी सहा-

यता पर आ जायँ क्योंकि उसका विश्वास था कि पियरी की सम्मति की अपेक्षा हज़ारगुना अधिक मूल्यवान है।

मेरी ने इस सम्बन्ध में बाद में लिखा था—"पियरी से नाता जुड़ने पर मेरा जो कुछ स्वप्न था वह सब मैंने उनमें पाया, उससे कुछ अधिक ही। उनके असाधारण गुणों के प्रति, जो अपूर्व और उच्चकोटि के थे, मेरी श्रद्धा सदा बढ़ती ही गयी। मुझे वह अपनी तरह के अद्वितीय व्यक्ति जान पड़ते जब मैं देखती कि वह किस प्रकार अहंकार और उन प्रत्येक छोटी-छोटी बातों से सर्वथा परे हैं जिन्हें हम प्रायः अपने तथा दूसरों में पाते हैं……।"

१९. १९ अप्रैल १९०६—

वृहस्पति के प्रातः पानी बरस रहा था और कुछ अंधेरा था। पियरी को कई जगह जाना था। विज्ञान-विभाग में, प्रोफेसरों के निमंत्रण में, प्रकाशकों के यहाँ अपना प्रूफ देखने, और फिर प्रयोगशाला को। मेरी को भी कई जगह जाना था। काम की भीड़ में पियरी और मेरी सबेरे एक दूसरे को अच्छी तरह देख भी नहीं सके। पियरी ने मेरी को नीचे से आवाज़ दी, क्या तुम प्रयोगशाला जाओगी? मेरी ने जो उस समय आइरीन और ईव को कपड़े पहना रही थी कहा शायद मुझे समय न मिले परन्तु कोलाहल में उसकी वह बात भी स्पष्ट नहीं सुनाई पड़ी। किवाड़ बन्द कर पियरी जल्दी में चल पड़े।

पियरी पहले निमंत्रण में गये। वहाँ इस पर बात चली कि प्रयोगशाला में प्रायः जो दुर्घटनायें हुआ करती हैं और खोज करने वालों को जो ख़तरा रहता है उसे कम करने का उपाय निकाला जाय। पियरी ने फौरन कहा कि मैं भी इसमें सहायता दूँगा। करीब ढाई बजे वह वहाँ से हँसते हुये उठे और अपने प्रकाशक के यहाँ गये

परन्तु हड़ताल होने के कारण दूकान बन्द थी। वहाँ से वह प्रयोगशाला के लिये चले। मार्ग में भीड़ बहुत थी। पटरियों पर भी जगह कम थी। पियरी स्वभावतः भीड़ से अलग चलना पसन्द करते थे। सड़क की एक ओर से वह दूसरी ओर जाने लगे। एक घोड़ा गाड़ी उनके पीछे चली आ रही थी। और इतने में एक दूसरी विशाल गाड़ी जिसमें फौज का सामान लदा हुआ था उधर से आ पहुँची। इससे उन्होंने अपने को बचाने का प्रयत्न किया, परन्तु उसी समय दोनों बहुत समीप आ गये और पियरी ने देखा कि वह दोनों के बीच में फँस कर दब जायँगे। विवश होकर घोड़ा गाड़ी के एक घोड़े से लटकने का उन्होंने यत्न किया परन्तु घोड़ा पीछे को हट गया। भीगे रास्ते पर पियरी फिसल कर गिर पड़े। कोचवान के रोकते-रोकते भी घोड़े बढ़ते ही गये। घोड़े निकल गये परन्तु पियरी को चोट नहीं लगी, गाड़ी के पहले दो पहियों के बीच से भी उनका शरीर सुरक्षित पार हो गया। पियरी स्तब्ध से हो गये, न वह खसके और न तनिक भी चिल्लाये। राह चलते लोगों ने ज़बरदस्त शोर मचाया "रोको, रोको", परन्तु इतने में गाड़ी का पीछे का एक पहिया पियरी के सिर पर से निकल गया। रक्त की धार दिखाई पड़ी, पियरी का मस्तक चूर-चूर हो गया और वहीं उनकी मृत्यु हो गयी।

पुलिस ने फौरन ही मृत शरीर को उठा लिया जिससे एक क्षण पहले ही प्राण निकला था। एक डाक्टर ने उनकी चोट को धोया, पोछा और वह समीप के थाने में पहुँचाये गये। वहाँ जब उनका बेग खोला गया और उनके काग़ज़ निकले तब मालूम हुआ कि मृत शरीर पियरी क्यूरी का है। अब तो भीड़ बढ़ती ही चली गयी। कोचवान की तरफ़ घूंसे उठाये सब लोग दौड़े। यदि पुलिस ने उसकी रक्षा न की होती तो उसका बचना कठिन था। टेलीफोन से विज्ञान-विभाग को सूचना दी गयी।

प्रजातन्त्र के प्रधान का एक प्रतिनिधि मेरी के घर पहुँचा। वह नहीं थी इसलिये बिना कोई सूचना दिये ही वह चला गया। थोड़ी देर में विज्ञान-विभाग के प्रधान और एक दूसरे प्रोफेसर पहुँचे। मेरी अभी तक वापस नहीं आयी थी। पियरी के पिता घर में अकेले थे। उन लोगों से समाचार देते ही नहीं बनता था। परन्तु प्रोफेसरों का घबराया हुआ चेहरा देख कर उन्हें सन्देह होने लगा। उन्होंने फिर उनकी ओर देखा और पूछ ही बैठे···"क्या मेरा पुत्र नहीं रह गया ?" उन्हें दुर्घटना की पूरी बात बतलायी गयी। वह फूट-फूट कर रोने लगे। घोर निराशा परन्तु अत्यन्त स्नेह में वह उलाहने के तौर पर कहने लगे, आत्म विस्मृति ने ही उसकी जान ली और द्रवित हृदय से यही बार-बार दुहराते "आख़िर वह किस ध्यान में उस समय निमग्न थे।"

६ बजा, ताला खोलने की आवाज़ सुनाई पड़ी। मेरी प्रसन्न चित्त घर वापस लौटी थी परन्तु उसे डीन आदि को इस समय देख कर आश्चर्य हुआ। उनके मुख पर उसे दुख और सहानुभूति के चिह्न दीख पड़े। उन लोगों ने मेरी को दुर्घटना का सब समाचार बताया। मेरी स्तब्ध रह गयी, जैसे पाला मार गया हो। मालूम होता था वह उनकी बातों को समझ ही नहीं रही है। वह न रोई और न चिल्लाई। मेरी ऐसी जड़ और चेतनाहीन दिखाई पड़ी जैसे फूस की कोई स्त्री हो। बहुत देर तक वह बिलकुल चुप रही। फिर उससे न रहा गया, उसने धीमी आवाज़ में पूछा "क्या पियरी नहीं हैं ? शरीर पात हो गया ? उनकी मृत्यु हो गयी ? सर्वथा मृत्यु हो गयी ?" प्रश्न से प्रतीत होता था जैसे वह चाहती हो कोई नहीं कह दे।

वहाँ उपस्थित लोगों और मेरी के बीच एक अदृश्य भीत खड़ी थी। उनकी धैर्य और ढाढस दिलाने वाली बातों का उस पर कोई प्रभाव नहीं था। जैसे वह उनकी सुनती ही नहीं थी और बहुत ही

आवश्यक प्रश्नों का भी वह कठिनाई से उत्तर दे पाती थी। इस दुर्घटना के सम्बन्ध में कोई जाँच हो इसे मेरी ने सर्वथा अस्वीकार कर दिया। उसने कहा पियरी का मृत शरीर यहाँ शीघ्र लाया जाय। मेरी ने एक मित्र से आइरीन को अपने घर ले जाने के लिये कहा और एक तार वारसा भेजा—"पियरी की मृत्यु हो गयी, कारण दुर्घटना।" फिर वह बाग़ में जाकर भीगी हुई घास में घुटनों पर सिर रखे हुये बैठ गयी। मूक और बधिरवत् वह अपने साथी की प्रतीक्षा करने लगी।

पियरी की जेब में जो चीजें थीं वह पहले लायी गयीं, एक फाउन्टेनपेन, कुछ चाभियाँ, एक चमड़े का बेग, और एक घड़ी जो अब भी चल रही थी और जिसका शीशा तक नहीं टूटा था। आठ बजे दरवाजे पर ऐम्बुलैंस गाड़ी आकर खड़ी हो गयी। मेरी गाड़ी पर चढ़ गयी और अँधेरे में ही पियरी का शान्त मुख देखने का यत्न करने लगी। धीरे से स्टेचर कमरे में लाकर रखा गया। मेरी वहाँ अपने पति के साथ अकेले ही रही। उसने उनके मुख का चुम्बन लिया, उनका कोमल शरीर उस समय भी कुछ गर्म था और हाथ अब भी हिलाया जा सकता था। मेरी को ज़बरदस्ती दूसरे कमरे में ले जाया गया जिससे पियरी के पट्टी आदि बाँध दी जाय। पहले तो बेसुध अवस्था में वह लोगों की बात मान कर चली गयी परन्तु फिर सोच कर कि यह कुछ मिनट उससे जबरदस्ती क्यों छीने गये और उसने कैसे किसी को उस पवित्र शरीर के अन्तिम कामों के करने का अधिकार दिया वह वापस आयी और पियरी के शरीर से चिपट गयी।

दूसरे दिन जब पियरी के भाई बाहर से आये तब मेरी का बँधा हुआ गला खुल पड़ा और आँसुओं का प्रवाह बह चला। उन दो भाइयों की उपस्थिति में, एक जीवित और दूसरे निर्जीव वह सिसक-सिसक कर रोने लगी। कुछ समय बाद उसने फिर अपने को सम्हाला,

और घर में काम से इधर-उधर आने-जाने लगी तथा पूछा कि ईव को प्रतिदिन की तरह नहलाया धुलाया गया और कंघी की गयी या नहीं। बाग़ की दूसरी ओर आइरीन दूसरे बच्चों के साथ खेल रही थी। उससे मेरी ने कहा पिता को बुरी तरह चोट लग गयी है और उन्हें विश्राम की आवश्यकता है। आइरीन सुन कर निश्चिन्त हो फिर खेलने चली गयी।

मेरी की मानसिक दशा क्या थी इसका ज्ञान मेरी की डायरी देखने से होता है। उसके कुछ अंश यहाँ उद्धरित हैं—

"......पियरी, मेरे पियरी, तुम शान्त, एक ज़ख्मी आदमी की तरह सिर पर पट्टी बंधी हुई वहाँ निद्रा में विश्राम ले रहे हो। सरल और गम्भीर अब भी तुम वही हो, खोये हुये से, वह विशेषता तुम्हारे मुख से पृथक हो ही नहीं सकती। तुम्हारे होठ, जिन्हें मैं लालची कहा करती थी, वर्णहीन हो गये हैं। तुम्हारी छोटी दाढ़ी सफेद है। तुम्हारे बाल मुश्किल से दिखाई पड़ते हैं क्योंकि वहीं से चोट शुरू होती है और माथे तक पहुँची है, दाहनी ओर जो हड्डी टूट गयी है, वह भी दिखाई पड़ती है। हाय! तुमने कितना कष्ट उठाया है, कितना रक्त बहा है, तुम्हारे कपड़े रक्त से सने हुये हैं। तुम्हारे शिर को कितनी ज़बरदस्त चोट लगी हुई है, जिसे मैं अपने दोनों हाथों से प्रेमपूर्वक स्पर्श करती और सहराती थी। मैं तुम्हारे पलकों को चूमती थी, तुम उन्हें बन्द कर लेते थे, जिससे मैं उनका चुम्बन कर सकूं......।

"......शनिवार के सवेरे अर्थी में रखने के लिये मैंने तुम्हारा सिर हाथ में उठाया। तुम्हारा शीतल मुख हम लोगों ने अन्तिम बार चूमा। तब बाग़ के कुछ फूल और मेरा छोटा चित्र......जिससे तुम्हें बड़ा स्नेह था अर्थी पर रखे गये। चित्र ही तुम्हारे साथ क़ब्र में जायगा, उसका चित्र जिसने सौभाग्यवश तुम्हें इतना प्रसन्न किया कि तुमने कुछ ही क्षण में उसे अपना जीवन अर्पित करने में संकोच नहीं

किया। तुम मुझसे प्रायः कहा करते थे कि केवल एक यही अवसर था जब तुमने बिना किसी संकोच के निर्णय किया, इस पूर्ण विश्वास के साथ कि तुम ठीक कर रहे हो। मेरे पियरी, शायद तुम ग़लत नहीं थे। हम लोगों को मिलना ही था और हम लोग साथ रहने के लिये ही बनाये गये थे।

"तुम्हारी अर्थी बन्द कर दी गयी और फिर मैं तुम्हें न देख सकी। मैंने तुम्हें भयानक काले कपड़े से ढकने नहीं दिया। मैंने उसे फूलों से ढका और उसके बग़ल में बैठ गयी।

"......वे तुम्हें लेने आये, चिन्तित और दुखी लोग। मैंने उनकी ओर देखा और उनसे बोली नहीं। तुम्हें सैरो (Saraux) ले गये और तुम्हें गहरे गढे में जाते हुये हम लोगों ने देखा। फिर लोगों की भीड़ आयी, वे हमको हटाना चाहते थे। मैंने और तुम्हारे भाई ने नहीं माना। हम लोग हर चीज अन्त तक देखना चाहते थे। उन लोगों ने कब्र को भरा और उस पर फूल बिखराये गये। सब समाप्त हो गया, पियरी पृथ्वी के नीचे अपनी अन्तिम निद्रा ले रहे हैं, यह सब बातों का अन्त है, सब बातों का, सब बातों का।"

मेरी अपने साथी से बिछुड़ गयी और संसार ने एक महान पुरुष को खो दिया। संसार के सभी समाचार पत्रों ने सारी घटना प्रकाशित की। राजाओं, मंत्रियों, कवियों और वैज्ञानिकों तथा कितने अनजान लोगों ने सहानुभूति के तार और पत्र भेजे। दो तीन ये हैं—लार्ड केलविन—"क्यूरी की मृत्यु के भयानक समाचार से अत्यन्त क्लेश हुआ। अन्तेष्टि कब होगी? हम लोग कल सबेरे पहुँच रहे हैं।" मार्केलीन बर्थेलौट "........इस भयानक समाचार से हम लोगों को बिजली सी लगी। विज्ञान और मानव समाज की उन्होंने कितनी सेवा की और इस प्रतिभाशाली पुरुष से अभी हम

कितनी अधिक की आशा लगाये हुये थे। सब एक क्षण में विलीन हो गया, अब सब केवल स्मृति की कोटि में पहुँच गया।" जी० लिपमैन—"मुझे तो जान पड़ता है मैंने अपना भाई खो दिया। किस नाते से मैं उनसे बँधा हुआ था नहीं जानता। आज उसका अनुभव हो रहा है......।" चार्लस शोवेनौन पियरी के सहायक—"हम लोगों में से कुछ तो उनकी पूजा-सी करते थे। कुटुम्ब को छोड़ कर मेरा प्रेम उनके प्रति सब से अधिक था। वह अपने सहकारियों से प्रेम और सहृदयता का व्यवहार करना जानते थे। छोटे से छोटे नौकरों पर भी उनकी असीम कृपा रहती और उनके प्रति वे गहरा स्नेह रखते। उनकी आकस्मिक मृत्यु पर प्रयोगशाला के चपरासी तक कितने द्रवित थे, उनके आँसू थमते ही नहीं थे। पहले उन्हें शायद ही किसी और के लिये इतना दुख हुआ हो।"

सरकारी भीड़भाड़ बचाने के लिये मेरी ने अन्तेष्टि क्रिया को एक दिन आगे बढ़ा दिया। उसने जलूस और भाषण आदि रोक दिये और कहा कि जितनी सादगी से सम्भव हो पियरी को उनकी माता के पास दफ़न किया जाय। उस समय के एक मिनिस्टर श्री ब्रियां ने बात नहीं मानी और सम्मिलित होने का ही निश्चय किया। पत्रकारों की दृष्टि मेरी के चिन्ताग्रस्त मुख की ओर थी। वह अपने श्वसुर के कंधे के सहारे धीरे-धीरे चल रही थी। जब वह कब्र के पास पहुँची तो मूर्ति के समान खड़ी उस गढ़े को देखती ही रह गयी परन्तु जब अर्थी पर फूल डालने के लिये लाये गये तो वह जल्दी-जल्दी फूलों को अलग करने लगी और उसने धीरे-धीरे हल्के हाथों उन फूलों को अर्थी पर बखेरा। पूर्व इसके कि प्रचलित रीति के अनुसार लोग मेरी से अपनी समवेदना प्रकट करें वह गुलदस्ते को जो उसके हाथ में था जमीन पर डाल कर, बिना एक शब्द कहे चुपचाप क़ब्रिस्तान के बाहर आ गयी और अपने श्वसुर के साथ चल पड़ी।

अगले कई दिनों तक विश्वविद्यालय तथा फ्रांस और दूसरे देशों की वैज्ञानिक संस्थाओं में पियरी को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। हेनरी पोयंकारे ने अपने मित्र की स्मृति में ये शब्द कहे—"जो लोग पियरी क्यूरी को जानते थे वे उनकी सुखद, स्थिर, कोमल स्वभाव, स्पष्ट सच्चाई और सूक्ष्म बुद्धि से भी परिचित थे।

"यह किसे विश्वास होगा कि इस अटल और दृढ़ व्यक्ति के पीछे इतनी कोमलता छिपी हुई थी। जिन उदार सिद्धान्तों में वह पले थे और पूर्ण सत्य तथा ईमानदारी के जिस नैतिक आदर्श से उन्होंने प्रेम करना सीखा था—जो इस संसार के लिये जिसमें हम रहते हैं बहुत ही ऊँचा है, उससे वह समझौता करना नहीं जानते थे। वह उन छोटे-मोटे सहस्रों उपाय निकालने वाले ढंगों को जानते ही नहीं थे जिनसे हम अपनी निर्बलताओं को सहारा दे लेते हैं। विज्ञान की सेवा में भी वह इस आदर्श पर आरूढ़ रहे, और उन्होंने अपने उज्ज्वल उदाहरण से हमें दिखलाया कि सत्य के विशुद्ध प्रेम से स्वधर्म और कर्तव्य में कितनी ऊँची निष्ठा होती है। इसकी चिन्ता की क्या आवश्यकता कि कौन किस प्रकार के ईश्वर या देवता में विश्वास करता है। कोई देवता नहीं यह अटूटविश्वास ही है, जो चमत्कार उत्पन्न करता है।"

मेरी की डायरी का दूसरा उद्धरण—"दफ़न करने के दूसरे दिन मैंने आइरीन को सब बातें बतलायीं; वह पड़ोस के मित्र के यहाँ थी।......पहले तो उसने कुछ नहीं समझा और बिना कुछ कहे मुझे चले आने दिया परन्तु बाद में बहुत रोई और घर आयी। वहाँ आ कर और भी अधिक रोयी और फिर सब भूल जाने के लिये अपने मित्रों के पासचली गयी। ....पहले तो वह अपने पिता की बात पूछने में भी डरती थी।......अब मालूम होता है वह उनके सम्बन्ध में सोचती भी नहीं।

"मेरे भाई और बड़ी बहन आ गये हैं।......आइरीन अपने

चाचा के साथ खेलती है। ईव अपने अज्ञान में घर में इन सब घटनाओं के बीच प्रसन्न बदन इधर-उधर ढुलकती फिरती है, खेलती है, हँसती है। दूसरे लोग बातचीत करते हैं। और मैं पियरी, पियरी को ही मृत्यु शैया पर देखती हूँ।······तुम्हारी मृत्यु के बाद रविवार के सवेरे, पियरी मैं······पहले पहल प्रयोगशाला में गयी। मैं एक ग्राफ़ का नाप ठीक करने लगी जिस पर हम दोनों ने चिह्न बनाये थे। परन्तु एक पग भी आगे बढ़ना मेरे लिये असम्भव हो गया।

"सड़क पर मैं जैसे सुप्तावस्था में बिना कुछ देखे चलती हूँ। मैं मरूँगी नहीं। मुझे आत्महत्या करने की भी इच्छा नहीं है। परन्तु जो सब गाड़ियाँ चलती हैं उनमें क्या एक भी ऐसी नहीं है जो मुझे भी मेरे प्यारे की अवस्था में डाल दे।"

मेरी के श्वसुर, भाई, बहन, आदि मेरी की बिलकुल शान्त बर्फ जैसी अवस्था देख कर चिन्तित होते। वह सर्वथा यंत्र के समान चलती फिरती दिखाई पड़ती। बच्चों को देख कर भी उसमें कोई विशेष भावना जाग्रत न होती। विक्षिप्त और सब से पृथक वह जीवित ही मृतक समान हो गयी थी।

घर के लोग दूसरी बातों की चिन्ता में पड़े हुये थे। विश्व-विद्यालय तथा मंत्रियों के जो प्रतिनिधि आते उनकी दी हुई सम्मतियों पर ये लोग हलके हलके बात करते। पियरी की खोज और उनकी जगह के सम्बन्ध में क्या होगा? मेरी क्या करेगी? मेरी से पियरी के भाई ने कहा कि सरकार का विचार तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को पेंशन देने का है। मेरी ने स्वीकार नहीं किया और कहा "मुझे पेंशन नहीं चाहिये। मुझमें इतनी शक्ति है कि मैं अपने और अपने बच्चों के लिये धनोपार्जन कर सकूं।"

कुछ वैज्ञानिकों के जोर देने पर १३ मई (१६०६) को विज्ञान-विभाग ने सर्व सम्मति से मेरी को पियरी का स्थान और दस हजार

फ्रैंक वार्षिक पुरष्कार देने का निश्चय किया। यह पहला अवसर था जब फ्रांस में शिक्षा सम्बन्धी इतना उच्च पद किसी स्त्री को दिया गया।

मेरी के श्वसुर ने जब इसकी सूचना देते हुये कहा कि तुम्हारा उत्तरदायित्व इससे बढ़ जाता है तो मेरी ने अन्यमनस्क भाव से सुन कर इतना ही कहा "मैं यत्न करूँगी।" पियरी का वह वाक्य जो उसके लिये एक नैतिक आदेश और आज्ञा के समान था उसे स्मरण हो आया "चाहे जो हो यदि किसी को वैसे भी काम करना पड़े जैसे बिना आत्मा के शरीर तब भी उसे अपना काम करते ही जाना चाहिये।"

मेरी की डायरी से—"मेरे पियरी, मुझे तुम्हारा स्थान लेने के लिये कहा गया है……। मैंने स्वीकार कर लिया है। मैं नहीं जानती कि यह उचित है या अनुचित।……कभी मुझे मालूम होता है कि मैं इसी तरह अपना जीवन सुविधा पूर्वक बिता सकूंगी और फिर दूसरे समय प्रतीत होता है मैं ऐसा यत्न करने में पागलपन कर रही हूँ।"

७ मई १६०६—"मेरे पियरी, मैं तुम्हें निरन्तर सोचा करती हूँ। मेरा सिर फटा जा रहा है और मेरी बुद्धि ठीक नहीं है। मैं इसे मान नहीं सकती कि अब तुम्हें बिना देखे मुझे रहना होगा। अपने जीवन के मधुर साथी को देख कर क्या अब मैं मुग्ध न हो सकूंगी? दो दिन से वृक्षों में पत्तियाँ आ रही हैं और उपवन बड़ा सुहावना है। आज सबेरे मैंने बच्चों को वहाँ देखा। मुझे ध्यान आया वह तुम्हें कितने अच्छे लगते! और तुमने मुझे फूलों को देखने के लिये बुलाया होता। कल कब्रिस्तान में पत्थर पर खुदे हुये "पियरी क्यूरी" शब्द को मैं किसी तरह समझ ही नहीं पायी……।"

११ मई १६०६—"मेरे पियरी, मैं कुछ शान्तिपूर्वक रात को सो सकी। अभी पन्द्रह ही मिनट सोकर उठे हुये और अब मैं फिर

चिल्लाना चाहती हूँ—जंगली पशुओं की तरह।"

१४ मई—"मेरे नन्हें पियरी, मैं तुम्हें बताना चाहती हूँ कि… तरह-तरह के सुमन वाटिका में निकले हैं—तुम इन सब को कितना प्यार करते।

"मैं तुम्हें बताना चाहती हूँ कि मुझे तुम्हारी जगह दी गयी है और कुछ ऐसे मूर्ख भी हैं जो मुझे बधाई देने आये थे।

"मैं तुम्हें बताना चाहती हूँ कि मुझे अब धूप और कुसुम रुचिकर नहीं रह गये। उन्हें देख कर मुझे कष्ट होता है। अब तो अँधेरा अच्छा लगता है, उस दिन के ऐसा अँधेरा दिन जिस दिन तुम्हारी मृत्यु हुई थी। और यदि मैंने अच्छी ऋतु से घृणा करना प्रारम्भ नहीं किया है तो केवल इस कारण कि बच्चों को उसकी आवश्यकता है।"

२२ मई—"मैं सारे दिन प्रयोगशाला में काम करती हूँ। यही है जो मैं कर सकती हूँ, यहाँ और दूसरी जगहों से अच्छी रहती हूँ। वैज्ञानिक कार्य के अतिरिक्त मैं कोई दूसरी चीज सोच ही नहीं सकती जिसमें मुझे कुछ निजी शान्ति मिले और फिर वहाँ भी शान्ति नहीं मिलती क्योंकि प्रयोग में सफल होने पर यह सहन नहीं होता कि तुम्हें कैसे न बताऊँ।"

१० जून—"सब कुछ दुखी और व्यथापूर्ण है। जीवन के विविध कार्य मुझे पियरी के भी सम्बन्ध में शान्ति से नहीं सोचने देते।"

पियरी के और मेरी के भाई वापस जा चुके थे। ब्रोनिया रह गई थी। उसके जाने के एक दिन पहले मेरी ने उसे इशारे से बुलाया, अपने सोने के कमरे में ले गयी और किवाड़ बन्द कर लिया। ब्रोनिया अचम्भे से मेरी की ओर देख रही थी। मेरी का मुँह पीला और आज अधिक रक्तहीन दिखाई पड़ रहा था। उसने धीरे से एक बंधा हुआ पैकेट खोला। रस्सी के खुलने पर लिपटे हुये काग़ज़ खोलने में उसके हाथ काँपते दिखाई पड़े। काग़ज़ के नीचे जब ब्रोनिया ने

काले रक्त और कीचड़ से लथपथ कपड़े देखे तो वह डर सी गयी। पियरी के इन कपड़ों को मेरी मृत्यु के दिन से ही अपने पास रखे हुये थी। अब उनके खुलने पर उसकी दृष्टि उन पर से हटती ही नहीं थी। पहले तो वह घूर-घूर कर उन्हें देख रही थी, फिर उसे इतनी तेजी से चूमने लगी कि ब्रोनिया को विवश होकर उससे छीन लेना पड़ा और उसने इन्हें काट-काट कर धीरे-धीरे आग में डाल दिया। "मैं नहीं चाहती थी कि अनिच्छा से कोई इसे छूये", मेरी ने रुँधे हुये गले से कहा। ब्रोनिया के समीप आकर उसने कहा "अब मुझे बतलाओ कि मैं कैसे जीऊँगी। मैं जानती हूँ कि मुझे जीना पड़ेगा, परन्तु मैं इस नैया को कैसे पार लगाऊँ। मैं क्या करूँ?"

उसका हृदय चूर-चूर हो रहा था और वह जोर-जोर से सिसकने लगी। आँसू बह चले और वह ज़ोर से रो पड़ी। अपनी बहन पर वह गिर गयी। ब्रोनिया ने उसको सम्हाला और शान्त किया और अन्त में उसे चारपाई पर ले जाकर सुला दिया। मेरी बिलकुल अशक्त हो चुकी थी।

दूसरे दिन से मेरी पुनः यंत्रवत काम करने लगी। ब्रोनिया आज घर वापस जा रही थी, मेरी उसे स्टेशन तक पहुँचाने गई। बड़ी बहन ने द्रवित हृदय से मेरी को गले लगा लिया। जब गाड़ी चल पड़ी तो बहुत देर तक मेरी का निर्जीव मुखड़ा तथा उसके काले कपड़े उसकी आँखों में नाचते रहे।

दैनिक जीवन पहले जैसा व्यतीत होने लगा परन्तु पुरानी स्मृतियाँ ऐसा घेरे हुये थीं कि जब किवाड़ खटकता मेरी को प्रतीत होता कि पियरी आने वाले हैं और उसे क्षण भर के लिये जान पड़ता कि वह दुर्घटना झूठी थी। परन्तु अब कोई दूसरा उपाय नहीं था। उसे भविष्य की चिन्ता करनी ही थी। और अड़तीस वर्ष की आयु में दुख से चूर रहते हुये भी घर का सब उत्तरदायित्व निभाना था।

उसने निर्णय किया कि वह गर्मी भर पेरिस में ही रहेगी और पढ़ाने के लिये अपनी तैयारी करेगी। उसको इस तरह पढ़ाना था जिससे पियरी का मान बना रहे। मेरी ने अपनी पुस्तकें और नोट आदि एकत्र किये तथा अपने पति के नोट पढ़ डाले। एक बार फिर उसने अपने को अध्ययन में डुबो दिया।

मेरी के लिये इस घर में जहाँ पति-पत्नी अब तक साथ रहते थे अकेले रहना कठिन हो गया। उसने दूसरा घर खोजना शुरू किया और सीलो में रहने का निर्णय किया जहाँ पियरी विवाह से पूर्व रहते थे, और अब जहाँ वह अनन्त विश्राम में लीन थे। जब मेरी के श्वसुर डाक्टर क्यूरी को इसका पता चला तो वह अपनी बहू से विस्मित होकर पूछने आये "अब पियरी नहीं है तो मेरी, तुम्हें मेरे साथ रहने का तो कोई कारण है नहीं। मैं तुम्हें छोड़ सकता हूँ, अकेले रहूँगा या ज्येष्ठ पुत्र के साथ। तुम जैसा निर्णय करो।" मेरी ने धीरे से कहा "नहीं आप ही निर्णय कीजिये। यदि आप चले गये तो मुझे चोट पहुँचेगी। परन्तु आप जो पसन्द करें वही निर्णय कीजिये।" मेरी को चिन्ता हुई कि क्या श्वसुर भी उसका साथ छोड़ देंगे। शायद अपने पुत्र के साथ रहें, मैं एक दूसरे देश की लड़की हूँ। परन्तु उन्होंने उसी समय उत्तर दिया "मैं तो यही चाहता हूँ, मेरी, कि सदा तुम्हारे साथ रहूँ।" यह कहते हुये उनका हृदय भर आया और वह फौरन ही बाग़ की ओर चले गये जहाँ से आइरीन का हँसता हुआ कोलाहल उन्हें बुला रहा था। एक विधवा, उन्नासी वर्ष के एक वृद्ध, एक छोटी लड़की, और एक बच्ची, क्यूरी कुटुम्ब बस अब इतनों का ही था।

५ नवम्बर (१९०६) को मेरी का पहला व्याख्यान डेढ बजे होने वाला था। हाल बिलकुल भर गया। बाहर बरामदों तक भी लोग भर उठे। लोगों की उत्सुकता यह थी कि मेरी किस तरह अपना

व्याख्यान प्रारम्भ करेगी। पहली बार एक महिला बोलने को थी, जो अपने विषय में दक्ष होते हुये एक निराश पत्नी भी थी। ठीक एक बज कर पच्चीस मिनट पर जब मेरी आयी तो सब की गरदनें आगे बढ़ी हुई और आँखें उसकी ओर थीं। पूर्ण शान्ति थी और सब इस प्रतीक्षा में थे कि देखें मेरी के पहले शब्द क्या होते हैं। मेरी ने अन्दर आकर अभिवादन किया और तालियों के बन्द होने तक रुकी रही। साधारणतः जब कोई नये पद से बोलता है तो वह अपने से पूर्व काम करने वाले की प्रशंसा करता है। परन्तु मेरी ने इस वाक्य से फौरन अपना व्याख्यान प्रारम्भ किया "जब कोई इस पर सोचता है कि पिछले दस वर्ष में भौतिक विज्ञान ने कितनी उन्नति की है तो उसे अचम्भा होता है कि विद्युत और पदार्थ के सम्बन्ध में हमारे विचार कितने आगे बढ़े हैं......।"

मैडेम क्यूरी ने ठीक उसी वाक्य से अपना पाठ प्रारम्भ किया जहाँ पियरी ने समाप्त किया था। उसके इस पहले वाक्य को "जब कोई इस पर सोचता है कि पिछले दस वर्ष में भौतिक-विज्ञान ने कितनी उन्नति की है......" सुन कर लोग चकित रह गये और उनकी आँखों में आँसू आ गये। ऐसे ही दृढ़ शब्दों में अन्त तक मेरी ने अपना उस दिन का पहला व्याख्यान पूरा किया। और वह जिस तरह तेजी से हाल में आयी थी उसी तरह छोटे दरवाजे से जल्दी से वहाँ से चली गयी।

२०. अकेले—

मेरी अब अकेली हो गयी। पहले ही उसे काम बहुत था। अब और बढ़ गया, और उसके साथ उत्तरदायित्व भी। बच्चों के पालन-पोषण तथा आजीविका का भार, पियरी जो खोज सम्बन्धी कार्य छोड़

गये थे उसकी पूर्ति, प्रोफेसरी, और अपने सहायकों तथा विद्यार्थियों से काम लेना। इसके अतिरिक्त पियरी के स्वप्न के अनुकूल एक अच्छी प्रयोगशाला, जिसमें (रश्मिशक्तित्व) विज्ञान को अधिक से अधिक उन्नति दी जा सके, बनवाने की लगन भी मेरी को लगी हुई थी।

मेरी ने सिलो में एक घर किराये पर ले लिया। बच्चों के लिये एक गवर्नेस भी रखा। यहाँ से विश्वविद्यालय दूर था। प्रतिदिन वहाँ जाने के लिये उसे आध घंटे की रेल की यात्रा करनी पड़ती। वहाँ से शाम को थकी हुई वह लौटती और आग के पास बैठ जाती। अपने स्वभावानुसार वह कभी किसी पर अपना क्लेश प्रकट न करना चाहती। न किसी से अपना दुख कहती और न किसी दूसरे के सामने रोती। और न वह यही चाहती कि कोई उसके प्रति दया दिखावे अथवा समवेदना प्रकट करे। रात के भयानक सपनों और अपनी निराशा की रुलाई की भी किसी से वह कभी चरचा न करती। घर के लोग उसे सन्नाटे में बैठे हुये देखते। वह कभी-कभी बिलकुल शिथिल और असक्त-सी देख पड़ती। ईव लिखती है—"मुझे स्मरण है कि बचपन में मैंने अपनी माता को पृथ्वी पर मूर्छा से गिरते हुये देखा है।"

मेरी का एक महिला मित्र को पत्र (१९०७)—"......और बातों के सम्बन्ध में क्या लिखूं। मेरा जीवन ऐसा अस्त-व्यस्त हो गया है कि यह फिर ठीक हो ही नहीं सकेगा। शायद इसी तरह रहे और मैं इसे बदलने की भी चेष्टा नहीं करूँगी। मैं अपने बच्चों का अधिक से अधिक अच्छी तरह पालन पोषण करना चाहती हूँ परन्तु वे भी मेरे अन्दर जीवन का संचार नहीं कर सकते। दोनों सुशील, मधुर, और सुन्दर हैं। उनकी स्थिर और स्थायी उन्नति के लिये मैं यथाशक्ति यत्न कर रही हूँ। छोटी को देख कर सोचती हूँ, कहीं बीस वर्ष बाद जाकर बड़ी होगी, और मुझे सन्देह है कि मैं उतने दिन

जीऊँगी, क्योंकि मुझे बहुत श्रम करना पड़ता है, और फिर शोक का स्वास्थ्य पर कोई अच्छा प्रभाव नहीं होता······।"

मेरी को अपने श्वसुर से बड़ा प्रोत्साहन मिलता। वह मेरी को हँसने और वार्तालाप में भाग लेने के लिये विवश करते। बच्चों के तो वही प्रसन्नता के साधन थे। मेरी तो दिन भर अनुपस्थित रहती, यदि रहती भी तो बच्चों पर उसकी उदासी की छाया पड़ती। परन्तु उसके श्वसुर अपने को सदा स्थिर रखते और कभी दुखी न होते। तीन वर्ष बाद वे बीमार पड़े और एक वर्ष तक चारपाई पर ही पड़े रहे। मेरी अपने अवकाश में उनकी बहुत श्रद्धापूर्वक सेवा करती। १६१० में उनकी मृत्यु हो गयी। घोर जाड़े और पाले में कब्र खोदने वालों से मेरी ने बहुत परिश्रम कराया। उसने पियरी की अर्थी खुदवा कर बाहर निकलवायी, और फिर उनके पिता की अर्थी पियरी के नीचे रखवायी जिससे मरने पर मेरी पियरी से अलग न हो। उसने पियरी की अर्थी के ऊपर अपने लिये जगह खाली रखवा दी और इस पर निर्भय होकर बहुत दिनों तक सोचती रही।

अब बच्चों की देख-भाल का पूरा भार मेरी पर आ गया। उन्हें एक घंटा सवेरे पढ़ा कर बाग़ में खेलने भेज देती। वहाँ वे खूब घूमते और व्यायाम करते। वे सदा कुछ न कुछ काम करते ही रहते। बाग़ का काम, खाना बनाना, सीना-पिरोना आदि। गर्मी में मेरी उन्हें नहलाने ले जाती और तैरना सिखाती। बच्चों ने घुड़सवारी भी सीखी। अँधेरे से वे कभी डरते नहीं थे। ग्यारह वर्ष की आयु में वे अकेले घूमने जाते और रेल की यात्रा में भी उन्हें किसी के साथ की आवश्यकता न होती। डर से आँख बन्द कर लेना या चोर आदि से भय खाना उन्होंने सीखा ही नहीं था। मेरी को इन अवगुणों का पहले ही से ध्यान था।

बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य का भी मेरी सदा ध्यान रखती।

चिन्ता, क्षोभ, घर में सदा बने रहने की लालसा, अथवा किसी बात से अत्यधिक प्रभावित हो जाना, इनसे वह उनकी रक्षा करने का प्रयत्न करती। जीवन पर्यन्त उसने कभी "पियरी क्यूरी", तुम्हारे पिता", या "मेरे पति" ऐसा नहीं कहा। जहाँ इन शब्दों से उसकी पुरानी स्मृतियाँ जाग्रत हो उठती थीं वहाँ इन बच्चों को वह दुखित भी नहीं करना चाहती थी। उसकी इच्छा थी कि आइरीन और ईव पोलिश भाषा सीखें और पोलैंड से प्रेम करें। परन्तु उसने निर्णय किया कि इन्हें फ्रेंच ही बनाये रखेगी। दो देशों के चक्कर में ये बच्चे क्यों पड़ें अथवा किसी पीड़ित जाति के लिये क्यों अनावश्यक कष्ट उठावें?

अपने बच्चों को उसने कोई धार्मिक शिक्षा नहीं दी। उन सिद्धान्तों को बता सकने में वह असमर्थ थी जिनमें उसकी अब स्वयं आस्था नहीं रह गयी थी। परन्तु इन बच्चों के लिये वह उस क्लेश से डरती थी जो विश्वास की तिलांजलि के कारण मेरी को हुआ। वह स्वयं विभिन्न मतों के प्रति बहुत सहिष्णु थी और एक नहीं अनेक बार वह दोनों से कहती कि यदि बाद में तुम लोग कोई धर्म स्वीकार करना चाहो तो तुम्हें पूर्ण स्वतंत्रता होगी।

अपने प्रारम्भिक निर्धनता की भी चरचा वह बच्चों से न करती परन्तु वह इन्हें अनावश्यक ऐश्वर्य में भी नहीं रखना चाहती थी। ऐसे कई अवसर आये जिनमें मेरी इनके लिये बहुत बड़ी सम्पत्ति छोड़ जा सकती थी परन्तु उसने उनसे कभी लाभ नहीं उठाया। विधवा हो जाने पर उसके सामने प्रश्न था कि पियरी और उसके स्वयं तैयार किये हुये रेडियम का, जो उनकी निजी सम्पत्ति थी, क्या किया जाय? अपने श्वसुर और दूसरे कुटुम्बियों की सम्मति के विरुद्ध उसने उसी मार्ग का अवलम्बन किया जो पियरी ने किया था। दस लाख स्वर्ण फ्रेंक के मूल्य का वह अमूल्य पदार्थ उसने प्रयोगशाला को दान दे दिया। वह सोचती कि यदि निर्धन होना कष्ट का कारण है तो

बहुत धनी होना व्यर्थ और अनुचित है। उसकी लड़कियाँ अपने लिये स्वयं उपार्जन करें यह उसे स्वास्थ्यकर जान पड़ता था।

ईव लिखती है—"माता के बहुत से गुणों का स्थायी प्रभाव हम लोगों पर पड़ा, कार्य में रुचि,—बड़ी बहन में मुझसे यह सहस्रगुण अधिक रहा—धन से उपेक्षा, और स्वतंत्रता जिससे हम लोगों में स्वावलम्बन की भावना उत्पन्न हुई और यह विश्वास जगा कि किसी भी कठिन परिस्थिति में बिना दूसरों की सहायता के हम अपना काम चला सकते हैं। कष्ट से लड़ना आइरीन खूब जानती थी परन्तु मैंने नहीं सीखा। माता ने मेरी बहुत सहायता की परन्तु मेरा युवा-काल सुखी न रहा। जो कुछ भी हो हम लोगों का सुन्दर स्वास्थ्य और खेल से प्रेम अपनी माता की ही बदौलत है।

"मुझे भय है कि मेरी माता का चरित्र-चित्रण शायद यह प्रकट करे कि उनका जीवन, शुष्क, नीरस, और नियमों तथा कुछ विशेष धारणाओं से आबद्ध था परन्तु वास्तविकता इससे भिन्न थी। उनका स्वभाव अत्यन्त विनम्र और स्नेही तथा दूसरों के दुख से बहुत दुखी होने वाला था। यदि हम लोग अपनी माता से अधिक प्रेम प्रदर्शित करते या उन्हें प्रसन्न करने का यत्न करते तो उन्हें अच्छा ही लगता। हम लोगों की थोड़ी भी अन्यमनस्कता उन्हें सहन नहीं थी। वह न कभी हम लोगों का कान पकड़तीं, न भोजन बन्द करतीं, और न कोने में खड़े होने का दंड देती। मेरी माता को शोर या रोना अथवा अनावश्यक दृश्य खड़ा कर देना पसन्द नहीं था। वह किसी को भी अपनी आवाज ऊँची नहीं करने देती थीं, चाहे वह क्रोध में हो या विनोद में।"

एक दिन आइरीन ने जब उदण्डता की तो मेरी ने उससे दो दिन के लिये बात करना बन्द कर दिया। ये दो दिन दोनों के लिये बहुत दुखदायक थे। परन्तु ऐसा जान पड़ता कि माता और पुत्री में माता को ही अधिक दंड मिला है। दुखी घर में खिन्न मेरी

अनिश्चित रूप से इधर से उधर घूमती हुई दिखाई देती। वास्तव में उसने आइरीन से अधिक कष्ट पाया।

२१. द्वितीय नोबेल पुरस्कार—

प्रोफेसरी के दो वर्ष बाद १६१० में मेरी ने 'ट्रीटीज़ आफ़ रेडियो ऐक्टिविटी' नाम की एक बहुत महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी। नौ सौ एकहत्तर पृष्ठ की इस पुस्तक में आदि से अन्त तक रेडियो के विकास का पूर्ण विवरण था। इसके प्रारम्भ में लेखक का नहीं पियरी का चित्र था। इसके प्रकाशित होने से दो वर्ष पूर्व, पियरी ने जो कार्य वैज्ञानिक क्षेत्र में किया था, उसे भी संग्रह और क्रमबद्ध कर पुस्तक के रूप में मेरी प्रकाशित कर चुकी थी। छः सौ पृष्ठ की उस पुस्तक का नाम था "पियरी क्यूरी की रचनायें।" इस पुस्तक की भूमिका में मेरी ने लिखा था, "पियरी क्यूरी के अन्तिम वर्ष बहुत उत्पादक थे। उनकी बौद्धिक शक्ति और प्रयोग की दक्षता अपने पूर्ण विकास पर थी।"

"उनके जीवन का एक नया अध्याय खुलने वाला था......परन्तु नियति को यह स्वीकार नहीं था और हम लोग नियति के निर्णय के समक्ष—जिसे समझ सकने में हम सर्वथा अशक्य हैं—नतमस्तक होने के लिये विवश हैं।"

मेरी के विद्यार्थियों की संख्या प्रतिदिन बढ़ती ही गयी। अमेरिका के दानी ऐंड्रिव कारनेगी ने १६०७ में बहुत-सी छात्रवृत्तियों के लिये धन दिया जिससे नये विद्यार्थियों को मेरी खोज के काम में लगा सकी। इन्हीं में मेरी के जेठ का पुत्र भी था, जिसके प्रति वह वात्सल्य प्रेम रखती थी। नयी खोज करने का मेरी ने एक कार्यक्रम बना रखा था। यद्यपि उसका स्वास्थ्य अब दिनों दिन गिरता जाता था परन्तु वह खोज के काम में लगी रहती।

उसने रेडियम (क्लोराइड) के कुछ डेसीग्राम शुद्ध किये और उनका अणु भार क्या है यह जानने का दूसरा यत्न किया। फिर रेडि-यम धातु को पृथक करने का यत्न किया। अब तक जो शुद्ध रेडियम वह तैयार करती थी वह रेडियम के लवण (क्लोराइड या ब्रोमाइड) होते थे। परन्तु अब उसने अपने एक वैज्ञानिक मित्र एन्ड्रीडीवियर्न के साथ स्वयं धातु को पृथक करने का यत्न किया जब कि उसमें वाता-वरण के प्रभाव ने किसी प्रकार का परिवर्तन उत्पन्न न किया हो। वैज्ञानिक क्षेत्र में यह अत्यन्त कठिन प्रयोग था।

पोलोनियम तथा उसमें से जो रश्मियाँ निकलती हैं उनके अध्ययन में भी एन्ड्रीडीवियर्न ने मेरी की सहायता की। अन्त में मेरी ने स्व-तंत्र रूप से रेडियम का यंत्र खोज निकाला। इसके द्वारा रेडियम का शोध बहुत सरल हो गया। वैज्ञानिक, डाक्टर, और जन साधारण भी उसकी प्रयोगशाला से सचेष्ट खनिज की जाँच करा कर यह प्रमाण पत्र ले सकते थे कि उसमें कितना रेडियम है।

क्यूरीद्वय की प्रसिद्धि के बाद अब मेरी की निज की ख्याति भी बहुत ज्यादा बढ़ी। दूसरे देशों की एकेडेमी की सदस्यता और डाक्टरी की निःशुल्क उपाधियाँ मेरी को एक दर्जन प्राप्त हुई। परन्तु वह स्वप्न में भी उनका प्रदर्शन करने या सूची बनाने की कल्पना नहीं करती थी।

अपने महापुरुषों का सम्मान फ्रांस दो प्रकार से करता है, 'लीज़ियन आव आनर' की उपाधि तथा एकेडेमी की सदस्यता देकर। 'लीज़ियन आव आनर' की उपाधि को तो मेरी ने अपने पति की तरह १६१० में ही अस्वीकार कर दिया था परन्तु एकेडेमी की सदस्यता के लिये उम्मीदवार होना उसने स्वीकार कर लिया यद्यपि अपने पति का कटु अनुभव उसे भूला नहीं था।

मेरी भी उससे नहीं बची। तरह-तरह की बातों का उसके

विरुद्ध प्रचार हुआ। वह अधार्मिक स्वतंत्र विचारक है, फिर स्त्री को एकेडेमी में कैसे स्थान दिया जा सकता है आदि आदि। फ्रांस के सब बड़े-बड़े वैज्ञानिकों ने मेरी का समर्थन किया परन्तु तब भी वह एक वोट से हार गयी। प्रयोगशाला के सब कार्यकर्ता फल जानने के लिये उत्सुक थे। वे जीत निश्चित समझते थे। उन्होंने माले भी बना लिये थे। परन्तु फल विपरीत जान कर उन्हें बहुत अचम्भा हुआ। मेरी जब प्रयोगशाला में आयी उसने एक शब्द भी इस सम्बन्ध में नहीं कहा और उन लोगों को भी सांत्वना का कोई शब्द कहने की आवश्यकता नहीं प्रतीत हुई।

क्यूरियों के जीवन में ऐसी विचित्र घटना सदा घटती रही है कि जब कभी फ्रांस ने उनकी उपेक्षा की तो बाहर के देशों ने उसका परिमार्जन कर दिया। दिसम्बर में स्वीडन की वैज्ञानिक एकेडेमी ने रसायन-विज्ञान का १६११ का नोबेल पुरस्कार श्रीमती क्यूरी को देने का निश्चय किया। अपने पति की मृत्यु के पश्चात् इस वैज्ञानिक महिला ने जो चमत्कारपूर्ण कार्य और खोज किया था उसके उपलक्ष में यह पुरस्कार था। किसी पुरुष अथवा स्त्री को यह पुरस्कार अब तक दो बार नहीं मिला था।

मेरी रुग्ण और निर्बल थी। उसने अपनी बड़ी बहन और आइरीन को साथ लेकर स्वीडन की यात्रा की। वहाँ उसका अपूर्व स्वागत हुआ। पुरस्कार देने की जो शानदार सभा हुई उसमें आइरीन उपस्थित थी। उसे क्या मालूम था कि इसी हाल में चौबीस वर्ष बाद उसे भी इसी प्रकार नोबेल पुरस्कार लेने का गौरव प्राप्त होगा। वहाँ के राजा के निमंत्रण के अतिरिक्त और भी कई प्रकार के विशेष स्वागत हुये। किसान स्त्रियों का स्वागत तो मेरी कभी भूली ही नहीं। सैकड़ों ने रंग बिरंगे कपड़ों में सिरों पर जलती हुई मोम बत्तियों का ताज पहने मेरी का स्वागत किया। अपने सार्वजनिक भाषण में मेरी ने कहा—

"अपने विषय पर आने से पहले मैं याद दिलाना चाहती हूँ कि रेडियम और पोलोनियम का आविष्कार पियरी क्यूरी ने मेरे साथ किया था। रश्मिशक्तित्व विज्ञान के क्षेत्र में भी, स्वतंत्र या मेरे साथ अथवा अपने शिष्यों की सहायता से जो मूल सिद्धान्त उन्होंने निश्चय किये उसके लिये हम पियरी के ऋणी हैं।

"जो रासायनिक काम······मैंने इधर किया है वह विशेष रूप से मेरा ही है परन्तु वह पियरी और मेरे संयुक्त काम की ही एक शाखा है। मेरा विचार है कि मैं एकेडेमी की भावनाओं को ठीक प्रकट करूँगी यदि कहूँ कि उस संयुक्त काम के महत्व से ही प्रेरित होकर मुझे यह गौरव प्रदान किया जा रहा है और इस प्रकार यह सम्मान पियरी क्यूरी की स्मृति में भी है।"

महान खोज, सार्वभौम प्रसिद्धि, दो नोवेल पुरस्कार—जहाँ इनसे प्रशंसा और प्रेम की बाढ़ उत्पन्न होगयी वहाँ स्वभावतः दूसरों की द्वेष भावना भी जाग्रत हुयी। पेरिस में तरह-तरह की बातें फैलाई जाने लगीं। मेरी ने पुरुषों का काम उठाया था इसलिये पुरुषों में ही उसके साथी और मित्र थे। यह असाधारण स्त्री अपने सहकारियों पर विशेष और एक पर बहुत अधिक प्रभाव रखती थी। दूसरों से मैत्री करना उसे अनावश्यक प्रतीत होता था। परन्तु तब भी उस शान्ति-प्रिय और अपने कार्य में दत्तचित महिला पर यह दोषारोपण किया जाने लगा कि वह अपने नाम को कलंकित और घरों की शान्ति भंग कर रही है। उसके पास गुप्त चिट्ठियाँ आने लगीं जिनमें उसका अपमान किया जाता, उसके जीवन को संकट में बताया जाता। कौन इसके लिये उत्तरदायी था यह क्या बताया जाय परन्तु इनमें से कुछ ने बाद में आकर आँखों में आँसू भरे हुये खेद प्रकट किया और जो भूल उनसे हुई थी उसके लिये क्षमा माँगी। परन्तु अपराध तो कर ही दिया गया था। मेरी को इसकी बड़ी चोट लगी। वह पागल-सी हो

गयी और आत्महत्या की सोचने लगी। अन्त में सर्वथा अशक्त होकर वह बहुत सख्त बीमार पड़ गयी। उसको यह बात बाण जैसी लगती कि जब उसे अपमानित करना होता, जैसे एकेडेमी की सदस्यता के सम्बन्ध में, तो उसे पराये देश की रहने वाली आदि कहा जाता और जब नोवेल पुरस्कार आदि मिलता तो वह फ्रांस की 'सन्देश वाहक', 'फ्रेंच जाति की प्रतिभा की परिष्कृत प्रतिनिधि' और 'राष्ट्र की गौरव' कही जाती। महान पुरुषों को सदा ऐसे लोगों के आक्रमण सहने पड़े हैं जो विद्वेष से प्रतिभाशाली पुरुषों में निरन्तर अपूर्णता दिखाने की खोज में लगे रहते हैं। यदि मेरी को इतनी असाधारण ख्याति न मिली होती तो उसे ऐसी समालोचना भी न सहनी पड़ती। प्रसिद्धि से घृणा करने का उसके लिये यह दूसरा कारण हो गया।

२९ दिसम्बर को वह एक अस्पताल में ले जायी गयी। वहाँ डाक्टरों ने उसकी बहुत चिन्ता की और वह अच्छी हो गयी। परन्तु वृक्क के चीरे की आवश्यकता थी। मेरी ने इसे मार्च तक स्थगित रखने के लिये कहा क्योंकि फर्वरी के अन्त में वह भौतिक विज्ञानवादियों की कांग्रेस में उपस्थित रहना चाहती थी। मार्च में चीरा लगा और ज्वर तथा वृक्क का दर्द जाता रहा परन्तु वह रक्तहीन और बहुत निर्बल हो गयी थी। कुछ दिनों तक उसके लिये विश्राम करना आवश्यक हो गया।

अच्छी हो जाने पर निराश और निरुत्साहित मेरी जब भविष्य के सम्बन्ध में सोच रही थी उसी समय उसे एक सन्देश मिला जिसने उसको नयी भावनाओं से भर दिया। १९०५ की रूसी क्रान्ति के उपरान्त ज़ार का प्रभुत्व क्षीण हो रहा था, रूस निवासियों को विचार स्वातंत्र्य की कुछ सुविधा मिली थी, और वारसा में सख्ती कुछ कम पड़ गयी थी। वहाँ की एक वैज्ञानिक समिति ने १९११ में मेरी को अपना सदस्य बनाया। यह समिति बहुत काम कर रही थी और

कुछ स्वतंत्र भी थी। कुछ मास पश्चात वहाँ के शिक्षित समुदाय ने वारसा में रश्मिशक्तित्व विज्ञान की एक प्रयोगशाला और मेरी को उसका संचालक बनाने तथा संसार प्रसिद्ध वैज्ञानिक को उसकी जन्म-भूमि में वापस ले आने का निश्चय किया।

१६१२ के मई मास में पोलिश प्रोफेसरों का एक प्रतिनिधि मंडल मेरी के घर पर आया और पोलैंड के एक सब से प्रसिद्ध तथा सम्मानित व्यक्ति ने इन शब्दों में मेरी से निवेदन किया—"परम सम्मानित महिला ! आप हमारे देश और राजधानी में चलना स्वीकार कीजिये और अपना विज्ञान सम्बन्धी कार्य वहीं कीजिये। आप जानती ही हैं इन पिछले दिनों में हमारी संस्कृति और विज्ञान का क्यों ह्रास हुआ है। हम लोग अपने बौद्धिक बल में विश्वास खो रहे हैं, और भविष्य से निराश हो रहे हैं तथा शत्रुओं की दृष्टि में छोटे बन रहे हैं।

"……हमारे देशवासी आपके प्रति श्रद्धा रखते हैं और आपको अपने देश में काम करते हुये देखना चाहते हैं। यह समस्त देश की हार्दिक इच्छा है। आपको वारसा में पाकर हम लोग अपने को बलवान अनुभव करेंगे और इतनी आपदाओं से दबे हुए होने पर भी अपने सिर को ऊँचा उठा सकेंगे। हमें आशा है हमारी प्रार्थना स्वीकार होगी। और हमने जो हाथ बढ़ाया है, वह अस्वीकार न किया जायगा।"

किसी दूसरे व्यक्ति के लिये जिसमें कर्तव्यपरायणता की कमी होती फ्रांस को छोड़ कर चले जाने का यह अच्छा अवसर था, विशेष रूप से जहाँ उसके साथ इतनी क्रूरता और ऐसा अन्याय किया गया हो जैसा मेरी के साथ। परन्तु मेरी के मन में कभी घृणा या प्रतिशोध की भावना जाग्रत नहीं हुई। उसने सदभाव से विचार किया कि उसका कर्तव्य क्या है। जन्मभूमि लौट चलने की ओर वह आकर्षित होती और

घबराती भी। १९०६ में प्रयोगशाला बनाने का निर्णय हो चुका था। यदि वह पेरिस छोड़ कर चली जाती तो उस महान स्वप्न का अन्त निश्चित ही था। जन्मभूमि का मोह उसे बार-बार खींचता। दोनों विकट समस्याओं में से एक उसे चुनना ही था। अन्त में उसने बहुत संकोच और कष्ट से वारसा को अस्वीकृति का पत्र भेज दिया। परन्तु उसने लिखा कि वह यहाँ से प्रयोगशाला का संचालन करेगी और उसने अपने दो सर्वोत्तम सहायकों को वहाँ का कार्यभार लेने के लिये भेजा।

मेरी अब भी बीमार थी परन्तु १९१३ में 'रश्मिशक्तित्व' प्रयोग-शाला' का उद्घाटन करने के लिये वह वारसा गयी। रूसी अधिका-रियों ने उसकी सर्वथा उपेक्षा की और स्वागत में भाग नहीं लिया। इसलिये उसका स्वागत और भी अधिक धूमधाम से हुआ। जीवन में यह पहला अवसर था जब खचाखच भरे हाल में मेरी ने पोलिश में विज्ञान सम्बन्धी भाषण दिया।

मेरी ने अपने एक सहकारी को वारसा से लिखा—"यहाँ से चलने के पहले जो सेवा मुझसे बन पड़ रही है अपनी सम्पूर्ण शक्ति से कर रही हूँ। मंगल को मैंने एक सार्वजनिक भाषण दिया। कई और मीटिंगों में भी सम्मिलित हुई और हूँगी। मैं देखती हूँ लोगों में काम करने की प्रबल भावना है, इस इच्छाशक्ति का उपयोग होना चाहिये। अपने नैतिक और बौद्धिक जीवन की रक्षा के लिये यह निर्धन देश, जो पाशविक लोगों द्वारा शासित है, बहुत कुछ कर रहा है। शायद एक दिन आवेगा जब इस अत्याचार का अन्त होगा और तब तक देश को जीवित रखना आवश्यक है। परन्तु क्या जीवन है? और क्या स्थिति?

"मैंने उन स्थानों को जाकर फिर देखा जिनसे मेरा बचपन और मेरा युवक काल गुत्था हुआ है।......ये तीर्थ यात्रायें सुखद हैं और दुखद भी परन्तु इन्हें किये बिना कोई रह भी नहीं सकता।"

एक उत्सव उसी संस्था में हुआ जहाँ मेरी ने बाईस वर्ष पूर्व भौतिक विज्ञान का प्रथम प्रयोग किया था। पोलिश स्त्रियों की ओर से मेरी को यहाँ निमंत्रित किया गया था। अतिथियों की पंक्ति में बिलकुल सफेद बालों वाली एक वृद्ध महिला बैठी हुई मेरी को देख कर प्रफुल्लित हो रही थी। वह उस पाठशाला की संचालिका थी जिसमें मेरी ने अपनी शिक्षा के प्रथम पाठ लिये थे। मेरी उसके पास जाकर बैठ गयी और प्रेम से उसका मुख चूम लिया। भूतपूर्व संचालिका के अश्रु बहने लगे और दूसरों ने हर्ष ध्वनि की गूंज कर दी।

जब मेरी वारसा से लौटी तो वह पहले की अपेक्षा स्वस्थ थी। १९१३ की गर्मी में उसने घूमने की दृष्टि से एक पैदल यात्रा की। लड़कियाँ साथ थीं। इस टुकड़ी में ऐलवर्ट आइंसटाइन और उनके पुत्र भी थे। बच्चे आगे-आगे कूदते और दौड़ते चलते। वे अपनी माता और आइंसटाइन को देखकर हँसते क्योंकि वे सदा विचारों में मग्न या गम्भीर मुद्रा में बातें करते दिखाई पड़ते। अपने नवीन वैज्ञानिक विचारों में डूबे हुये आइंसटाइन उनपर मेरी से बात करते जिन्हें मेरी अपने गणित के असाधारण ज्ञान से अच्छी तरह समझती। वह यूरोप के उन थोड़े व्यक्तियों में से एक थी जो इन सिद्धान्तों को समझ सकते थे।

इस संक्षिप्त विश्राम और अवकाश के पश्चात् मेरी इंगलैंड गयी। वहाँ उसे फिर डाक्टर की उपाधि मिली। फ्रांस की पुरानी आँधी अब बन्द हो चुकी थी और मेरी वहाँ भी अपनी प्रतिष्ठा के उच्चतम शिखर पर थी। प्रयोगशाला के बनने का काम अभी तक स्थगित होता जा रहा था। विश्वविद्यालय के अधिकारी ढीले थे। जब प्रयोगशाला बनाने का विचार एक दूसरी संस्था के संचालक ने मेरी से प्रकट किया तब विश्वविद्यालय वालों के कान खड़े हुये। उन्होंने कहा कि मेरी को हम किसी तरह नहीं छोड़ सकते। दोनों संस्थाओं में समझौता हुआ

और प्रत्येक ने चार लाख स्वर्ण फ्रैंक प्रयोगशाला के लिये देने का निश्चय किया। इस भवन में दो अंग बनने वाले थे, एक रश्मिशक्तित्व का और दूसरा शरीर विज्ञान सम्बन्धी खोज का जिसमें अन्तर विद्रधि कैंसर की चिकित्सा का अध्ययन और उसके रोगियों की सेवा का आयोजन होने वाला था।

भवन के निर्माण काल में मेरी सदा इधर-उधर घूमती हुई और इंजीनियर आदि से बात और बहस करती दिखाई देती। जुलाई १९१४ में भवन बन कर तैयार हो गया। उसकी सुदृढ़ दीवालों पर मेरी ने पैस्टर के ये वाक्य उद्धृत किये—"यदि ऐसे विजय जो मानव कल्याण के लिये हुये हैं, आपके हृदय को स्पर्श करते हों,......यदि तरह-तरह के वैज्ञानिक आविष्कार आपको चकाचौंध करते हों तो......मैं निवेदन करता हूँ कि उन पवित्र स्थानों में अनुरक्ति दिखाइये जिन्हें प्रयोगशाला कहते हैं। यत्न कीजिये कि उनकी संख्या और उनका मान बढ़े।...... वहाँ मानवता बड़ी होती है, सुदृढ़ होती है और अपने को सुन्दर बनाती है। प्रकृति के कार्य जहाँ प्रायः विनाशकारी और पाशविक दिखाई पड़ते हैं वहाँ उन्हीं में से प्रयोगशाला उन्नति का मार्ग और सार्वभौम शान्ति का उपाय खोज निकालती है......।"

२२. महा समर—

ग्रीष्म के लिये मेरी ने ब्रिटैनी में एक छोटा-सा बँगला लेकर आइ-रीन तथा ईव को पहले से ही वहाँ भेज दिया था। वह साथ न जा सकी क्योंकि वर्ष का अन्तिम भाग होने के कारण विश्वविद्यालय का कार्य अधिक था। उसने ३ अगस्त को वहाँ पहुँचने का वचन दिया था।

मेरी ने १ अगस्त को अपनी पुत्रियों को लिखा—"प्यारी आइ-

रीन, प्यारी ईव, स्थिति चिन्ताजनक होती जा रही है। प्रत्येक क्षण सैनिक संचालन की आशा हो जाने की सम्भावना है। मैं नहीं जानती तुम लोगों के पास आ सकूंगी या नहीं। डरना नहीं, शान्त रहना और साहस बनाये रखना। युद्ध प्रारम्भ नहीं हुआ तो मैं सोमवार को तुम लोगों के पास पहुँच जाऊँगी। और यदि प्रारम्भ हो ही गया तो मैं यहाँ रुक जाऊँगी और तुम लोगों को बुलवा लूंगी। फिर तुम आइरीन और मैं तीनों अपने को उपयोगी बनाने का यत्न करेंगे।"

२ अगस्त—"मेरी प्यारी बेटियों, सेना की भरती शुरू हो गयी है और जर्मन युद्ध की घोषणा किये बिना ही फ्रांस में घुस आये हैं। कुछ समय तक हम लोग एक दूसरे से सुविधापूर्वक पत्र व्यवहार न कर सकेंगे।

"बिदाइयों का क्लेश होते हुये भी पेरिस शान्त दिखाई पड़ता है।"

६ अगस्त—मेरी बेटी आइरीन, मैं भी तुम लोगों को यहाँ वापस बुलाना चाहती हूँ परन्तु इस समय यह असम्भव है। धैर्य रखो।

"जर्मन बेलजियम को पार कर रहे हैं और लड़ते हुये आगे बढ़ रहे हैं। वीर बेलजियम ने बिना युद्ध किये उन्हें मार्ग नहीं दिया।··· ···फ्रांसीसियों का विश्वास है कि यद्यपि लड़ाई कठिन होगी परन्तु अन्त में फल अच्छा ही होगा।

"पोलैंड के कुछ भाग पर जर्मनी का आधिपत्य हो गया है। जर्मनों के प्रवेश और उसे पार करने पर पोलैंड का बच ही क्या जायगा ? अपने घर वालों का मुझे कुछ पता नहीं है।"

युद्ध प्रारम्भ होते ही मेरी के सहकारी और प्रयोगशाला के दूसरे कार्यकर्ता सेना में सम्मिलित हो गये। केवल एक मिस्त्री जिसका हृदय दुर्बल था और एक स्त्री जो मेज से अधिक ऊँची नहीं थी बाकी बच गई।

पोलिश होते हुये भी मेरी यह भूल गयी कि फ्रांस उसका केवल अपनाया हुआ देश है। उसने अपने बच्चों के पास जाने का भी विचार नहीं किया। अपने कृषित शरीर से उसे घृणा होती। उसने अपना विज्ञान सम्बन्धी काम आगे आने वाले किसी अच्छे समय के लिये टाल दिया। इस समय उसके समक्ष एक ही विचार रहा, अपनी दूसरी पितृभूमि की सेवा।

मेरी भी अन्य साहसी स्त्रियों के समान धवल वस्त्रधारी नर्स बन सकती थी परन्तु उसने यह सरल मार्ग अपने लिये नहीं चुना। उसने चिकित्सा सम्बन्धी संगठन में अपना नाम लिखवाया। यक्सरे का आविष्कार इस समय हो चुका था। मेरी ने सोचा कि युद्ध में यक्सरे की उपयोगिता बहुत होगी क्योंकि इसके द्वारा भीतर की चोट और गोली आदि का सरलता पूर्वक पता लग सकेगा। इसके लिये बहुत से रेडियोलौजिकल केन्द्र बनाने की आवश्यकता थी। उसने देखा कि सेनास्थल बदलता रहता है इसलिये कुछ ऐसे हलके यंत्र और दूसरे साधनों की भी आवश्यकता होगी जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाये जा सकें।

मेरी ने अपना सारा ध्यान इसी काम की ओर लगाया। यक्सरे की सब चीजें उसने पेरिस के अस्पतालों में भिजवायीं। उसके संचालन के लिये प्रोफेसरों, इंजीनियरों और वैज्ञानिकों ने स्वयंसेवक बनना स्वीकार किया। परन्तु एक ऐसी गाड़ी की आवश्यकता थी जिसमें यक्सरे का पूरा यंत्र आदि लगा हो जिससे वह जहाँ आवश्यकता हो जा सके। मेरी ने इसका उपाय निकाल लिया। एक मोटरकार को उसने रश्मि चिकित्सा संबन्धी कार बनाया जिसमें उसने यक्सरे का यंत्र और एक डायनमो लगाया जो कार की मोटर की सहायता से चलता और यंत्र के लिये आवश्यक बिजली प्रदान करता। अगस्त (१६१४) से लेकर युद्ध के अन्त तक इस तरह का चलता-फिरता केन्द्र

एक अस्पताल से दूसरे अस्पताल तक बराबर काम करता रहा।

जब मेरी ने देखा कि वह अपने बच्चों के पास नहीं जा सकती तो उसने उन्हें जेठ को सौंप दिया और आइरीन को लिखा—२८ अगस्त (१६१४)—"……पेरिस के घिरने की आशंका मालूम होती है। यदि ऐसा हुआ तो हम लोग एक दूसरे से कट जायँगे। इसे साहस से सहन करना क्योंकि हम लोगों के निजी स्वार्थ इस बड़े युद्ध के समक्ष कोई मूल्य नहीं रखते। जितना मेरा अनुमान है उससे अधिक यदि हम लोगों को पृथक रहना पड़े तो तुम अपनी बहन के प्रति अपना उत्तरदायित्व निभाना।"

२६ अगस्त—"प्यारी आइरीन, तुम जानती हो अब हम लोगों के एक दूसरे से कट जाने की कोई सम्भावना नहीं है परन्तु मैं तुम लोगों को बताना चाहती हूँ कि हमें सब बातों के लिये तैयार रहना चाहिये ……पेरिस सीमा के इतना समीप है कि जर्मन यहाँ आ सकते हैं। परन्तु उससे यह नहीं सोचना चाहिये कि अन्त में फ्रांस की विजय नहीं होती। साहस और विश्वास बनाये रखो! बड़ी बहन होने का ध्यान रखना……।"

३१ अगस्त—"तुम्हारा मधुर पत्र अभी मिला है और तुम्हें प्यार करने की इतनी इच्छा हुई कि मैं करीब-करीब रो पड़ी।

"स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। हम लोगों का हृदय दुखी और व्यग्र है। बड़े साहस की आवश्यकता है और मुझे आशा है हम उसमें पीछे नहीं रहेंगे। हमारी यह निश्चित धारणा होनी चाहिये कि बुरे दिन के बाद अच्छे आवेंगे ही। इसी आशा में मेरी प्यारी बेटियों मैं तुम्हारा आलिंगन करती हूँ।"

मेरी ने पेरिस में ही रहने का निश्चय कर लिया था। वह अपनी लड़कियों के पास जा सकती थी परन्तु इस क्षेत्र से हटना उसे कर्तव्य के प्रतिकूल प्रतीत होता। एक बात की चिन्ता उसे अवश्य थी। उसकी

प्रयोगशाला में बीस किलोग्राम रेडियम था जिसे वह हटाना चाहती थी। उसे वह स्वयं लेकर बोर्डो पहुँचाने गयी और दस लाख फ्रैंक के मूल्य का पदार्थ वह वहाँ सुरक्षित रख आयी। पेरिस की वापसी में गाड़ी के दूसरे यात्री मेरी को देख कर चकित होते और परस्पर कहते "यह स्त्री पेरिस जा रही है जब कि पेरिस बहुत ख़तरे में है।" लोग भयभीत थे परन्तु मेरी उन्हें सान्त्वना देती।

मेरी ने आइरीन को ६ सितम्बर को लिखा (१९१४)—"…… युद्ध का क्षेत्र बदल रहा है, शत्रु पेरिस से दूर हटता जा रहा है। हम सब लोग आशा से भरे हुये हैं और अपनी अन्तिम विजय में हमें विश्वास है।"

"……फरनैंड (जेठ का पुत्र) से कहो कि वह भौतिक-विज्ञान के प्रश्न करता रहे। यदि तुम लोग इस समय फ्रांस की सेवा नहीं कर सकते तो उसके भविष्य के लिये कुछ करो। खेद है कि युद्ध में बहुत लोग इस संसार से चल बसेंगे। उनके रिक्त स्थान की पूर्ति करनी होगी। गणित और भौतिक-विज्ञान जितना हो सके पढ़ती रहो।"

पेरिस बच गया। मेरी ने बच्चों को वापस बुला लिया। ईव स्कूल जाने लगी और आइरीन ने नर्स की शिक्षा लेनी शुरू की।

लड़ाई लम्बी होने वाली थी। आहतों की संख्या बढ़ती ही जायगी, मेरी को इसका अनुमान था। उसने पहले एक ही मोटर रखा था। अब उसने वैसे बीस तैयार किये। धनिकों से निर्दयी होकर वह उनकी मूल्यवान मोटरें माँग लेती और कहती "युद्ध के बाद यदि काम की रहीं तो लौटा दूँगी।" इन मोटरों का नाम "नन्हें क्यूरीज़" पड़ गया। अधिकारियों की पूरी सहानुभूति प्राप्त न होने पर भी मेरी इस काम में लगी हुई थी। जब वह अफ़सरों के पास जाती और आज्ञा पत्र आदि माँगती तो वे उससे नियम और कानून की बात करते और कहते "नागरिकों को हमें परेशान नहीं करना चाहिये।"

परन्तु मेरी बहस करती रहती और अपने काम में सफल होती।

अपने लिये मेरी ने एक लारी के ढङ्ग की मोटर तैयार की। पुराने चमड़े का थैला लिये और अपनी टोपी पहने जिसका न रंग रह गया था न रूप, वह लारी पर बैठ कर इधर से उधर जहाँ से बुलावा आता दौड़ती फिरती। सैनिकों की रोक थाम और कई जाँच के बाद वह अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचती। वह और एक सरजन अंधेरे कमरे में आहतों की परीक्षा में लग जाते। एक के बाद एक आहत व्यक्ति आता रहता और न केवल घंटों बल्कि कई दिनों तक वहाँ रह कर मेरी अपना काम करती। यक्सरे द्वारा तुरन्त दिखलाई पड़ जाता कि हड्डियों में गोली या बम के टुकड़े कहाँ हैं। कभी-कभी सर्जन उन्हें वहीं निकाल देते। मेरी जब वहाँ से चलने लगती तो यह निश्चय कर के चलती कि एक यंत्र का कहीं न कहीं से प्रबन्ध कर वह उसे यहाँ स्थायी रूप से लगायेगी और फिर वह वहाँ शीघ्र ही दिखाई भी पड़ती। एक आदमी के साथ वह वहाँ पहुँचती जिसे वह यंत्र के चलने का ढङ्ग सिखा देती। ऐसे अस्पतालों में उसके प्रयत्न से एक यक्सरे का कमरा तैयार हो जाता और फिर वहाँ उसके आने की आवश्यकता न रह जाती।

इस प्रकार के दो सौ रश्मि चिकित्सा के कमरे मेरी ने बनवा दिये। बीस मोटरों और उन दो सौ कमरों में एक लाख से अधिक आहतों की परीक्षा की गयी। उसने इसी बीच मोटर चलाना भी सीख लिया क्योंकि वह यह नहीं चाहती थी कि दूसरों की सहायता के बिना उसका काम रुक जाय। मोटर के पुरज़ों का भी काम उसने सीख लिया था और मोटर के बिगड़ जाने पर वह प्रायः उसे ठीक करने और अकेले टायर आदि बदलने का परिश्रमी काम करती हुयी दिखाई पड़ती। अधिकारियों के लाल फीते वाली नीति से बच कर काम निकालने का ढङ्ग उसने जान लिया था। मेरी जैसी किसी प्रसिद्ध

स्त्री ने अपने काम के सम्बन्ध में शायद ही कभी इतनी कम अड़चन पैदा की होगी। सुखों के प्रति उदासीन रहने के कारण वह अपने लिये कोई विशेष सुविधा नहीं चाहती थी। उसे इसकी भी चिन्ता न रहती कि वह कहाँ खाती है और कहाँ सोती है। वह इस समय बिना प्रयास महासमर की एक सिपाही बन गयी थी।

मेरी ने एक सज्जन को १ जनवरी (१६१५) को पत्र लिखा—"मैं किस दिन चलूंगी यह निश्चित नहीं है, परन्तु अब अधिक विलम्ब नहीं है। मुझे मालूम हुआ है कि सेंट-पाल-क्षेत्र की रश्मि चिकित्सा सम्बन्धी कार खराब हो गयी है।......मैं शीघ्र से शीघ्र यहाँ से चलने का यत्न कर रही हूँ। मैंने निश्चय कर लिया है कि अपनी पूरी शक्ति अपने अपनाये हुये देश की सेवा में लगाऊँगी। अपनी अभागी जन्मभूमि के लिये तो कुछ कर नहीं सकती हूँ जो सौ वर्ष से अधिक तक पीड़ित रहने के पश्चात् इस समय रक्त रंजित है।"

पेरिस में आइरीन और ईव सैनिकों की लड़कियों के समान रहती। मेरी भी जब किडनी का कष्ट हो जाता तभी घर पर ठहरती, नहीं तो किसी न किसी अस्पताल में पहुँचती रहती। ईव आदि के पत्र पते में अनेकों परिवर्तन के पश्चात मेरी के पास पहुँचते क्योंकि वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर जल्दी-जल्दी जाती रहती। मेरी के भी पोस्टकार्ड बहुत जल्दी में घसीटे हुये बच्चों को नये समाचार देते रहते।

बच्चों को मेरी के पत्र—२० जनवरी—"मैं यहाँ आमीन्स में हूँ। यहीं हम लोग सोये। केवल दो टायर हम लोगों के फटे।"

उसी दिन—"ऐविविली पहुँच गयी। हम लोगों की कार पेड़ से टकरा गयी। सौभाग्यवश अधिक क्षति नहीं पहुँची। हम लोग बोलोन के लिये चले जा रहे हैं।"

२४ जनवरी—"कई घटनाओं के बाद हम लोग पोपरिंगी पहुँच गये। परन्तु हम लोग काम नहीं कर सकते जब तक अस्पताल में कुछ

परिवर्तन न हो जाय। कार के लिये छांह का प्रबन्ध हो रहा है और रोगियों के बड़े कमरे का एक भाग रश्मि चिकित्सा विषयक कमरे के लिये पृथक किया जा रहा है। इसमें विलम्ब हो रहा है परन्तु बिना इसके काम चल नहीं सकता।

"जर्मनों ने डंक्रिक पर कुछ बम गिराये हैं। कुछ लोग मर गये परन्तु जनता भयभीत नहीं है।······यहाँ भी आक्रमण होता है परन्तु कम। हम लोगों को गोलियों की आवाज़ बराबर सुनाई देती है।··· यहाँ अस्पताल में मेरा बहुत प्रेमपूर्वक स्वागत हुआ······।"

एक दिन घर लौटने पर मेरी कुछ पीली पड़ी हुई और सुस्त दिखाई पड़ी परन्तु उसने कुछ बताया नहीं। अस्पताल से लौटते हुये उसकी मोटर उलट गयी थी और सन्दूक आदि जो मोटर में रखा था उसके नीचे वह दब गयी थी। गिरने पर वह अपनी चोट तो भूल गयी, उसे चिन्ता हुई कि प्लेट आदि तो नहीं टूट गये। वहाँ दबी हुई वह अपनी हँसी को न रोक सकी, जब मोटर ड्राइवर घबरा कर मोटर के चारों ओर चक्कर लगाते हुये धीमी आवाज़ में पूछने लगा "कहिये! कहिये! क्या आप मर गयी हैं?"

चोट हल्की ही थी, शीघ्र ही अपने को ठीक कर मेरी काम में लग गयी। घर का प्रबन्ध इस समय सब अस्त-व्यस्त था। वह उसकी चिन्ता कर ही नहीं सकती थी। आइरीन और ईव ने अपनी पढ़ाई किसी तरह जारी रखी थी और अपनी माता के बिना वे छुट्टियाँ भी अकेले मना लेतीं, परन्तु इससे अधिक कुछ और नहीं। बम गिरने पर मेरी उन्हें बिस्तरे में ही रहने देती और खाइयों में न जाने देती। ब्रिटैनी के किसान युद्ध में चले गये थे। फस्ल काटने वालों की आवश्यकता थी। मेरी ने आइरीन और ईव को भी (१६१६ में) उस काम के लिये अपना नाम लिखाने दिया। पन्द्रह दिन तक दोनों ने फस्ल काटी और उसके गट्ठर आदि बाँधे। १६१८ में बिग बरथा में बम

बरसने पर भी बच्चे वहीं रहे।

ईव अभी अपने को अधिक उपयोगी नहीं बना सकती थी। परन्तु मेरी ने सत्तरह वर्ष की आइरीन को स्कूल की परीक्षा की तैयारी के साथ-साथ रश्मि चिकित्सा का भी काम सिखा दिया। वह उसे काम सौंप कर अस्पतालों में भेजती। माता और पुत्री अब दो सुन्दर सहयोगी बन गये थे। मेरी अब अपने को अकेली अनुभव न करती। अपने काम तथा निज के सुख-दुःख की चरचा वह आइरीन से कर सकती थी।

युद्ध के प्रारम्भिक दिनों में ही मेरी ने आइरीन से एक महत्वपूर्ण परामर्श किया था। "गवर्नमेंट ने सब से सोने की माँग की है और शीघ्र ही युद्ध के लिये ऋण संग्रह किया जायगा," मेरी ने अपनी पुत्री से कहा। "जो सोना मेरे पास है मैं देने जा रही हूँ। इसमें मैं अपने मेडल भी दे दूँगी जो मेरे लिये सर्वथा व्यर्थ हैं। एक चीज और है। दूसरे नोबेल पुरस्कार का धन मैंने स्वीडन के सिक्कों में स्टाकहोम में ही अपने आलस्य से पड़ा रहने दिया है। जो कुछ हम लोगों के पास है उसका अधिकांश वहीं है। मैं चाहती हूँ कि उसे ले लूँ और युद्ध ऋण में लगा दूँ। राष्ट्र को इसकी आवश्यकता है। मुझे इसमें सन्देह नहीं कि यह रुपया डूब जायगा। परन्तु यह 'मूर्खता' तुम्हारी स्वीकृति लिये बिना मैं नहीं कर सकती।"

स्वीडन के सिक्कों ने फ्रेंक में परिवर्तित होकर "राष्ट्रीय ऋण" या 'सहायता' का रूप धारण किया और जैसा मेरी समझती थी उसके पास फिर यह सब धन नहीं लौटा। फ्रांसीसी बैंक में मेरी अपना सोना लेकर गयी। बैंक के एक अफसर ने रुपया तो ले लिया परन्तु सब पदक उसने खिन्न होकर लौटा दिये क्योंकि उनका गलाना वह उचित नहीं समझता था। मेरी उससे प्रसन्न नहीं हुई। यह उसे व्यर्थ का आडम्बर जान पड़ा।

युद्ध काल में मेरी कोई विशेष पहनावा नहीं पहनती थी। उसने नर्स का कपड़ा कभी नहीं पहना। अपने पुराने कपड़ों पर ही 'रेडक्रास' का चिह्न लगा कर नंगे सिर वह काम करती रहती। अपने काम में भ्रमण करते हुये मेरी एक चमड़े का बड़ा थैला अपने पास रखती थी। युद्ध के बाद (१९१८) उसने उसे एक दराज में डाल दिया। तब से वह वहाँ से हटाया नहीं गया और १९३४ में उसकी मृत्यु के पश्चात् निकला। उसे खोलने पर उसमें "मैडेम क्यूरी, संचालिका, रश्मि चिकित्सा-सेवासदन" का परिचय कार्ड और एक काग़ज़ जिसमें एक अधिकारी ने मैडेम क्यूरी को फौजी लारियों का उपयोग करने का अधिकार दिया था······निकला। इसके अतिरिक्त उसमें चार चित्र थे, एक उसके पिता, दो उसकी माता, और एक स्वयं मेरी का। दो छोटे थैलों में फूलों के बीज थे। उन पर लिखा था "रोज़ मेरी ज़ख़ीरे में यह अप्रैल और जून के बीच लगाया जायगा।"

जब भी उसे एक घंटे का विश्राम मिलता वह सोचती यह रक्तपात कब समाप्त होगा और कब वह अपने भौतिक-विज्ञान के काम में लग सकेगी। केवल सोचते ही रहने में उसने अपना समय नष्ट नहीं किया। वह संधिकाल के लिये अभी से तैयारी करने लगी। उसने प्रयोगशाला के सब आवश्यक पदार्थ एकत्र कर लिये और यंत्र आदि भी ठीक कर लिये। बोर्डो में जो रेडियम रख आयी थी उसे भी वापस ले आयी।

यक्सरे के समान रेडियम के भी विभिन्न रोग हर प्रभाव मनुष्य शरीर पर होते थे, परन्तु युद्ध प्रारम्भ होने पर (१९१४) गवर्नमेंट की ओर से इसका उपयोग करने का कोई प्रबन्ध नहीं हुआ। इस लिये मेरी ने स्वयं इस ओर यत्न किया। अपना बचाया हुआ रेडियम उसने इस काम में लगाया। प्रत्येक सप्ताह वह रेडियम से गैस निकालती रही। जो पदार्थ निकलता था उसे एक शीशे की नली में रख कर वह अस्पतालों और दूसरे केन्द्रों में भेजती रहती जहाँ विषाक्त चोटों या त्वचा

के दूसरे दोषों में यह काम आता और बहुत लाभ पहुँचाता।

इस नवीन कार्य के सम्बन्ध में मेरी अनेक प्रकार के लोगों के सम्पर्क में आयी। कुछ सरजनों और डाक्टरों ने यक्सरे की उपयोगिता देख कर मेरी में अपना एक अमूल्य साथी और सहकारी पाया। अल्प शिक्षित तथा दूसरे कम जानने वाले उस यंत्र को पहले अविश्वास से देखते परन्तु जब उसका प्रत्यक्ष फल उनके समक्ष आता तो उसकी ऐसी प्रशंसा करने लगते मानो वह कोई रहस्यपूर्ण पदार्थ हो।

रश्मि चिकित्सा विषयक कार तथा स्टेशन, एवं रेडियम के गैस से निकाली गयी औषधि, लाजिकलकार और रेडियो लाजिकल स्टेशन, मेरी ने ये नयी चीजें इस अवसर पर दीं। एक विशेष बात उसने और की। मेरी अपने कार्य में विशेषज्ञ कार्यकर्त्ताओं की न्यूनता देख रही थी। रेडियोलौजी की शिक्षा के लिये उसने एक कक्षा खोली। शीघ्र ही बीस नर्स इकट्ठा हो गयीं। पाठ्यक्रम था, इलेक्ट्रिसिटी और यक्सरे के सिद्धान्त, उसका प्रयोग और शरीर-विज्ञान शिक्षक मैडेम क्यूरी, आइरीन क्यूरी, और एक दूसरी विदुषी महिला थीं।

१९१६ से १९१८ के बीच डेढ़ सौ व्यक्तियों ने शिक्षा ली। प्रत्येक वर्ग के लोग सम्मिलित हुये। श्रीमती क्यूरी के विशेष व्यक्तित्व के कारण विद्यार्थी पहले उससे कुछ डरते परन्तु उसके प्रेमपूर्ण स्वागत से उनका भय दूर भाग जाता। मेरी की यह विशेषता थी कि वह विज्ञान की बातें साधारण बुद्धि वालों को भी बहुत अच्छी तरह समझा देती। किसी कार्य को सुन्दरता से करना उसे बहुत प्रिय था। जब एक विद्यार्थी ने प्रथम बार एक रेडियोग्राफिक प्लेट एक कलाकार के समान तैयार किया तो वह ऐसी प्रसन्न हुई जैसे उसकी ही विजय हुई हो।

फ्रांस के दूसरे मित्र राष्ट्रों ने भी मेरी को अपने यहाँ बुलाया। १९१४ से ही वह बेलजियम के अस्पतालों में जाती रही। १९१८ में वह इटली के निमंत्रण पर वहाँ गयी। कुछ दिनों बाद ही उसने अपनी

प्रयोगशाला में अमेरिकन सेना के बीस सैनिकों का स्वागत किया जिन्हें उसने रश्मिशक्तित्व विज्ञान की शिक्षा दी।

लोगों से दूर रहने वाली मेरी आहतों के लिये बहुत ही अच्छी थी। किसान और श्रमजीवी उसका यंत्र देख कर डर जाते और पूछते कि उससे अधिक कष्ट तो नहीं होगा। मेरी उन्हें विश्वास दिलाती "तुम देखोगे कि यह बिलकुल फोटोग्राफ जैसा है।" वह उनसे बड़ा स्नेह प्रकट करती और बहुत नम्र तथा हलके हाथों से धीरता-पूर्वक उनका काम करती। मनुष्य जीवन का महत्व उसकी दृष्टि में एक धार्मिक स्वरूप रखता था। किसी की प्राण-रक्षा अथवा किसी के अंग को कटने या निरर्थक होने से बचाने के लिये मेरी कठिन से कठिन प्रयत्न करने के लिये तत्पर रहती। उसका सदा यही प्रयास रहता कि वह दूसरों की पीड़ा कम कर सके।

इन चार वर्षों में जिन कठिनाइयों और आशंकाओं से मेरी पार हुई उसकी वह कभी किसी से चरचा न करती। यक्सरे तथा रेडियम का जो उसके कृषित शरीर पर बुरा प्रभाव पड़ा था, मृत्यु की जिन भयावह घटनाओं से वह बची थी, तथा श्रम के कारण वह जितनी श्रान्त और क्लान्त हो गयी थी उनके सम्बन्ध में वह एक शब्द भी न कहती। वह अपने सहकारियों के समक्ष सदा प्रसन्न चित्त रहती। युद्ध ने उसे हँसमुख रहना सिखाया जो साहस का एक सुन्दर वाह्य चिन्ह है।

परन्तु उसे आन्तरिक प्रसन्नता नहीं थी। वैज्ञानिक कार्य में बाधा तथा पोलैंड के अपने कुटुम्बियों का कुछ समाचार न मिलना उसके विषाद का कारण था ही; उसे यह भी चिन्ता रहती कि संसार का यह उन्माद जिसने लोगों को आच्छादित कर रखा है कब समाप्त होगा। उन सहस्रों नर-नारियों की स्मृति ने बहुत समय तक के लिये उसके जीवन को अंधकारमय, शून्य बना दिया था जिन्हें उसने ज़ख्मी

कटे पिटे तथा मरती हुई दशा में देखा था, जिनका रोना चिल्लाना और कराहना उसके कानों में गूंजा करता।

प्रयोगशाला में सन्धि के बन्दूकों की आवाज़ सुन कर मेरी चकित हुयी। अपनी संस्था पर वह झंडा फहराना चाहती थी परन्तु बाज़ार में जाने पर उसे एक झंडा भी नहीं मिला, सब समाप्त हो चुका था। तीन रंग का कपड़ा खरीद कर मेरी ले आयी। जल्दी से सीकर झंडे खिड़कियों पर फहराये गये। प्रसन्नता से भरी हुई मेरी शान्त न बैठ सकी। वह अपनी रेडियोलाजी वाली कार में बैठ कर सड़कों पर निकली। लोगों की अपार भीड़ थी। एक जगह भीड़ ने मोटर रोकी। बहुत से लोग प्रसन्नता में उसकी छत पर चढ़ गये और वापसी तक उस पर बैठे रहे।

मेरी के लिये एक नहीं दो विजय साथ साथ हुई। पोलैंड मर कर जीवित हुआ और डेढ़ सौ वर्ष की परतंत्रता के पश्चात एक बार फिर स्वतंत्र हुआ। मेरी ने अपने भाई को पत्र लिखा (दिसम्बर १६२०)— "तो अब हम लोग 'जो दासता में पैदा हुये और जन्म से ही बेड़ियों में जकड़े थे' इस समय अपने देश का पुनरुत्थान देख रहे हैं, जो हमारा सदा का स्वप्न रहा। हम लोग इस समय तक जीवित रहने की कल्पना नहीं करते थे और सोचते थे शायद हमारे बच्चों को भी वह घड़ी देखने को न मिले। वह समय आ ही गया! यह सच है कि इस आनन्द के लिये हमारे देश को बहुत बड़ा बलिदान करना पड़ा है और शायद फिर करना पड़े। परन्तु यदि युद्ध के बाद भी पोलैंड विभाजित और बेड़ियों में जकड़ा रहता तो वर्तमान परिस्थिति कितनी भिन्न होती। इसके फलस्वरूप जो तीखापन और नैराश्य उत्पन्न होता वह हमें चकनाचूर कर देता।

यह विश्वास और स्वप्न मेरी को उसके व्यक्तिगत कष्टों में धैर्य बँधाते। युद्ध ने उसके वैज्ञानिक कार्य और स्वास्थ्य दोनों को क्षति

पहुँचायी थी। जो धन उसने देश को सौंपा था वह बर्फ के समान गल गया था और जब वह अपनी आर्थिक दशा पर विचार करती तो उसे चिन्ता होती। पचास वर्ष की आयु में वह निर्धन थी। प्रोफेसरी का बारह हजार फ्रैंक वार्षिक वेतन ही उसकी पूंजी और आय थी। अपने पद से अवकाश ग्रहण करने तक क्या उसकी शक्ति अध्यापकी और प्रयोगशाला का संचालन करने की आज्ञा देगी, यह प्रश्न स्वभावतः उसके मन में उठता।

युद्ध के समय का काम बिना बन्द किये हुये (क्योंकि दो वर्ष बाद तक रश्मि चिकित्सा का काम सीखने के लिये विद्यार्थी आते रहे) मेरी ने अपने जीवन के एक मात्र ध्येय फ़िज़िक्स में फिर अपने को झोंक दिया। उसे 'युद्ध में रश्मि चिकित्सा' विषय पर एक पुस्तक लिखने को कहा गया। इसमें उसने विज्ञान के आविष्कार और सतत खोज के क्या गुण हैं तथा मानव के लिये उसका क्या मूल्य है इस पर भी अपने विचार प्रकट किये। अपने दुखदायक अनुभवों से उसका विज्ञान प्रेम और बढ़ गया था। युद्ध काल में मेरी का कार्य और उसकी नवीनता यद्यपि अदभुत थी परन्तु इस पुस्तक में उसका पता लगाना असम्भव सा है। अपने को मिटा देने या आड़ में रखने का इसमें सतत प्रयत्न है। मेरी केवल 'मैं' से घृणा ही नहीं करती थी, उसका उसमें अस्तित्व पाना कठिन सा जान पड़ता। अपने नाम को वह प्रगट न करती और इस प्रकार लिखती जैसे प्रयोग अथवा नये कामों को किसी जादूगर ने कर दिया हो। नाम बताने में वह कभी "चिकित्सक संस्थाओं" या "वे" अथवा बहुत अधिक आवश्यक होने पर "हम" का प्रयोग करती। रेडियम के आविष्कार के सम्बन्ध में वह कहती है "उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में विज्ञान ने हम लोगों पर जो नवीन विकिरल प्रकट किया है......।" और जब उसे अपने सम्बन्ध में कहने के लिये बाध्य होना ही पड़ता तब भी वह अपने को सब के

साथ मिला देती—"पिछले वर्ष जो बीते हैं उनमें देश की रक्षा के निमित्त अपनी सेवायें अर्पित करने की जब मुझे भी दूसरों की तरह इच्छा हुई तो मैं तुरन्त रश्मि चिकित्सा की ओर खिंच गयी।"

फिर भी एक छोटी-सी बात यह सिद्ध करती है कि मेरी को इसका भान था कि उससे जितना बन पड़ा उसने फ्रांस की सहायता की। उसने पहले और बाद में भी 'लीजियन आव आनर' का सम्मान लेना स्वीकार नहीं किया था। परन्तु उसके घनिष्ट मित्र जानते थे कि यदि १६१८ में उसे सिपाही का पद दिया जाता तो वह उसको—दूसरे किसी सैनिक सम्मान के नहीं—अवश्य स्वीकार कर लेती। परन्तु उसे अपने सिद्धान्त से डिगने से बचा दिया गया। बहुत-सी महिलायें सम्मानित की गयीं, मेरी को कुछ नहीं मिला। इस बड़े नाटक में उसने जो कुछ किया था वह कुछ सप्ताह में भुला दिया गया यद्यपि उसकी सेवायें एक दृष्टि से असाधारण थीं परन्तु समाज ने उसे स्वीकार करना या उसके लिये मेरी को सम्मानित करना आवश्यक नहीं समझा।

२३. सन्धि—अवकाश-ग्रहण—

संसार में फिर शान्ति हुई। सन्धि और शान्ति के प्रयत्नों को मेरी दूर से आशा और विश्वास के साथ देख रही थी। आदर्शवादिनी मेरी के लिये विलसन के सिद्धान्तों के प्रति आकर्षित होना और राष्ट्र संघ में विश्वास करना स्वाभाविक था। युद्ध के कारण जिस बर्बरता में मनुष्य पड़ जाता है उससे बचत का क्या उपाय है? वह ऐसी सन्धि की कल्पना करती जिसमें घृणा और द्वेष का अन्त हो जाय। वह कभी-कभी कहती "या तो जर्मनी का एक-एक आदमी समाप्त कर दिया जाय जिसे मैं स्वीकार नहीं कर सकती या उसे ऐसी सन्धि दी जाय

जो उसके लिये सह्य हो।"

पराजित और विजयी देशों के वैज्ञानिकों के सम्बन्ध पुनः स्थापित हो गये। मेरी का यह वास्तविक प्रयत्न होता कि वह पिछले लड़ाई झगड़ों को भूल जाय। परन्तु अपने दूसरे साथियों के समान वह अनावश्यक और अपरिपक्व प्रेम प्रदर्शन भी नहीं पसन्द करती थी। जब वह किसी जर्मन फ़िज़िस्ट से मिलती तो पूछना चाहती "क्या आपने ९३ हस्ताक्षर वाले घोषणा पत्र पर अपना नाम दिया था?" यदि उत्तर हाँ में होता तो वह उनके प्रति नम्र तो अवश्य रहती परन्तु उससे अधिक कुछ और नहीं। और यदि उत्तर नहीं में होता तो मेरी उनके प्रति मित्रवत व्यवहार करती और ऐसा खुल कर विज्ञान सम्बन्धी बातें करती जैसे युद्ध हुआ ही न हो।

विपत्ति के समय विद्वानों के कर्तव्य के सम्बन्ध में मेरी का उच्च आदर्श इस छोटी-सी बात से प्रकट है। उसका यह विचार नहीं था कि विद्वत्‌जन संघर्ष से पृथक रह सकते हैं। परन्तु कुछ ऐसे काम अवश्य थे जिनमें किसी प्रकार का समझौता करना वह उनके अधिकार के बाहर समझती थी। राइन पार के उन लेखकों और वैज्ञानिकों की वह निन्दा करती थी जिन्होंने 'घोषणा-पत्र' पर हस्ताक्षर किये थे। वह उन रूसी वैज्ञानिकों को भी दोषी ठहराती जिन्होंने सार्वजनिक रूप से सोवियट पुलिस द्वारा प्रयोग किये गये साधनों का समर्थन किया। मेरी का मत था कि बुधजनों में जो सभ्यता और विचार स्वातंत्र्य का निरन्तर पोषक नहीं है वह अपने उद्देश्य के प्रति विश्वासघात करता है।

१९१९ में मेरी प्रयोगशाला के प्रधान पद पर फिर काम करने लगी। १९१४में उसका तथा उसके सहायकों का काम जहाँ रुक गया था वहीं से फिर प्रारम्भ किया गया। शान्त और साधारण वातावरण होने पर मेरी आइरीन और ईव के लिये भी कुछ अधिक समय देने लगी। दोनों कन्यायें अब उससे बड़ी देख पड़तीं। २१ वर्ष की शान्त और

स्थिर चित्त आइरीन को अपने लक्ष्य के सम्बन्ध में क्षण भर के लिये भी कभी सन्देह नहीं हुआ। उसके हृदय में यह बात बैठी हुई थी कि वह भी फ़िज़िस्ट होगी और रेडियम का अध्ययन करेगी। माता-पिता की ख्याति और उनके बड़प्पन से न वह निरुत्साहित होती और न डरती। अपनी सराहनीय सरलता और सहज स्वभाव से आइरीन ने पियरी और मेरी का ही पदानुसरण किया।

अपने निजी अनुभव और आइरीन के उदाहरण से मेरी यह मान बैठी थी कि युवक और युवतियां जीवन की दुरूह भूलभुलैया में अपना मार्ग ढूढ ही लेते हैं। परन्तु ईव की अस्थिरता देख कर वह उद्विग्न होती और चिन्तित रहती। उसे युवकों की बुद्धि पर आवश्यकता से अधिक भरोसा था और वह उनकी स्वतंत्रता में विश्वास करती थी। ईव पर अपना अधिकार चलाना उसे उचित नहीं प्रतीत होता था। उसकी इच्छा थी कि ईव विज्ञान में विदुषी बने परन्तु वह अपनी इच्छा लादना उचित नहीं समझती थी। परन्तु वह एक ऐसे व्यक्ति को अत्यधिक स्वतंत्रता दे रही थी जो सन्देह में डूबी हुई थी और जिसके लिये कड़े आदेशों का मानना ही लाभदायक था। परन्तु मेरी अपनी भूल नहीं देख पाती थी क्योंकि उसके सामने अपना उदाहरण था, समस्त बाधाओं के रहते हुये भी वह उन्नति के शिखर पर पहुँचने में सफल हुयी थी। यह शायद वह भूल जाती थी कि उसकी प्रतिभा उसे एक विशेष देन थी,।

उसकी रुचि इसी में थी कि वह अपनी इन भिन्न प्रकृति की पुत्रियों की देखभाल अन्त तक करती रहे, जिनका पालन-पोषण जन्म से ही उसने समान रूप से किया था। जब आइरीन का विवाह हो गया और उनके बच्चे हुये तब भी मेरी अपनी दोनों पीढ़ियों का प्रेमपूर्वक ध्यान रखती रही।

मेरी ने २६ दिसम्बर (१६२८) को आइरीन को लिखा—"नये

वर्ष के लिये मेरी हार्दिक शुभ कामना स्वीकार करो···।

"मुझे तुम्हारी छोटी हेलेन की याद आ रही है। यही चाहती हूँ कि वह प्रसन्न रहे। उस का विकास कैसा करुणापूर्ण प्रतीत होता है जो पूरे भरोसे से तुमसे सब कुछ माँगने को सदा तत्पर रहती है और जैसे सचमुच समझती है कि तुम उसके और उसके सब कष्टों के बीच मध्यस्थ बन सकती हो। उसे एक दिन मालूम होगा कि तुम्हारी शक्ति इतनी अपरिमित नहीं है—यद्यपि हर एक चाहता है कि उसे अपने बच्चों के लिये ऐसी ही शक्ति प्राप्त हो······।"

युद्ध के श्रम पूर्ण वर्ष अब समाप्त हुये थे। मेरी के स्वास्थ्य की दशा कुछ अच्छी थी। समय पाकर पुरानी व्यथायें भी मृतक-सी हो चुकी थीं। मेरी को अपना पुराना सुख तो प्राप्त नहीं हुआ फिर भी प्रतिदिन के छोटे मोटे सुखों से प्रेम करना उसने सीख लिया था। आइरीन जो स्वयं बहुत अच्छी खिलाड़ी थी अपनी माता को स्केटिंग (बर्फ़ पर चलना) घुड़सवारी और दूर-दूर तक घुमाने के लिये ले जाती। गर्मी में मेरी ने ब्रिटैनी में अपनी लड़कियों का साथ दिया। वहाँ एक गाँव में जो भीड़ भाड़ से बहुत दूर था माता और पुत्रियों ने मित्रवत् अवकाश के बड़े सुहावने दिन व्यतीत किये।

समुद्र तट के इस गाँव में मल्लाहों और किसानों की बस्ती थी। विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों ने भी वहाँ कुछ घर ले लिये थे। मेरी पहले एक ग्रामीण के ही घर में रहती थी, फिर उसने एक बँगला किराये पर लिया और अन्त में एक घर खरीद ही लिया। उसने बिलकुल किनारे और एकान्त का मकान चुना था जो वायु के झकोरों से भरा रहता। पत्रकारों ने इस स्थान का नाम 'विज्ञान बंदर' (पोर्ट-साइंस) रख दिया था। वहाँ प्रसिद्ध फ़िज़िस्ट, गणितज्ञ, बयालेजिस्ट और इतिहासज्ञ सभी उपस्थित थे। गाँव के लोग मेरी से बहुत प्रेम करते। बच्चे उसे रास्ते में जाते देख कर मधुर बोलियों में अपना प्रेम प्रदर्शित

करते। इसका कारण मेरी का नाम या उसकी महानता नहीं थी, वह ऐसी सीधी सादी ही दिखाई पड़ती कि गाँव वाले उसे अपने में से ही एक समझते।

यद्यपि यहाँ गणित, इतिहास आदि अनेक विषयों के विद्वान रहते थे परन्तु कोई भौतिक विज्ञान, जीव-विज्ञान गणित या इतिहास आदि की बात न करता। सम्मान, सत्कार, और साधारण नम्रता के भी नियम यहाँ व्यवहार में न लाये जाते। वृद्ध और नवयुवक, गुरु और शिष्य का भी भेद मान्य नहीं था। नौका खेने, स्नान करने, तथा धूप लेने का दैनिक कार्यक्रम रहता। खेने वाले मल्लाह नहीं स्वयं अध्यापक गण होते। नाव पर बैठते ही मेरी भी अपना डांड सम्भाल लेती। गाना शुरू हो जाता और बीच-बीच में आवाज लगाती, देखो दांड ठीक नहीं पड़ रहा है। मेरी घबड़ा कर जब तक अपना बांया ठीक करती तब तक दाहने के ठीक करने की आवश्यकता पड़ जाती।

एक छोटी रेती के पास जहाँ चट्टान था नाव से सब उतर पड़ते, और स्नान करने का वस्त्र पहन कर स्त्री और पुरुष समुद्र में कूद पड़ते। आइरीन और ईव ने मेरी को बहुत अच्छा तैरना सिखा दिया था। और अब वह बहुत सफल तैराक हो गयी थी। दूसरे प्रोफेसरों की पत्नियाँ धीमे-धीमे आगे बढ़ती और कोई-कोई तो एक ही स्थान पर रुक जाती परन्तु मेरी तीव्र गति से हाथ चलाती हुई प्रोफेसरों से आगे बढ़ जाती। तैरने के पश्चात् वह अपनी पुत्रियों से पूछती कि आज वह कैसा तैरी और जब वे उसकी प्रशंसा करतीं तो वह बहुत प्रसन्न होती।

लौटते हुए नाव प्रायः ज्वार भाटे में पड़ जाती, फिर तो घंटों एक ही जगह लग जाता। कभी चार-चार घंटे तक रुकना पड़ता और खेने वाले भूख से व्याकुल हो जाते। परन्तु गाने के बाद गाना चलता रहता। अन्त में नाव किसी तरह किनारे लगती जहाँ समुद्र के सिवार भरे रहते। उसमें से होते हुये घुटनों पानी में चल कर निकलना पड़ता

परन्तु यदि मेरी की सहायता के लिये कोई हाथ बढ़ाता तो वह उसे नापसन्द करती। यहाँ कोई किसी की सहायता नहीं करता था और कानून की पहली दफ़ा सब पर लागू थी "अपनी चिन्ता आप करो।"

दो बजे के बाद सब फिर मिलते। आइरीन और ईव भी जातीं परन्तु मेरी इस समय घर पर ही रहती। वह अपने विज्ञान सम्बन्धी लेख ठीक करती अथवा बाग़ में चली जाती; क्यारी खोदती, और फूल के पौदे लगाती। इसमें उसे अच्छा परिश्रम करना पड़ता और उसके हाथ कांटों से भर जाते। कभी-कभी उंगुलियों से रक्त बहने लगता, हथौड़े से भी चोट लग जाती।

धूप और हवा में समुद्र तट का जीवन, रेतीले द्वीपों का निवास, बच्चों या जंगलियों की तरह आधे नंगे रहना, अब तो यह सब वर्तमान सभ्यता में स्वीकृत हो गया है और आज उसके पीछे लोग पागल हैं, धनी, निर्धन, प्रत्येक वर्ग उसका आनन्द लेता है, परन्तु पन्द्रह साल पहले यही चीजें नयी जान पड़ती थीं और इनकी कड़ी समालोचना होती थी। समुद्रतट आदि पर अब यह परिवर्तन अवश्य हो गया है कि पहले जहाँ ऐसे स्थानों पर सादगी दिखाई पड़ती थी, अब वहाँ रंगीन मोटर-बोटों आदि ने जैसे उनका सौन्दर्य ही हर लिया है और फैशन तथा प्रेमालाप का इस समय वहाँ आधिपत्य है।

हँसते बोलते और खेलते हुये मेरी अपने मित्रों और पुत्रियों के साथ ब्रिटैनी में अपना समय व्यतीत करती। वहाँ न कभी लड़ाई देखी गई और न आपस में विद्वेष। यहाँ की सुखद स्मृति मेरी के मन में सदा बनी रही। यहीं का निवास उसके जीवन का सर्वोत्कृष्ट सुख और ऐश्वर्य था।

२४. अमेरिका यात्रा—

एक दिन प्रातः (मई १९२०) न्यूयार्क के एक प्रसिद्ध पत्र की

सम्पादक एक महिला श्रीमती मेलानी श्रीमती क्यूरी से मिलने आयी। वह वर्षों से इस भेंट की प्रतीक्षा में थी। मेरी क्यूरी के जीवन और कार्य पर वह मुग्ध थी। उसे मेरी स्त्रीत्व का उच्चतम आदर्श जान पड़ती थी। वह अभ्यस्त पत्रकार कुछ सहमी हुई सी उससे मिली और पहले कोई प्रश्न न पूछ सकी। उसे निश्चिंत करने के लिये मेरी ने स्वयं अमेरिका के सम्बन्ध में बात शुरू की।

"अमेरिका में लगभग पचास ग्रेम रेडियम है?"

श्रीमती मेलानी ने पूछा "फ्रांस में कितना है?"

"मेरी प्रयोगशाला में मुश्किल से एक ग्रेम से कुछ अधिक होगा।"

श्रीमती मेलानी को बहुत आश्चर्य हुआ। जहाँ रेडियम का आविष्कार हुआ वहाँ केवल एक ही ग्रेम। कुछ देर बाद उसने मेरी से पूछा—"यदि संसार के सब पदार्थों में से आपको कुछ चुनना हो तो आप क्या लेना पसन्द करेंगी?" प्रश्न कुछ यों ही था परन्तु मेरी ने नम्रता पूर्वक उत्तर दिया "मुझे अपनी खोज के लिये एक ग्रेम रेडियम चाहिये परन्तु मैं उसे खरीद नहीं सकती। रेडियम मेरे लिये बहुत महंगा है।"

श्रीमती मेलानी ने उस सप्ताह में रेडियम के बाजार भाव का पता लगाया तो मालूम हुआ कि एक ग्रेम का मूल्य एक लाख डालर है। मेलानी ने मन ही मन श्रीमती क्यूरी को एक ग्रेम देने का निश्चय किया। न्यूयार्क पहुँच कर उसने दस धनी महिलाओं से दस-दस हजार डालर देने के लिये कहा। केवल तीन तैयार हुईं। जब इस तरह धन इकट्ठा करने में उसे कठिनाई जान पड़ी तो साधारण चन्दा एकत्र करने के लिये स्त्रियों की उसने एक कमेटी बनायी और इस कमेटी ने एक वर्ष के अन्दर ही सब धन एकत्र कर लिया।

श्रीमती मेलानी ने श्रीमती क्यूरी को लिखा "धन प्राप्त हो गया है और रेडियम आपका ही है।" मेरी के लिये उस महिला की यह बहुत बड़ी सहायता थी परन्तु उसके फल स्वरूप उसने लिखा—"आप

हम लोगों के यहाँ क्यों नहीं आतीं ? हम लोग आपको जानना चाहते हैं।" मेरी हिचकी। वह सदा भीड़ से भागती थी। अमेरिका की यात्रा से वह और भी शंकित होती जहाँ लोग संसार में सब से अधिक प्रचार और प्रकाशन के प्यासे हैं। मेरी ने आने में कई कठिनाइयाँ बतलायीं। श्रीमती मेलानी ने किसी को स्वीकार नहीं किया। उसने मेरी को लिखा "आप कहती हैं पुत्रियों को आप अकेले छोड़ना नहीं चाहतीं। हम लोग उन्हें भी निमंत्रित करते हैं। तरह-तरह के स्वागत आदि से आप उद्विग्न होती हैं, स्वागत का कार्यक्रम हम कम से कम रखेंगे। आइये, आपकी यात्रा हम सुन्दर बनाने का यत्न करेंगे। यूनाइटेड स्टेट्स के प्रधान ह्वाइट हाउस में आपको स्वयं रेडियम भेंट करेंगे।"

मेरी इस पत्र से बहुत प्रभावित हुई। रेडियम लेने और अमेरिका निवासियों को धन्यवाद देने के निमित्त उसने वहाँ जाना उचित ही समझा। चौवन वर्ष की आयु में इस तरह की यह उसकी पहली सरकारी यात्रा थी।

आइरीन और ईव ने यात्रा की तैयारी शुरू कर दी। ईव ने अपनी माता को भी विवश किया कि वह एक दो नया वस्त्र खरीदे और अपने जीर्ण कपड़े पेरिस में ही छोड़ दे। श्रीमती क्यूरी के समीपवर्ती उत्साह से भरे हुये थे। पत्रों में भी मेरी के अमेरिका जाने का समाचार प्रकाशित हो रहा था। फ्रांस के अधिकारियों ने विचार किया कि वहाँ जाने से पूर्व मेरी को उसके उपयुक्त कुछ सरकारी उपाधि दी जाय। अमेरिका के निवासियों को आश्चर्य होगा कि मेरी विज्ञान परिषद् की सदस्य नहीं है और 'लीजियन आव आनर' की उपाधि भी उसे नहीं मिली है। उपाधि देने के लिये कहा गया परन्तु मेरी ने फिर अस्वीकार किया। २७ अप्रैल १९२१ को मेरी को बिदाई दी गयी। वैज्ञानिकों के भाषण हुये और संगीत आदि हुआ।

मेरी और उसकी पुत्रियों की यात्रा आलम्पिक जहाज़ पर प्रारम्भ

हुई। तीनों के वस्त्र के लिये एक सन्दूक पर्याप्त था। परन्तु जहाज में उनका कमरा सब से अधिक कीमती था। उसकी सुविधा की मेरी प्रशंसा करती परन्तु उसके अत्यन्त सुखप्रद सामान तथा अनेक प्रकार का भोजन देख कर वह नाक भौं सिकोड़ती।

मेरी का अपनी एक महिला मित्र को पत्र (१० मई)—"...... तुम्हारा मधुर पत्र जहाज़ पर मिला। मुझे इससे सुख मिला क्योंकि मैं सर्वथा निशंक होकर फ्रांस से नहीं चली हूँ और इतनी दूर की यात्रा मेरी इच्छा और स्वभाव के विरुद्ध है। मुझे यह यात्रा अच्छी नहीं लगी। समुद्र सुनसान, अंधकारपूर्ण, और भयानक था। बीमार तो नहीं पड़ी परन्तु चक्कर आता रहा और मैं अधिकतर अपने कमरे में ही रही। मेरी लड़कियाँ बहुत सन्तुष्ट मालूम होती हैं। श्रीमती मेलानी जो हम लोगों के साथ यात्रा कर रही हैं उनके प्रति पूरा मित्र भाव रखती है। वह बड़ी स्नेही और कृपालु हैं।"

"......मैं......गाँव के सम्बन्ध में सोचती हूँ, वह सुन्दर समय जब हम लोग मित्रों के साथ वहाँ रहेंगे......। मैं उस बच्चे का भी विचार करती हूँ जिसकी आशा तुम्हारी पुत्री को है। हम लोगों के मित्र समूह का वह सब से छोटा सदस्य होगा......। इस बच्चे के बाद मुझे आशा है हम लोगों के बच्चों को और बहुत से बच्चे होंगे।"

न्यूयार्क आ पहुँचा। श्रीमती मिलानी ने आकर कहा पत्रकार, फोटोग्राफर, और फ़िल्म वाले खड़े हैं। बहुत बड़ी भीड़ आयी हुई है। पाँच घंटे से यह भीड़ स्वागत के लिये खड़ी थी। समाचार पत्रों ने मोटे-मोटे अक्षरों में शीर्षक दिया था "मानव जाति का कल्याण करने वाली" का आगमन। स्कूलों की कन्यायें और उनका स्काउट दल भी उपस्थित था। तीन सौ स्त्रियों का एक अलग समूह लाल और सफेद गुलाब के डालियों को हिला-हिला कर अपना स्नेह प्रदर्शित कर

रहा था। ये पोलिश महिलाओं की प्रतिनिधि थीं। अमेरिका, फ्रांस, और पोलैंड की पताकायें अपने चमकते हुये वर्गों में सहस्रों नर-नारियों के कंधों और उत्सुक चेहरों के ऊपर लहराती हुयी दिखाई पड़ रही थी।

जहाज़ की नौका पर मेरी एक कुरसी में बैठा दी गयी। उसकी टोपी और बेग ले लिये गये और फोटोग्राफर चिल्लाने लगे "श्रीमती क्यूरी इधर देखिये! दाहनी ओर सिर झुकाइये! अपना सिर उठाइये! इधर देखिये! इस ओर! इस ओर!" चालीस फोटोग्राफर और फिल्म लेने वाली मशीनें उस चकाचौंध और थके हुये व्यक्ति को घेरे हुये थीं।

आइरीन और ईव ने इस पूरी यात्रा भर मेरी की रक्षक का काम किया। मोटरों की सैर, बड़े-बड़े निमंत्रण, और भारी-भारी भीड़ों के स्वागत में उन्हें अमेरिका को पूरी तरह जानने का अवसर तो नहीं प्राप्त हुआ परन्तु उनकी माता का क्या स्थान है यह उन्हें अवश्य प्रतिभासित हुआ। प्रसिद्धि से दूर भागने वाली मेरी ने फ्रांस में अपनी महानता प्रकट रूप से छिपा रखी थी परन्तु यहाँ आने पर आइरीन और ईव की आँखें खुलीं कि उस महिला को जिनके साथ वे सदा रहती हैं संसार किस रूप में देखता है। अमेरिका आने से पूर्व ही यहाँ के निवासियों की मेरी के प्रति असीम श्रद्धा थी और वे उसे उस समय के नर-नारियों में प्रथम स्थान देते थे। यहाँ पहुँचने पर प्रथम दृष्टि में ही लोगों का सम्मान और प्रेम उसके प्रति उमड़ पड़ा। मेरी के आविष्कार उत्सुकता उत्पन्न करने के लिये पर्याप्त थे परन्तु उसकी निष्पृहता, सेवा की भावना, और उसका विद्या-प्रेम उन्हें और आकर्षित करते। एक पुष्प प्रेमी का कैंसर रेडियम द्वारा अच्छा हुआ था। वह पिछले दो मास से बहुत सुन्दर और अच्छे किस्म के गुलाब के फूल तैयार करने में लगा था। मेरी जब पहुँची तो उसने अपना

शानदार फूलों का उपहार भेजा। अमेरिका के सब नगरों, कालेजों तथा विश्वविद्यालयों ने मेरी को अपने यहाँ निमंत्रित किया था। पदक, और उपाधियाँ, डाक्टरी की तथा अन्य दर्जनों में उसे दी जाने वाली थीं।

"आप अपनी टोपी और गाउन तो लायी ही होंगी" श्रीमती मेलानी ने पूछा। "इन उत्सवों के लिये यह आवश्यक होता है।" मेरी ने सहज भाव से मुस्करा दिया तो उपस्थित लोग हैरान रह गये। वह नहीं लायी थी क्योंकि उसके पास कभी कोई गाउन रहा ही नहीं। पेरिस (सौरबों विश्वविद्यालय) के प्रोफेसरों के लिये गाउन रखना आवश्यक है परन्तु उनमें स्त्री अकेले एक मेरी ही थी। इसलिये उसने गाउन पुरुषों के ही हिस्से में छोड़ दिया था।

एक दर्ज़ी उसी समय बुलाया गया। उसने मखमल आदि लगा हुआ एक सुन्दर रेशमी गाउन तैयार किया। जब मेरी ने उसे पहना तो वह कुछ घबरायी, उसे अच्छा नहीं लगा। कहने लगी बाहें कष्ट देती हैं, कपड़ा बहुत गर्म है, और रेशम से छू जाने पर रेडियम से नष्ट हुई मेरी अंगुलियाँ खुजलाने लगती हैं।

१३ मई को मेरी का दौरा प्रारम्भ हुआ। श्वेत वसन धारी कन्यायें सड़कों पर पंक्ति बनाये खड़ी थीं। सहस्रों लड़कियों ने झंडा फहराते हुये अलग-अलग महिला विद्यालयों में श्रीमती क्यूरी का स्वागत किया। फूल बरसाती हुई वे साथ-साथ गाती और तालियों की धूम कर देतीं। नवयुवतियों द्वारा इस प्रथम स्वागत ने मेरी को भी प्रफुल्लित कर दिया।

एक बहुत बड़ी सभा में महिला विद्यालयों की प्रतिनिधियाँ एकत्र हुईं। प्रत्येक ने मेरी का अभिवादन करते हुये उसे उपहार स्वरूप रंग बिरंगे फूल दिये। अमेरिकन प्रोफेसरों, फ्रांस और पोलैंड के राजदूतों की उपस्थिति में वहीं मेरी को पुरस्कार, पदक और उपाधियाँ आदि दी गयीं। विशेष बात यह हुयी कि मेरी को 'न्यूयार्क नगर की

स्वतंत्रता की उपाधि' से भी सम्मानित किया गया।

दूसरे दो दिनों के उत्सव में अमेरिका की वैज्ञानिक समितियों के पाँच सौ तिहत्तर प्रतिनिधि भी मेरी से मिलने के लिये एकत्र हुये। वहाँ के हर्ष पूर्ण कोलाहल से मेरी सन्नाटे में आ गयी। जब सब की दृष्टि उस पर पड़ती और उसके आगमन पर जनता धक्के पर धक्का देकर उसे देखने के लिये आगे बढ़ने का यत्न करती तो उसे भय लगता। वह सोचती किसी समय दब कर वह पिस न जाय। एक अधिक उत्साही सज्जन ने इतनी जोर से मेरी से हाथ मिलाया कि उसका हाथ ज़ख्मी हो गया और कलाई बाँधे तथा लटकाये हुये उसे अपने दौरे के अन्त तक इसी दशा में—प्रसिद्धि का शिकार बन कर—रहना पड़ा।

प्रधान उत्सव का दिन आया। अमेरिका के सभापति श्री हार्डिंग ह्वाइट हाउस में रेडियम भेंट करने वाले थे। ४ बजे किवाड़ खुला और श्रीमती हार्डिंग ने फ्रांस के राजदूत और मेरी ने श्री हार्डिंग के साथ एक जलूस में प्रवेश किया। व्याख्यान प्रारम्भ हुये। अन्तिम भाषण श्री हार्डिंग का था। इस श्रेष्ठ महिला, सच्ची पत्नी, प्रेमी माता जिसने अत्यधिक काम में व्यस्त रहते हुये भी स्त्रीत्व का सब धर्म निभाया है" इन शब्दों में उन्होंने मेरी को सम्बोधित किया। भाषण के अन्त में तिरंगी डोरी से बंधा हुआ एक काग़ज़ उन्होंने मेरी को भेंट किया और उसके सिर पर एक रेशमी धागा डाल दिया जिसमें सोने की एक छोटी-सी कुंजी लगी हुई थी। यह कुंजी उस बक्स की थी जिसमें रेडियम रखा हुआ था।

मेरी के धन्यवाद के थोड़े से शब्द बड़ी श्रद्धा से सुने गये। इसके पश्चात् वह नीले कमरे में गयी जहाँ श्रीमती हार्डिंग ने वैज्ञानिकों से उसका परिचय कराया और मेरी की ओर से लड़कियों ने सब से हाथ मिलाया। उत्सव समाप्त होने पर जब जलूस में मेरी सीढ़ियों से उतर रही थी तो वहाँ पहले से ही फोटोग्राफरों की एक सेना चित्र लेने के

लिये तैयार खड़ी थी।

उत्सव के एक दिन पूर्व सायंकाल के समय जब श्रीमती मेलानी ने रेडियम सम्बन्धी मसविदा मेरी को दिखाया तो उसने धीरतापूर्वक कहा "इसमें परिवर्तन करना होगा। अमेरिका से जो रेडियम मुझे दिया जा रहा है वह विज्ञान का ही होना चाहिये। जब तक मैं जीवित हूँ इसमें सन्देह नहीं मैं उसका उपयोग वैज्ञानिक कार्य के ही लिये करूँगी। परन्तु यदि मसविदा इसी तरह रहा तो मेरी मृत्यु के बाद मेरी लड़कियों की वह निजी सम्पत्ति हो जायगी। यह असम्भव है। मैं इसे प्रयोगशाला को ही देना चाहती हूँ। क्या हम लोग किसी वकील को बुला लें ?"

"अच्छा, हाँ, अवश्य" श्रीमती मेलानी विस्मित-सी रह गयीं। आप कहें तो इसे दूसरे सप्ताह में ठीक करा लिया जाय।" दूसरे सप्ताह में नहीं। कल नहीं। आज रात को ही। यह कागज तो फौरन ही कानूनी हो जायगा और मैं यदि कुछ घंटों में मर जाऊं ?" रात अधिक बीत चुकी थी। वकील कठिनाई से लाया गया। उसने मेरी के साथ नया मसविदा तैयार किया जिस पर मेरी ने उसी समय हस्ताक्षर कर दिया।

वाशिंगटन से चलने के पहले श्रीमती क्यूरी को खनिज प्रयोगशाला का उद्घाटन करना था। इंजीनियरों को अन्तिम समय पर बतलाया गया कि श्रीमती क्यूरी बहुत थकी हुई हैं और वह नीचे इंजन के कमरे में न जा सकेंगी। उन लोगों ने तुरन्त ही ऐसा प्रबन्ध किया कि बिना नीचे गए एक बटन दबा देने से सारे यंत्र चलने लगे। सभा की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। एक व्याख्यानदाता ने अपने व्याख्यान के बाद सूचना दी कि "श्रीमती क्यूरी अब इस प्रयोगशाला की मशीनों को चलावेंगी।" परन्तु मेरी इस समय उस कारनो टाइट के अनुपम नमूने को देख रही थीं जो उसे पाँच मिनट पहले भेंट किया गया था। वह उसे घुमा-घुमा कर चारों ओर

चकित दृष्टि से देख रही थी और शायद सोच रही थी कि इसे अपने रेडियम भवन में कहाँ रखे। वक्ता ने दुबारा एलान किया परन्तु मेरी वैसी ही भूली हुई थी। समीप बैठे हुये मित्रों ने बहुत सम्मानपूर्वक मेरी को अपनी कुहनियों से सचेत किया। घबरा कर उसने फौरन बटन दबा दिया। हजारों आदमी जो कुछ मिनट के लिये अचाक से हो रहे बैठे हुये थे फिर निश्चिन्त हो गये।

फिलैडेलफिया में पदक और डाक्टर की तथा अन्य उपाधियाँ दी गयीं। वहाँ के एक कारखाने के मालिक ने पचास मिलीग्राम मेसो-थोरियम भेंट किया। पिट्ज़बर्ग में मेरी ने रेडियम का कारखाना देखा। यहाँ उसे डाक्टर की दूसरी उपाधि मिली। वह बहुत थक गयी थी परन्तु यहाँ भी उसे व्याख्यान और कवितायें आदि सुननी तथा गुलदस्तों की भेंट स्वीकार करनी ही पड़ी। दूसरे ही दिन यह समाचार प्रकाशित हुआ कि आगे की यात्रा के लिये श्रीमती क्यूरी बहुत निर्बल है। पश्चिम के नगरों का कार्यक्रम डाक्टरों की सम्मति से स्थगित कर दिया गया है।

अमेरिका के पत्रों ने इस प्रकार समालोचना की—"असाधारण स्वागत सत्कार" "आलोचक यह कहेंगे कि रेडियम की भेंट के लिये हमने मेरी के प्राण ही लेने की ठान ली……।" "किसी सरकस या विभिन्न खेलों के आयोजन ने मेरी को इससे अधिक रुपया दिया होता।" "अपने उत्साह की बाहुल्यता में हम लोगों ने मार्शल जाफरे को मार ही डाला था। क्या अब हम लोग श्रीमती क्यूरी को भी मारने जा रहे हैं?"

मेरी को भीड़-भाड़ से बचाने के लिये आयोजकों ने अब दूसरे उपाय निकाले। रेलगाड़ी के पीछे से श्रीमती क्यूरी को स्टेशनों पर उतार कर प्लेटफार्म पर जो भीड़ खड़ी रहती उससे बचा लिया जाता। जब बफेलो में मेरी के पहुँचने की सूचना दी गयी तो वह

न्याग्रा के जल प्रपात से एक स्टेशन पहले उतर गयी जिससे वहाँ के दृश्य को शान्तिपूर्वक देख सके। लोगों को जब इसका पता चला तो मोटरों की पंक्ति वहाँ पहुँच गयी।

बहुत से अवसरों पर मेरी के उपस्थित न हो सकने के कारण उनकी जगह पर आइरीन और ईव को गाउन पहने मेरी के लिये उपाधियाँ स्वीकार करनी पड़तीं। अच्छे-अच्छे गम्भीर व्याख्याता, जिन व्याख्यानों को मेरी के लिये तैयार करते और जिनमें उसके अनथक परिश्रम और महान कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा होती, उन्हें वे ईव, १६ वर्ष की कन्या को सुनाते। नगरों में जहाँ श्रीमती क्यूरी के ठहराने के सम्बन्ध में कई महिलाओं में विवाद रहता वहाँ इन लड़कियों में बँटवारा कर दिया जाता।

जब इस तरह के प्रतिनिधित्व का कार्य आइरीन और ईव के सिपुर्द न रहता तब उनके मनोरंजन के लिये टेनिस, नौका भ्रमण, और तैरने का प्रबन्ध किया जाता। कभी किसी छोटे द्वीप पर कैम्प होता या किसी दिन वे थियेटर जाती अथवा पार्क के आमोद-प्रमोद और खेल-कूद में सम्मिलित होतीं।

सम्पूर्ण अमेरिका की यात्रा कराने का विचार श्रीमती मेलानी ने छोड़ दिया था। परन्तु वह मेरी को पश्चिमी भाग अवश्य दिखाना चाहती थी। उधर की यात्रा अद्वितीय रही परन्तु मेरी उसका सुख ले सकने के लिये बहुत थकी हुई थी यद्यपि आइरीन और ईव उत्साह और उमंग से भरी हुई थीं। केवल परमावश्यक सभाओं और उत्सवों का ही आयोजन किया गया। २८ मई को न्यूयार्क में कोलम्बिया *विश्वविद्यालय ने श्रीमती क्यूरी को डाक्टर की उपाधि प्रदान की।* शिकागो विश्वविद्यालय में कई उपाधियाँ प्रदान की गयीं। वहाँ भीड़ इतनी अधिक थी कि श्रीमती क्यूरी और उनकी पुत्रियों को एक रस्सी द्वारा भीड़ से अलग रखने का प्रबन्ध करना पड़ा। स्वागत में

श्रीमती क्यूरी फूलों से ढक दी गयीं और फ्रांस तथा पोलैंड दोनों देशों का राष्ट्रीय गान गाया गया। अन्तिम स्वागत शिकागों के उस भाग में हुआ जहाँ केवल पोलैंड निवासी रहते थे। यह स्वागत सब से बढ़ा-चढ़ा था। वे केवल एक वैज्ञानिक का ही नहीं अपनी दूर की पितृभूमि के एक प्रतिनिधि का स्वागत कर रहे थे। आँखों में आँसू भरे हुये स्त्री और पुरुष मेरी के हाथ चूमने या कपड़ा छूने का यत्न करते।

१७ जून को श्रीमती क्यूरी को फिर हार स्वीकार करनी पड़ी और अपना दौरा स्थगित करना पड़ा। उनका रक्त वेग बहुत कम हो गया था। डाक्टर इससे चिन्तित थे। परन्तु मेरी ने कुछ विश्राम कर इतनी शक्ति प्राप्त कर ली कि वह हारवर्ड, येल, वेलेसली, सिमन्स और रैंडक्लिफ के विश्वविद्यालयों में बाद में जा सकीं।

२८ जून को फ्रांस लौटने के लिये मेरी 'आलम्पिक' जहाज पर फिर सवार हुई। उसके जहाज के कमरे में फूलों का पहाड़ बन गया था और तार के गड्डे लगे हुये थे। थकावट से चूर होते हुये भी मेरी वास्तव में बहुत सन्तुष्ट थी। उसे इसका हर्ष था कि वह फ्रांस और पोलैंड को अमेरिका के समीप लाने तथा उसका मित्र बनाने में सहायक हुई है। यद्यपि मेरी सदा शील और संकोच से दबी रहती परन्तु इतना अनुभव करने के लिये वह विवश थी कि यूनाइटेट स्टेट्स में उसकी व्यक्तिगत सफलता बहुत बड़ी रही और लाखों अमेरिका निवासियों का उसने हार्दिक स्नेह पाया तथा जो उसके सम्पर्क में आये उनके हृदयों पर उसने अधिकार प्राप्त किया। श्रीमती मेलानी तो जीवन पर्यन्त उसकी परम स्नेही मित्र रहीं।

इस यात्रा की कुछ बातें मेरी को धुँधले और कुछ बहुत स्पष्ट रूप में स्मरण रहीं। अमेरिका के विश्वविद्यालय जीवन का उस पर बहुत प्रभाव पड़ा। वहाँ के उत्सवों में कैसी कार्य कुशलता दिखाई पड़ती और कितनी प्रफुल्लता! विद्यार्थियों के खेल और व्यायाम का कितना

अपूर्व प्रबन्ध था ! वहाँ की महिलाओं में उसे संगठन की असीम शक्ति दिखाई पड़ी। वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं का सुन्दर प्रबन्ध और उनकी पूर्णता तथा क्यूरी थिरैपी द्वारा कैंसर के उपचार के लिये अस्पतालों की संख्या देख कर मेरी का मन कुछ खिन्न था। वह निरुत्साहित होकर सोचती कि इस वर्ष (१६२१) भी फ्रांस में एक अस्पताल ऐसा नहीं है जहाँ रेडियम द्वारा उपचार का प्रबन्ध हो।

जो रेडियम मेरी लेने आई थी वह उसके साथ जहाज़ पर ही था। इस छोटे से टुकड़े को लेने के लिये मेरी ने इतनी दूर की यात्रा की और उसे भिक्षाटन कर अनेक उदार नगरों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करनी पड़ी। यहाँ स्वभावतः कुछ प्रश्न उठते हैं—यदि मेरी ने कुछ वर्ष पहले पेटेन्ट का अधिकार लेना स्वीकार कर लिया होता तो क्या वह अपने देश को स्वयं प्रयोगशालायें और अस्पताल नहीं दे सकती थी ? क्या मेरी के मन में कभी यह बात उठी कि इस त्याग ने उसके काम की उन्नति में बाधा डाली ? क्या बीस वर्ष के प्रयत्नशील और संघर्षमय जीवन से मेरी को कभी खेद हुआ ? अमेरिका से लौटने पर अपनी आत्म जीवनी सम्बन्धी कुछ नोट में इन प्रश्नों का मेरी ने स्वयं उत्तर दिया था—

"मेरे बहुत से मित्र इसका दावा करते हैं, शायद निरर्थक तर्कों द्वारा नहीं, कि यदि पियरी क्यूरी और मैंने रेडियम के अपने अधिकार सुरक्षित कर लिये होते तो हमारी आर्थिक स्थिति ऐसी होती कि हम लोग रेडियम-भवन खड़ा कर सकते थे और वे बाधायें हमारे मार्ग में न पड़तीं जो हम दोनों को पड़ीं और मेरे लिये अब भी पड़ रही हैं। परन्तु जो कुछ भी हो मेरा यह पूर्ण विश्वास है कि हम लोगों ने ठीक ही किया।

"मानवता को ऐसे व्यावहारिक व्यक्तियों की सचमुच आवश्यकता है जो अपने कार्य द्वारा अधिक से अधिक उत्पादन करते हैं और जन हित का ध्यान रखते हुये निज हित की भी रक्षा करते हैं। परन्तु

मानव समाज को ऐसे स्वप्न दर्शियों की भी आवश्यकता है जिन्हें किसी उद्देश्य की निस्वार्थ उन्नति इतनी प्रिय और आकर्षक हो कि उनके लिये अपने निजी लाभ की चिन्ता कर सकना असम्भव हो जाय।

"निस्सन्देह ये स्वप्न दर्शी धन के अधिकारी नहीं हैं क्योंकि वे उसकी इच्छा ही नहीं रखते। फिर भी एक सुसंगठित समाज को उनके कार्य की पूर्ति के लिये सम्पूर्ण साधन तो उपस्थित करना ही चाहिये जिससे आर्थिक चिन्ताओं से विमुक्त होकर वे निश्चिन्त रूप से खोज के काम में अपने को लगा सकें।"

२५. पूर्ण विकास—

अमेरिका की यात्रा से मेरी को कुछ शिक्षा मिली। उसका जन-साधारण अथवा समाज से सर्वथा अलग रहना एक विरोधात्मक बात थी। विद्यार्थी के रूप में वह अपने को पुस्तकों के साथ कमरे में पृथक बन्द कर ले या खोज में लगने वाले कार्यकर्ता के रूप में वह उसमें ही अपने को केन्द्रित रखे, और उसे ऐसा करना ही पड़ता था, परन्तु पचपन वर्ष की आयु में श्रीमती क्यूरी एक विद्यार्थी या खोज में लगे हुये कार्यकर्ता के अतिरिक्त कुछ और भी थी। वह एक नये विषय और थेराप्यूटिक्स के एक नये उपचार कला की प्रवर्तक बन गयी थी। उसकी प्रतिष्ठा अब इतनी थी कि केवल अपनी सम्मति से अथवा कहीं उपस्थित रह कर वह जनहित के कामों की सफलता में, जो उसे प्रिय था, सहायक हो सकती थी। मेरी को अब अपने भविष्य जीवन में मिलने-जुलने और यात्राओं के लिये स्थान रखना ही था।

मेरी की सब यात्राओं के सम्बन्ध में यहाँ लिखना आवश्यक नहीं। सब प्रायः एक ही सी थीं। प्रयोगशालाओं को देखने, व्याख्यान देने, तथा वैज्ञानिक कांग्रेस और विश्वविद्यालयों के उत्सवों में सम्मिलित होने के लिये श्रीमती क्यूरी को बहुत से देशों में जाना पड़ा।

सब जगह उसका अपूर्व स्वागत हुआ और अपने निर्बल स्वास्थ्य से लड़ कर भी उसने अपने को सब जगह लाभदायक बनाने का यत्न किया।

मेरी जहाँ जाती वहाँ सरकारी कार्यक्रम पूरा करने के पश्चात प्राकृतिक सौन्दर्य की खोज में निकलती। तीस वर्ष के शुष्क कार्य ने संसार के सौन्दर्य का प्रेम उसमें जाग्रत कर दिया था।

रियोडिजनरो में वह चार सप्ताह रही जहाँ आइरीन के साथ वह व्याख्यान देने गयी थी। प्रतिदिन प्रातः वह छिप कर तैरने और मध्याह्न में पैदल, मोटर से, या हाइड्रोप्लेन में भ्रमण करने जातीं।

इटली, हालैंड, और इंगलैंड ने उसका कई अवसर पर स्वागत किया। १९२२ में उसने ईव के साथ स्पेन की शानदार यात्रा की। चेकोस्लोवेकिया में सभापति मैजिरिक ने, जो उसकी ही तरह किसान थे, मेरी को अपने ग्राम निवास में ही आमंत्रित किया। ब्रसेल्स में, जहाँ वह प्रातः वैज्ञानिक कांग्रेस में सम्मिलित होने जाती, उसके प्रति अतिथि का नहीं मित्र और पड़ोसी का व्यवहार होता। इन मीटिंगों से वह प्रेम करती थी क्योंकि भौतिक-विज्ञान के प्रेमी यहाँ बैठ कर नये-नये आविष्कार और सिद्धान्तों की चरचा करते। पिछली लड़ाई से ही मेरी बेलजियम के बादशाह ऐलवर्ट और रानी एलज़ाबेथ से परिचित थी। उन्होंने मेरी को निमंत्रण दिया और अपनी मित्रता से उसे सम्मानित किया।

संसार का कोई कोना ऐसा नहीं था जहाँ मेरी के नाम को लोग न जानते हों। चीन के एक प्रान्त की पुरानी राजधानी ताफू में कनफ्युशियन के मंदिर में जहाँ मानवता के कल्याण करने वाले दूसरे महापुरुष बुद्ध, न्यूटन, डेकार और चीन के महान राजाओं के चित्र......लगे थे वहाँ श्रीमती क्यूरी का भी चित्र रखा गया था।

१५ मई १९२२ को राष्ट्र संघ की काउंसिल ने श्रीमती क्यूरी स्कलोदोवोस्की का नाम अन्तर्राष्ट्रीय विद्वत् परिषद के लिये सर्व सम्मति

से चुना और मेरी ने इसे स्वीकार किया।

उसके जीवन में यह विशेष तिथि थी। जब से उसका नाम फैला सैकड़ों संस्थाओं और संघों ने अपनी सदस्यता स्वीकार करने के लिये मेरी को लिखा। उसने कभी स्वीकार नहीं किया। मेरी नहीं चाहती थी कि वह ऐसी समितियों की सदस्य हो जिसमें वास्तविक काम कर सकने का उसे समय ही न हो। वह अपने को राजनैतिक विषयों से भी पृथक रखना चाहती थी। इस संस्था में सम्मिलित होकर उसने इस नियम को भंग किया परन्तु विज्ञान के प्रति उसका बस यही एक विश्वासघात था। इस कमेटी में संसार के बड़े से बड़े लोग सदस्य थे जिनमें औरों के अतिरिक्त वर्गसां, आइंसटाइन, गिलवर्ट मरे और प्रो० लारेंट्ज़ भी थे। मेरी इसकी उप सभापति हुई और कई समितियों की सदस्य। यहाँ भी उसने विज्ञान की सेवा की। वैज्ञानिक संसार में इस समय की फैली हुई अव्यवस्था को वह दूर करना चाहती थी। वह इस प्रयत्न में थी कि वैज्ञानिकों का परस्पर सहयोग हो और प्रत्येक एक दूसरे के आविष्कार से लाभ उठा सकें। विश्वविद्यालयों तथा प्रयोगशालाओं में शिक्षा का क्या प्रकार हो इस सम्बन्ध में भी मेरी ने अच्छा काम किया।

मेरी ने एक और विरोधात्मक बात की। उसने अपने भौतिक सुख की ओर तो ध्यान नहीं दिया परन्तु वह अपने साथियों के लिये "वैज्ञानिक सम्पत्ति" की बड़ी समर्थक रही। वह वैज्ञानिकों को पुरस्कृत करने के लिये उन सब खोजों का, जो निस्वार्थ भाव से की गयी हों परन्तु व्यवसायिक दृष्टि से उपयोगी हों वैज्ञानिकों को ही अधिकार संरक्षण दिलाना चाहती थी। इसमें उसका एक विचार यह भी था कि व्यवसायिक लाभ से सहायता लेकर प्रयोगशालाओं की निर्धनता को दूर किया जाय।

केवल एक बार १६३३ में वह एक शास्त्रार्थ का सभापतित्व करने

मैड्रिड गयी। व्याख्यान का विषय था "संस्कृति का भविष्य।" व्याख्यानों में संसार की संस्कृति के ह्रास का उत्तरदायित्व विज्ञान पर भी डाला जा रहा था। मेरी ने अपनी सम्मति प्रकट की "मैं उन लोगों में हूँ जो समझते हैं कि विज्ञान में बड़ा सौन्दर्य है। एक वैज्ञानिक अपनी प्रयोगशाला में यंत्र विशेषज्ञ ही नहीं वह एक ऐसा शिशु भी है जो प्राकृतिक विभूतियों के समक्ष डाल दिया गया है और जिसका प्रभाव उस पर अप्सराओं की कहानी-सा पड़ता है। हमें यह नहीं समझना चाहिये कि सब वैज्ञानिक उन्नति का अन्त मशीन और गियरिंग्स में (gearings) ही जाकर होता है यद्यपि ऐसी मशीनों की भी अपनी एक विशेषता है। यह भी मैं विश्वास नहीं करती कि विज्ञान के कारण संसार से साहस के अन्त हो जाने की कोई सम्भावना है। यदि मैं अपने चारों ओर किसी वस्तु को सब से आवश्यक समझती हूँ तो इसी साहस की भावना की जो मुझे जिज्ञासा की भाँति अक्षय प्रतीत होती है……।"

मेरी ने ईव को लिखा (२ जुलाई १९२९)—"मैं जानती हूँ कि अन्तर्राष्ट्रीय कार्य का उत्तरदायित्व बहुत है परन्तु तब भी इसकी प्रारम्भिक दीक्षा आवश्यक है……चाहे इसमें कितनी ही अपूर्णता हो। जेनेवा के काम में एक बड़प्पन है जिसमें हम लोगों का सहयोग मिलना चाहिये।"

मेरी की दो, तीन, चार यात्रायें पोलैंड की थीं। वह वहाँ चिन्ताओं से विमुक्त होने अथवा विश्राम करने नहीं जाती थी। जब से पोलैंड स्वतंत्र हुआ मेरी के मस्तिष्क में एक बड़ी योजना चक्कर लगा रही थी। वह वारसा में रेडियम की एक संस्था बनाना चाहती थी जो वैज्ञानिक खोज तथा अन्तर विद्रधि के उपचार का केन्द्र हो। उसकी अकेले की दृढ़ता सब कठिनाइयों को दूर करने के लिये पर्याप्त नहीं थी। पोलैंड बहुत लम्बी परतन्त्रता की रुग्णावस्था

को पार करने में लगा हुआ था। अभी वह निर्धन था, धन में निर्धन, और यंत्र विशेषज्ञों में भी निर्धन। और मेरी के पास धन एकत्र करने और दूसरे सब प्रबन्ध के लिये समय नहीं था।

उसकी सब से पहली साथी ब्रोनिया थी जो आयु के भार से दबी होती हुई भी वैसी ही उत्साही थी जैसी तीस वर्ष पहले। वह इस काम में कूद पड़ी। वह स्वयं भवन निर्माण एजेंट, कोषाध्यक्ष सब बन गयी। सारा देश मेरी के चित्रमय पोस्टरों से भर दिया गया। उसमें धन या ईंटों की माँग थी। सहस्रों पोस्टकार्ड पर यह छपा हुआ था "मेरी स्कलोदोवोस्की क्यूरी संस्था के लिये एक ईंट खरीदिये।" मेरी के लिखे हुए ये शब्द भी चित्रित रहते "वारसा में एक रेडियम संस्था बनाने की मेरी उत्कट इच्छा है।" इस योजना पूर्ति में पोलैंड की महत्वपूर्ण संस्थाओं, वहाँ की सरकार, तथा सारे वारसा नगर का पूरा समर्थन प्राप्त था।

ईंटों का थोक बढ़ता ही गया......। "१६२५ में संस्था की आधार शिला रखने के लिये मेरी वारसा गयी। यह विजय यात्रा थी, भूत काल की स्मृतियाँ और भविष्य की आशायें! समस्त जनता का हृदय मेरी के साथ था। विश्वविद्यालय एकेडेमी और नगर ने अपनी अच्छी से अच्छी उपाधियाँ मेरी को दीं। एक दिन प्रातः पोलिश प्रजातंत्र के सभापति ने संस्था की पहली, मेरी ने दूसरी और वारसा के मेयर ने तीसरी ईंट रखी। इतने दिनों देश के बाहर रहने पर भी मेरी ने जिस दक्षता से अपनी भाषा में व्याख्यान दिया उसे सुन कर सब को आश्चर्य हुआ।

कुछ वर्ष बीते। ईंटों से दीवार खड़ी हो गयी और भवन बन गया। ब्रोनिया और मेरी ने अपना समय और अपनी बचत का काफ़ी हिस्सा इसमें लगाया। परन्तु अभी बहुत कुछ करना बाकी था। रेडियम के लिये अभी धन की आवश्यकता थी।

मेरी निरुत्साहित नहीं हुई। सब ओर दृष्टिपात करने पर उसकी दृष्टि यूनाइटेड स्टेटस और श्रीमती मेलानी की ही ओर गयी। वह उदार चित्त अमेरिकन स्त्री जानती थी कि मेरी की वारसा की संस्था उतनी ही प्यारी है जितनी अपनी प्रयोगशाला। उसने एक नया जादू कर दिखाया और एक ग्रेन रेडियम के लिये फिर धन एकत्र कर लिया। पोलैंड की ओर से धन्यवाद देने के लिये १६२६ में मेरी फिर न्यूयार्क पहुँची। इस बार वह अमेरिका के प्रधान श्री हूवर की अतिथि रही और उनके धवलगृह में कई दिनों तक ठहरी।

यद्यपि अमेरिका में इस समय आर्थिक संकट था परन्तु मेरी के स्वागत में कोई कमी नहीं हुई। मेरी के जन्म दिन पर अपरिचित तथा अनजान मित्रों से उसे सैकड़ों भेंट प्राप्त हुये, फूल, पुस्तकें, प्रयोगशाला के लिये चेक, और दूसरी अन्य वस्तुयें। वैज्ञानिकों ने कई यंत्र और दूसरे मूल्यवान पदार्थ भेजे। अमेरिका से लौटने के पहले मेरी लारेन्स विश्वविद्यालय में गयी जहाँ आज भी प्रवेश मार्ग पर उसकी सुन्दर मूर्ति खड़ी है।

२६ मई १६३२ को वह संयुक्त कार्य पूरा हुआ जो मेरी क्यूरी, ब्रोनिया, और पोलैंड की गवर्नमेंट ने प्रारम्भ किया था। पोलिश प्रजा-तंत्र के सभापति ने जो श्रीमती क्यूरी के सहकारी और मित्र थे, वारसा की रेडियम संस्था का उद्घाटन किया। अपनी जन्म भूमि में मेरी का यह अन्तिम आगमन था। वह वहाँ की सड़कों, गलियों को घूरती। विस्चुला नदी पर टहलने जाती। इस नदी से उसे बहुत प्रेम था। एक पत्र में ईव को उसने लिखा—"इस नदी के सम्बन्ध में मुझे एक पोलिश गान याद आता है जिसका भावार्थ है 'इस पानी में वह रहस्य है कि जो एक बार भी इसके प्रति आकर्षित हो जाय वह अन्तिम समय तक इससे प्रेम करता है'। मेरे लिये तो यह बात बिलकुल सच है।"

फ्रांस में—इस बीच फ्रांस में भी मेरी का बहुत सम्मान किया

गया और उसके कामों में सहायता दी गयी। १६२० में एक संस्था क्यूरी के नाम से बनायी गयी जिसका उद्देश्य रेडियम भवन के लिये धन एकत्र करना और उसके वैज्ञानिक तथा उपचार सम्बन्धी काम को सहायता देना था।

१६२२ में चिकित्सक परिषद के पैंतीस सदस्यों ने अपने सहयोगी सदस्यों को यह पत्र भेजा—"हम लोगों का विचार है कि रेडियम तथा क्यूरी थिरैपी द्वारा उपचार के आविष्कार के उपलक्ष में श्रीमती क्यूरी को सदस्य बना कर एकेडेमी परिषद अपने को सम्मानित करेगी।"

अपने ढङ्ग का यह एक क्रांतिकारी पत्र था। आज तक न केवल किसी स्त्री को एकेडेमी की सदस्यता प्राप्त हुई थी, अपितु किसी को भी बिना उम्मीदवार बने स्वतः निर्वाचित नहीं किया गया था। चौसठ सदस्यों ने उत्साह पूर्वक इस पर हस्ताक्षर किया और सब उम्मीदवारों ने श्रीमती क्यूरी के पक्ष में स्थान रिक्त कर दिया।

७ फरवरी १६२२ को निर्वाचन हुआ। एकेडेमी के सभापति ने ये शब्द कहे—"एक महान वैज्ञानिक, एक विशाल हृदय की महिला जो अपने काम में सदा लगन और अनासक्त भाव से लगी रही है, तथा एक देश भक्त होने के नाते जिसने युद्ध और शान्ति में अपने कर्तव्य से भी अधिक कर दिखाया है! हम लोग आपको नमस्कार करते हैं। आपका यहाँ होना हमें यह अवसर देगा कि हम आपके नाम की प्रभुता तथा आपके उदाहरण से नैतिक लाभ उठा सकें। हम लोग आपको धन्यवाद देते हैं। हम लोगों में आपका होना हमारे लिये गौरव की बात है। एकेडेमी में प्रवेश करनेवाली आप पहली महिला हैं परन्तु दूसरी कौन स्त्री आपसे अधिक योग्य हो सकती थी।"

१६२३ में 'क्यूरी स्मारक' संस्था ने रेडियम के आविष्कार की

पच्चीस वर्षीय रजत जयन्ती मनाने का निर्णय किया। फ्रांसीसी सरकार ने भी इस प्रस्ताव से सहयोग किया और सर्व-सम्मति से पार्लामेंट में एक कानून द्वारा श्रीमती क्यूरी को पचास हजार फ्रैंक वार्षिक पेंशन देने का निश्चय हुआ जिसकी उत्तराधिकारिणी आइरीन और ईव भी होंगी।

२६ दिसम्बर को रजत जयन्ती का उत्सव हुआ। विश्वविद्यालय भीड़ से खचाखच भरा हुआ था। फ्रांस तथा अन्य देशों के विश्व-विद्यालयों, वैज्ञानिक समितियों, सैनिक और साधारण अधिकारियों, पार्लामेंट, बड़े स्कूलों, विद्यार्थी संघों और पत्रों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। मंच पर प्रजातंत्र के सभापति, शिक्षा मंत्री, एकेडेमी के प्रधान, प्रो० लोवेंट्री और दूसरे वैज्ञानिक बैठे हुये थे।

विशेष व्यक्तियों में सफेद बाल तथा गम्भीर मुद्रा के एक पुरुष तथा दो अधिक आयु की महिलायें बैठी थीं जो अपनी आँखों से आँसू पोंछती जाती थीं। ये मेरी के भाई जोज़ेफ और उसकी दो बड़ी बहनें ब्रोनिया और हेला थीं, जो मेरी के विजयोत्सव में सम्मिलित होने के लिये वारसा से आयी थीं। अपने में सब से छोटे को यह पद और प्रसिद्धि प्राप्त हुई थी इससे उनके प्रेम में तनिक भी अन्तर नहीं पड़ा था। गर्व तथा भावों से भरे हुये इतने प्रफुल्ल चेहरे शायद ही कभी देखने को मिले होंगे।

मेरी का वह पुराना लेख पढ़ कर सुनाया गया जिसमें रेडियम के आविष्कार की सूचना दी गयी थी, और आइरीन के साथ एक वैज्ञानिक ने रेडियम का बहुत-सा प्रयोग भी दिखलाया। इसके पश्चात् प्रजातंत्र के सभापति ने मेरी क्यूरी के लिये राष्ट्रीय पेंशन की सूचना देते हुये कहा—"हम सब के सम्मान, कृतज्ञता और प्रेम का यह साधारण परन्तु सच्चा प्रमाण है।" शिक्षा मंत्री ने कहा—"इस कानून के प्रस्ताव और स्वीकृति में, जिस पर फ्रांस के सब प्रति-

निधियों के हस्ताक्षर हैं, गवर्नमेंट और दोनों सभाओं को निश्चय करना पड़ा कि वे क्यूरी की अनासक्ति और सङ्कोच का कोई कानूनी अस्तित्व स्वीकार ही नहीं करेंगे।" अन्त में हर्ष ध्वनि और नारों के बीच मेरी खड़ी हुई। उसने सब को धन्यवाद देते हुये कहा, एक व्यक्ति को हमें नहीं भूलना चाहिये—मेरी ने पियरी क्यूरी की याद दिलायी जो अब नहीं हैं। फिर उसने भविष्य के सम्बन्ध में कुछ बातें कहीं, अपने भविष्य की नहीं, रेडियम संस्था के भविष्य की, जिसके निमित्त उसने अनुरोध पूर्वक सहायता और समर्थन की मांग की।

मेरी की जीवन संध्या में हम उसे जन समूह की आराधना का कृपापात्र तथा सभापतियों, राजदूतों और राजाओं द्वारा चारों ओर सम्मानित और सत्कारित होते देखते हैं। परन्तु ईव लिखती है—"इन प्रशंसात्मक उत्सवों में अपनी माता की अन्यमनस्क और वर्णहीन मुखाकृति आज भी मेरी आँखों के सामने है। बहुत पहले उसने कहा था 'विज्ञान में हमें व्यक्तियों से नहीं पदार्थों से अभिरुचि होनी चाहिये'। परन्तु उसने इतने वर्षों में देखा कि जनता और सरकार तक का पदार्थों के लिये आकर्षण व्यक्तियों के ही द्वारा होता है। चाहे मेरी चाहती रही हो या नहीं उसने अपनी प्रतिष्ठा से विज्ञान को समृद्ध और अधिक सम्मानित बनाया। और इस उद्देश्य के लिये जो उसे प्यारा था, उसने अपनी रहस्यमय कथाओं को भी प्रचार का साधन बनने दिया।

परन्तु अभी तक उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। भीड़ का भय और मिथ्याभिमान से उसकी घृणा पूर्ववत ही थी। अब तक भी भीड़ में उसके हाथ ठिठुरने लगते और गला सूखने लगता।

जर्मनी से उसने ईव को एक पत्र में लिखा था—"मैं तुम दोनों से बहुत दूर हूँ, लोगों के प्रदर्शन का शिकार हूँ। इसे न मैं पसन्द करती

हूँ और न मुझे यह ठीक ही जान पड़ता है क्योंकि इससे मैं थक जाती हूँ—इसलिये आज सवेरे मैं दुखी-सी हूँ।

"बर्लिन में एक घूंसा लड़ने वाला उसी गाड़ी से उतरा जिससे मैं उतर रही थी। लोग उसका भी कोलाहल पूर्वक स्वागत कर रहे थे। वह पूर्ण सन्तुष्ट दिखाई पड़ता था। आखिरकार उसके और मेरे स्वागत में क्या कोई विशेष अन्तर है? मुझे मालूम होता है कि इस प्रकार के प्रशंसात्मक प्रदर्शनों में स्वयं कोई वांछनीय बात नहीं है, चाहे वह प्रदर्शन जिसके लिये भी हो। मैं नहीं समझ पाती कि किसी व्यक्ति को किस प्रकार आचरण, तथा व्यक्ति का उसके विचारों से एकात्म..., जिनका वह प्रतिनिधित्व करता है, किस सीमा तक करना चाहिये......।"

पच्चीस वर्ष पूर्व जो आविष्कार हुआ था उसका गुणगान अब मेरी को कैसे सन्तुष्ट कर सकता था जब कि उसके हृदय में अब भी विद्यार्थियों की भावना जागृत थी। "जब वे मेरे असाधारण काम की बात करते हैं तो मुझे प्रतीत होता है जैसे मैं मर चुकी हूँ—अपने को मृतक रूप में देख रही हूँ," किसी-किसी समय मेरी इस तरह गुनगुनाती और फिर कहती "ऐसा जान पड़ता है कि जो सेवायें मैं अब करूंगी उसका उनकी दृष्टि में कोई महत्व नहीं है और मेरी मृत्यु पर ही वे निश्चिन्त होकर मेरी प्रशंसा कर सकेंगे।"

भीड़ के प्रति असन्तोष, अरुचि तथा उससे दूर भागने के ही कारण मेरी शायद जन समूह पर असाधारण प्रभाव रखती थी। राजनीतिज्ञ और नाटककार आदि ज्योंही मंच पर आते हैं अपने प्रशंसकों के रंगरूप में मिल जाते हैं परन्तु मेरी उत्सवों आदि से चुपके से खिसक जाया करती थी। प्रशंसापूर्ण कोलाहलों में शायद कोई इतना अकेला और असहाय नहीं दिखाई पड़ता था जितनी मेरी।

२६. अपने घर में—

जब मेरी कहीं यात्रा से लौटती तो आइरीन या ईव में से कोई एक मेरी को स्टेशन पर लेने जाता। एक हाथ में कागजों से फूला हुआ एक थैला मज़बूती से पकड़े और दूसरे में फूलों का गुच्छा लिये हुये, चाहे वह सूखा ही क्यों न रहा हो—क्योंकि उससे वह फेंकते नहीं बनता था—मेरी स्टेशन पर दिखाई पड़ती। घर पहुँच कर थकी हुई होने पर भी वह अपनी डाक देखने लगती और ईव उसके थैले की वस्तुयें निकाल कर रखने लगती। उसमें से डाक्टर की नयी उपाधियों की मखमल और रेशम के चिह्न, चमड़े के डिब्बे में पदक, और बड़े-बड़े नेवतों के भोज्य पदार्थों की सूची निकलती। इन्हें मेरी बहुत संभाल कर रखती क्योंकि वे अच्छे कार्ड बोर्ड के बने रहते और उन पर गणित के प्रश्न करने और लिखने आदि में सुविधा होती। इसके अतिरिक्त आइरीन और ईव के लिये भी खरीदी हुई कुछ वस्तुयें होतीं।

मेरी अपने इस घर में पिछले बाईस वर्ष से रह रही थी। घर बड़ा और कमरे भी बड़े थे। उनके लिये शानदार आराम कुर्सियों और सोफा आदि की आवश्यकता थी। परन्तु पियरी क्यूरी के पिता से जो कुर्सियाँ आदि प्राप्त हुई थीं वही बैठने वाले विशाल कमरे में इधर-उधर रखी रहतीं। कुर्सियाँ इनमें पचास आ जातीं, परन्तु वे संख्या में मुश्किल से चार थीं। न तो कालीन और न परदे। खिड़कियों पर जिनकी झंझरियाँ सदा खुली रहतीं कोई जाली आदि नहीं लगी हुई थीं। मेरी को कालीन और कपड़ों की सजावट आदि से घृणा थी। वह साफ सुथरी चमकती हुई भूमि और शीशे की नंगी खिड़कियाँ पसन्द करती जिससे सूर्य की एक किरण भी न रुक सके।

निर्धनता के कारण वर्षों तक वह अपने लिये कोई सुन्दर घर नहीं बना सकी और अब उसे इसकी इच्छा भी नहीं रह गयी थी। वर्तमान मकान की सादगी में भी वह कोई परिवर्तन नहीं करना चाहती थी। और न उसे अपने सरल जीवन में किसी प्रकार का परिवर्तन करने के लिये समय ही था। तब भी उसके पास विभिन्न प्रकार की भेंट आया करती। कभी चांदी के गुलदस्ते, कभी कालीन और कभी तरह-तरह के चित्र तथा दूसरी वस्तुयें। इनसे कमरे का स्वरूप सुन्दर हो जाता। मेरी ने केवल एक चीज अपने घर में वढ़ाई और वह था ईव के लिये एक बड़ा पियानो जिस पर ईव घंटों अभ्यास करती। उससे काम में जो बाधा होती उसके लिये मेरी कभी एक शब्द उलाहने के रूप में न कहती।

अपनी माता की अनासक्ति आइरीन ने भी ग्रहण की थी। जब तक विवाह नहीं हुआ वह अपने ठंडे कमरे से ही सर्वथा सन्तुष्ट रही। हाँ, ईव अपने लिये एक बड़े कमरे को सजाने का यत्न करती और अपने सामर्थ्यवश उसके लिये नयी-नयी वस्तुयें भी खरीदती रहती। मेरी के काम करने का कमरा ही एक ऐसा कमरा था जो जीवित प्रतीत होता। यद्यपि उसकी भी पूंजी थी पियरी क्यूरी का चित्र, शीशे से ढके हुये खानों में विज्ञान की पुस्तकें, और कुर्सी मेज़।

सवेरे मेरी सब से पहले उठ जाती और तुरन्त ही प्रयोगशाला जाने की तैयारी करने लगती। पौने नौ बजे मोटर घर पर पहुँच जाती और उसकी तीन आवाज़ में मेरी अपना कोट और टोपी लिये सीढ़ी से नीचे दौड़ती। सरकारी पेंशन आदि ने उसकी आर्थिक चिन्तायें दूर कर दी थीं यद्यपि दूसरों के विचार में उसकी आय अब भी बहुत कम थी। परन्तु मेरी अपने सुख के लिये इसे पर्याप्त समझती थी। और इस आय में से भी मेरी स्वयं अपने लिये बहुत कम लाभ उठाती थी। वह यह चाहती ही नहीं थी कि कोई मज़दूरिन उसकी प्रतीक्षा में

खड़ी रहे। यदि वह अपने ड्राइवर को थोड़ी देर से अधिक रोकती तो अपने को दोषी अनुभव करती। और जब कभी वह किसी दूकान में जाती उसका हाथ बिना दाम पूछे सब से सस्ते कपड़े और टोपियों आदि पर पहुँच जाता, क्योंकि इनमें ही उसे सन्तोष था।

वह पौदों, पत्थरों और गाँव में घर बनाने के लिये रुपया खर्च करने में प्रसन्न होती थी। उसने ऐसे दो घर बनवाये थे। और अधिक बूढ़ी होने पर उसने एक तीसरा घर मेडिटरेनियन के किनारे लिया। वहाँ खुले में सोना, समुद्र का दृश्य देखना, तरह-तरह के पेड़, फूल, और पौदे लगाना, तथा तैरना यह उसके सुख के नये साधन थे। दो महिलायें जो मेरी की मित्र और पड़ोसी थीं उसके पानी की कलाओं की प्रशंसा करती परन्तु वे मेरी के लिये डरती भी रहतीं। मेरी ने अपने पत्र में लिखा—"स्नान में बड़ा आनन्द है, परन्तु उसके लिये कुछ दूर जाना पड़ता है। आज मैं चट्टानों के बीच नहाई······। तीन दिन से समुद्र शान्त था और मैं देखती हूँ कि मैं दूर तक और देर तक तैर सकती हूँ। शान्त समुद्र में तीन सौ मीटर की दूरी तक मुझे तनिक भी भय नहीं लगता और निस्सन्देह मैं इससे अधिक दूर जा सकती हूँ।"

मेरी की सदा यह अभिलाषा रही कि वह शरद ऋतु में पेरिस में न रह कर शौ में ही जाकर रहा करे। उसने वहाँ भूमि खरीद ली और घर बनाने का विचार करने लगी परन्तु बात टलती ही गयी। वर्षों बीत गये और मेरी प्रतिदिन प्रयोगशाला से अपने पुराने मकान में ही आती हुई दिखाई पड़ती। आइरीन अब प्रयोगशाला में मेरी की सहायक हो गयी थी। भोजन के समय उन दोनों की विज्ञान या गणित सम्बन्धी बातें ईव बिलकुल समझ नहीं सकती थी। १९२६ में एक दिन आइरीन ने फ्रेडरिक जोलियट से अपने विवाह के निश्चय की बात बतायी। जोलियट रेडियम संस्था का सब से चतुर और उत्साही विद्यार्थी था। कुटुम्ब में शीघ्र ही एक नया आदमी आ

गया। कुछ दिन तक तो पति पत्नी मेरी के ही साथ रहे, बाद में उन्होंने अलग घर ले लिया। पुत्री के सुख में मेरी अपना भी सुख मानती परन्तु अपने सहकारी आइरीन के साथ हर समय न रह सकने के क्षोभ को छिपाने का उसका प्रयास व्यर्थ था। जब मेरी को फ्रेडरिक के समीप आने का अवसर मिला तो अपने जामाता के गुणों को वह अधिक जान सकी। वह एक सुन्दर, अधिक बात करने वाला, जीवित और जागृत नवयुवक था। उसे देख कर मेरी कहती सब कुछ अच्छे ही के लिये हुआ। अब उसकी चिन्ता में हिस्सा बटाने और विज्ञान सम्बन्धी विषयों पर विचार विनिमय करने तथा अनुसन्धान में परामर्श देने वाले एक से दो सहायक हो गये। सप्ताह में चार बार पति पत्नी दिन के समय मेरी के यहां भोजन करने अवश्य आते। ईव देखती कि वे तीनों विज्ञान सम्बन्धी बातों में शीघ्र ही व्यस्त हो जाते।

दिन के भोजन के पश्चात् मेरी प्रयोगशाला के लिये फिर तैयार हो जाती। एक दिन वहाँ जाने से पहले उसे औषधि-विज्ञान परिषद की बैठक में जाना था। मोटर की आवाज सुनते ही अपनी वाटिका से मेरी ने फूलों के पौदे उठा कर अपने साथ मोटर में रख लिये। प्रयोगशाला की वाटिका में उसे इन्हें लगाना था। ढाई बजे ठीक मेरी लेक्ज़मवर्ग वाटिका में पहुँच गयी। सैकड़ों बच्चे बाग़ में खेल रहे थे। उनमें से एक बच्चा मेरी को देख कर अपने छोटे पैरों से फुदकता हुआ तीव्र गति से मेरी की ओर दौड़ा। यह आइरीन का बच्चा था। लगभग बीस मिनट तक मेरी उसके साथ खेलती रही। ठीक तीन बजे एकेडेमी की बैठक में उसे पहुँचना था। तीन बजने में जब दस मिनट रह गये मेरी चलने लगी। बच्चे ने पूछा "मी, तुम कहां जाती हो? मेरे साथ तुम यहां ठहरती क्यों नहीं?" मेरी उसकी बातें सुन कर मुग्ध होती। मेरी को जब अवसर मिलता वह उससे थोड़ी देर खेल लिया करती थी।

रात को मेरी देर में ७॥ या ८ बजे तक प्रयोगशाला से चलती और घर पर बहुत थकी हुई आती। पैंसठ वर्ष की उस महिला से यह कहना व्यर्थ था कि उसे बारह या चौदह घंटा प्रतिदिन काम नहीं करना चाहिये। ईव जानती थी कि वह उसे काम करने से रोक नहीं सकती। अतएव उसकी यही हार्दिक अभिलाषा रहती कि उसकी माता में बहुत समय तक इतनी काम करने की शक्ति बनी रहे।

भोजन के समय मेरी अपने विद्यार्थियों का प्रायः स्मरण करती। एक दिन उसने कहा "मैं अपने उस नवयुवक......विद्यार्थी से बहुत प्रसन्न हूँ। वह बड़ा गुण सम्पन्न है।" उसने कहा "आज मैं अपने एक चीनी विद्यार्थी से मिलने गयी। मैं उससे अंग्रेजी में ही बात करती हूँ और वह भी बराबर अंग्रेज़ी में बात करता है चीन में किसी की बात का खण्डन करना नम्रता के विरुद्ध समझा जाता है। यदि मैं कोई ऐसा विषय उसके समक्ष रखती हूँ जिसे वह अपने प्रयोग द्वारा अशुद्ध सिद्ध कर चुका है तब भी वह नम्रता पूर्वक मेरा मत स्वीकार करता जाता है। मुझे अनुमान लगाना पड़ता है कि उसे कब आपत्ति करनी है। सुदूर पूर्व से आये हुये इन विद्यार्थियों के सद्व्यवहार के समक्ष मैं अपने साधारण व्यवहार से लज्जित होती हूँ। वह हम लोगों से कितने अधिक सभ्य हैं।" "हां, ईव किसी दिन हम लोगों को पोलैंड के विद्यार्थी को भोजन के लिये बुलाना चाहिये। मुझे भय है वह पेरिस में खो-सा गया होगा।"

अनेक राष्ट्रों के विद्यार्थी रेडियम संस्था में शिक्षा के लिये आते। उनमें एक पोलिश विद्यार्थी अवश्य रहता। यदि मेरी विश्वविद्यालय की छात्रवृत्ति न्यायपूर्वक उसे न दे सकती तो वह उसका सब व्यय स्वयं वहन करती। इसका ज्ञान उस नवयुवक को भी न होता।

प्रयोगशाला के व्यस्त जीवन से जब मेरी को अवकाश मिलता तो वह ईव से कुछ सुनाने और संसार का समाचार बताने को कहती।

उसे छोटी-छोटी बातों में भी रस आता। ईव यदि अपनी मोटर की पैंतालीस मील प्रति घंटा की तेज़ी के सम्बन्ध में भी बात करती तो वह चाव से सुनती। आइरीन के बच्चे की कहानी या उसकी कही हुई बात सुन कर तो हँसते हँसते उसकी आंखों में आंसू आ जाते।

राजनैनिक विषयों पर भी यह विना कटुता के बात कर सकती थी। यदि कोई फ्रांसीसी उसके समक्ष अधिनायकवाद की प्रशंसा करता तो वह नम्रतापूर्वक कहती "मैं अत्याचार की छत्रछाया में रह चुकी हूँ। तुम नहीं रहे हो। इसे तुम समझ नहीं सकते कि यह तुम्हारा कितना बड़ा सौभाग्य है कि तुम एक स्वतंत्र देश में रह रहे हो।" जो हिंसात्मक क्रान्ति के पक्षपाती थे उनकी बातों का भी वह विरोध करती, "तुम मुझे इसका विश्वास नहीं दिला सकते कि लैवेशा को फांसी चढ़ाना लाभदायक था।" परन्तु फ्रांस में अस्पतालों और स्कूलों की कमी हो, सहस्रों नर नारी अस्वस्थ मकानों में रहें, और स्त्रियों के अधिकार कम हों, ये विचार मेरी को सताते थे।

मेरी अभिमान की उस मात्रा से भी अपने को बचाती जो उसके लिये क्षम्य हो सकता था। यदि दूसरी स्त्रियों के सामने कोई उसका उदाहरण रखता तो वह कहती "यह आवश्यक नहीं है कि मेरी तरह अस्वाभाविक जीवन व्यतीत किया जाय मैंने विज्ञान को बहुत अधिक समय दिया है क्योंकि मैं देना चाहती थी, और खोज से मुझे प्रेम था......। मैं तो यही चाहती हूँ कि स्त्रियां तथा नवयुवतियां सादा कौटुम्बिक जीवन व्यतीत करें और किसी ऐसे काम में लगें जिनमें उनकी रुचि हो।"

सायंकाल के भोजन पर शान्त वातावरण में मेरी और ईव कभी-कभी प्रेम पर बातें करतीं। अपने कटु अनुभव से मेरी के हृदय में प्रेम के लिये कोई विशेष आदर नहीं था। एकबार उसने ईव को लिखा—"मेरा विचार है कि किसी महान आदर्श से हमें वह

आध्यात्मिक शक्ति ग्रहण करने का यत्न करना चाहिये जो हम लोगों में मिथ्याभिमान उत्पन्न किये बिना हमारी आकांक्षाओं और स्वप्नों को उच्च बनाये रखने के लिये हमें बाध्य करें। और मैं तो समझती हूँ कि जीवन का अस्तित्व ऐसी झंझामयी भावना पर अवलम्बित रखना जैसे प्रेम निराशा को निमन्त्रित करना है।"

मेरी दूसरों की विश्वासपात्र बनना जानती थी और जब कोई अपनी निज की बात उससे बताता तो वह इस कोमलता से उसे गुप्त रखती जैसे कभी उसने उसको सुना ही न हो। उसका जब कोई अपना विपत्ति में पड़ता तो वह उसकी तुरन्त सहायता करती। परन्तु प्रेम सम्बन्धी वार्तालाप में उससे आदान-प्रदान सम्भव नहीं था। प्रेम विषयक उसके अध्यात्म और कल्पना में व्यक्तियों के लिये कभी कोई स्थान न रहता।

मेरी अब वृद्ध हो रही थी। घर तथा भाई, और दोनों बहनों से जितके स्नेहपाश से मेरी बँधी हुयी थी। पिछले वर्षों में उनसे बराबर पूछकर जन्मभूमि का मोह और घर जाने की तीव्र लालसा वह अपनी पुत्रियों से अप्रकट नहीं रख सकती थी। सम्बन्धियों से दूर और फिर वैधव्य के कारण वह कौटुम्बिक जीवन के सुख से, जो उसके लिये बहुत मधुर था, वंचित रही। वह अपने मित्रों तथा भाई और बहनों को शोकपूर्ण पत्र लिखती। ब्रोनिया के लिये उसे विशेष दुख था क्योंकि उसके दो बच्चे और १९३० में उसके पति का देहान्त हो गया था।

मेरी का ब्रोनिया को पत्र (१२ अप्रैल १९३५)—"प्यारी ब्रोनिया, मैं भी दुःखी हूँ कि हम दोनों पृथक हो गये हैं। यद्यपि तुम भी अपने को अकेली अनुभव करती हो परन्तु तुम्हें एक सन्तोष तो है, वारसा में तुम तीन हो, तुम्हें एक दूसरे का सहारा और साथ मिल जाता है। विश्वास करो केवल कौटुम्बिक प्रेम और मेल ही एक सुन्दर वस्तु है। जानती हो मैं इससे वंचित कर दी गयी हूँ। इसे

ही देख कर तुम कुछ धैर्य रखो। अपनी पेरिस की बहन को न भूल जाना………।"

यदि ईव को भोजनोपरान्त कहीं बाहर जाना होता तो मेरी उसके कमरे में चली जाती और उसे कपड़ा पहनते देखती। स्त्रियों के भेष-भूषा के सम्बन्ध में दोनों के विचार मूलतः भिन्न थे। परन्तु अपने मत को उस पर लादने का विचार बहुत पहले ही मेरी ने छोड़ दिया था। दोनों का तर्क-वितर्क केवल तर्कों तक ही सीमित रहता, और मेरी निराश होकर या कभी हंसी में ईव से अपनी सम्मति स्पष्ट प्रकट कर देती।

"अरे मेरी प्यारी बेटी, क्या भयानक एड़ियां हैं! यह तो मुझे समझाने का प्रयत्न नहीं करोगी कि स्त्रियों को Stilts पर चलने के लिये बनाया गया था……और यह किस तरह का नया फैशन है कि जिसमें कपड़ा पीठ पर कटा हुआ है? सामने तक तो सह्य था परन्तु यह मीलों लम्बी नंगी पीठ! पहले तो यह असभ्य है, दूसरे इसमें प्लूरेसी (फुफ्फुसावरण प्रदाह) होने का सन्देह है, तीसरे यह भद्दा है। तीसरी दलील का तुम पर असर होना चाहिये यदि और दो का नहीं।……ये दोष न रहें तो तुम्हारा पहनावा सुन्दर है। परन्तु तुम काला कपड़ा बहुत अधिक पहनती हो। काला कपड़ा तुम्हारी आयु के उपयुक्त नहीं है।"

ईव जब अपने विचार से सजकर तैयार हो जाती तब मेरी उससे कहती "ज़रा इधर घूम जाओ ताकि मैं तुम्हारी प्रशंसा कर सकूं।" मेरी उसे अच्छी तरह वैज्ञानिक दृष्टि से देखती और फिर कुछ व्याकुलता से कहती "सिद्धान्त की दृष्टि से तो मुझे इस रंगने या पाउडर आदि लगाने में आपत्ति नहीं है। मैं जानती हूँ यह सदा किया गया है। प्राचीन इजिप्ट में स्त्रियों ने इससे भी खराब चीज़ें ढूढ़ निकाली थीं……मैं केवल एक बात कह सकती हूँ—मेरी दृष्टि में

यह भयानक है। तुम अपनी मां को सताती हो, अपने ओठों को व्यर्थ रंगती हो।"

ईव कहती "परन्तु मां, मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ, इस तरह यह बहुत अच्छा है!"

"अच्छा है! तो लो सुनो, इनके पूर्व कि तुम इन भयानक पदार्थों को अपने मुँह पर लगावो, अपने को सन्तोष देने के लिये मैं कल प्रातः जब तुम चारपाई पर ही रहोगी तुम्हें प्यार करने आऊँगी। मैं तुम्हें पसन्द करती हूँ जब तुम बनी हुई नहीं रहतीं...अच्छा मेरी प्यारी बच्ची अब तुम भाग जाओ। नमस्कार......हां क्या तुम्हारे पास कुछ नहीं है जो मुझे पढ़ने के लिये दे सको?" "हां, हां, आप क्या पसन्द करेंगी?" "मैं नहीं जानती......कुछ ऐसी चीज जो मुझे दुखी न करें। इन सब कष्टदायक और दुखी करने वाले उपन्यासों को सहन करने के लिये तुम्हारी तरह युवती होने की आवश्यकता है।" मेरी ने रूसी उपन्यास दुबारा कभी नहीं पढ़े। दोस्तोंवेस्की भी नहीं, जिसकी वह किसी समय बहुत प्रेमी थी। साहित्यिक रुचियों में अन्तर होते हुये भी कुछ लेखक मेरी और ईव दोनों को समान प्रिय थे। किपलिंग, कोलेट......आदि। मेरी क्यूरी 'जंगल बुक' 'नैसां दिफ़ूर' 'सीदों' या 'किम' आदि पुस्तकों के पढ़ने से कभी नहीं ऊबती थी क्योंकि उनमें प्रकृति की जीवित तथा अनुपम झलक रहती जो उसे सर्वदा सुखदायक प्रतीत होती उसे सहस्रों कवितायें फ्रेंच, जर्मन, रूसी, अंग्रेज़ी और पोलिश की याद थीं।......

ईव जो पुस्तक देती उसे पढ़ने में मेरी लग जाती परन्तु आध घंटे या एक घंटे बाद उठाकर रख देती। और पेंसिल, कापी और विज्ञान सम्बन्धी पुस्तक लेकर काम करना शुरू कर देती। अपने स्वभावानुसार दो-तीन बजे सबेरे तक वह काम करती रहती। जब

ईव वापस आती तो अपनी माता के कमरे में रोशनी जलती हुई देखती। रूलर आदि पड़ा हुआ और कागजों से घिरी हुई श्रीमती क्यूरी भूमि पर बैठी रहती। दूसरे विद्वानों की तरह मेज़ और कुर्सी पर बैठने का अभ्यास उसे कभी नहीं हुआ। उसे अपना कागज आदि फैलाने के लिये बहुत अधिक स्थान की आवश्यकता रहती। वह अपने काम में ऐसी मग्न रहती कि ईव की वापसी का पता हो जाने पर भी वह अपना सिर न उठाती। भौं चढ़ी हुई, चेहरा व्यस्त दिखाई पड़ता और वह कुछ गुन-गुन करती हुई सुनाई पड़ती। साठ वर्ष पहले गणित की कक्षा में जिस तरह मेनिया गिनती गिनती थी उसी तरह आज भी विश्वविद्यालय की प्रोफेसर श्रीमती क्यूरी पोलिश में गिनती गिनती हुई सुनायी पड़ती।

२७. प्रयोगशाला—

प्रयोगशाला में प्रतिदिन दस बारह विद्यार्थी मेरी से प्रश्न करते और परामर्श लेते दिखाई पड़ते। चालीस वर्ष के परिश्रम से मेरी ने बहुत अधिक ज्ञान संचय कर लिया था। रेडियम की वह जीवित पुस्तकालय हो गयी थी। अपनी संस्था में किये गये सब अनुसन्धानों पर जितनी पुस्तकें या रचनायें लिखी गयीं थीं उन सब को उसने पाँचों भाषा में, जिनमें वह दक्ष थी, पढ़ डाला था। अपने विद्यार्थियों को पढ़ाने या सिखाने का ढंग भी उसका बहुत अच्छा था। एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रायः कहा करते "श्रीमती क्यूरी न केवल एक प्रसिद्ध भौतिक विज्ञानवादी हैं, मेरी जान में तो प्रयोगशाला संचालकों में वह सर्वश्रेष्ठ हैं।"

प्रयोगशाला को पूर्ण बनाने और खोज के लिये आवश्यक साधन

एकत्र करने में वह सदा लगी रहती। प्रत्येक वर्ष प्रयोगशाला की उन्नति होती जा रही थी। समय-समय पर वह मन्त्रियों से मिलती और सहायता तथा छात्रवृत्ति आदि के सम्बन्ध में कहती रहती। अब मेरी बहुत बड़ी हो गयी थी इसलिये उस समय के अधिकारी भी उसकी बात सुनते और मानते। १६३० में उसे पांच लाख फ्रेंक कर्ज़ के रूप में खोज के काम के लिये मिला। भिक्षाटन करते-करते वह थक कर कभी-कभी ईव से कहती "मैं समझती हूँ ये हमें अन्त में भिक्षुक ही बना कर छोड़ेंगे।"

क्यूरी प्रयोगशाला के विद्यार्थी मेरी के पथ-प्रदर्शन में रश्मि-शक्तित्व पर नयी-नयी खोज करते रहते। १६१६ से १६३४ तक में ४८३ रचनायें जिनमें ३४ थीसिस थीं रेडियम संस्था द्वारा प्रकाशित हुईं। ४८३ में से ३१ श्रीमती क्यूरी ने लिखी थीं। अपने जीवन के अन्तिम भाग में मेरी अधिकतर अध्यापिका और संचालिका का ही कर्तव्य निभाती रही परन्तु यह किसे मालूम है कि प्रत्येक लेख और प्रकाशन में जिनमें वह पदे पदे परामर्श देती रहती उसका कितना हाथ था। मेरी के साथ और उसकी सहायता से प्रयोगशाला के समूह को जो सफलता मिलती उस पर मेरी को बड़ा गर्व होता। उसने विद्यार्थियों तथा प्रयोगशाला में अपने को तल्लीन कर दिया था। परन्तु "प्रयोगशाला" तक को वह कभी "मेरी" प्रयोगशाला न कहती।

मेरी की सहृदयता और सद्भावनाओं से विद्यार्थी उसकी ओर आकर्षित होते और उन्हें अपने जीवन में उससे सद्-व्यवहार और सच्चरित्रता की शिक्षा तथा प्रेरणा मिलती। उनमें से प्रत्येक मेरी का बड़ा ध्यान रखता। जब वह किसी वैज्ञानिक विषय पर देर तक तर्क करती रह जाती तो उनमें कोई जाकर कहता, बहुत बिलम्ब हो रहा है, अन्दर चली चलिये नहीं तो सर्दी लग जायगी। कभी जब वह भोजन करना भूल जाती तो उनमें से कोई

उसके पास भोजन लाकर रख देता। प्रयोगशाला के चपरासी और दूसरे साधारण काम करने वाले भी मेरी से प्रेम करते थे। संस्था का एक आदमी मिस्त्री, माली और मोटर ड्राइवर तीनों का काम करता था। मेरी ने जिस दिन अपना एक अलग ड्राइवर रखा वह रोने लगा। उसे इसका दुख था कि वह अब मेरी को घर से प्रयोगशाला ले आ और ले जा न सकेगा।

वह उन सब से जो उसके साथ काम करते थे बहुत प्रेम करती थी परन्तु उसे कभी प्रगट न करती। अगस्त १६३२ में जब उसके एक प्रिय शिष्य की मृत्यु हुई तो मेरी ने लिखा था—"जब मैं पेरिस पहुँची मुझे बहुत दुख हुआ। वह नवयुवक......जिससे मैं इतना स्नेह करती थी नदी में डूब गया। मुझ पर उसका बहुत असर है। उसकी माता ने मुझे लिखा है कि उसने जीवन के सब से अच्छे वष प्रयोगशाला में ही व्यतीत किये। उसका लाभ क्या हुआ यदि अन्त इसी तरह होना था। ऐसा अच्छा नवयुवक, विनम्र, सुन्दर और बुद्धि का इतना प्रखर—यह सब समाप्त हो गया केवल एक शीतल स्नान के लिये...... ।"

जब कोई विद्यार्थी थीसिस लिख कर उत्तीर्ण हो जाता तो चाय की दावत होती। प्रयोगशाला के गिलास प्याले का और छड़ चम्मच का काम देते। सब में बड़ा उत्साह रहता और अन्त में मेरी बधाई देने के लिये खड़ी होती। वह उसकी खोज की नवीनता की प्रशंसा करती और इस पर प्रकाश डालती कि उसने अपनी कठिनाइयों को किस प्रकार हल किया। यदि वह किसी दूसरे देश का होता तो मेरी इन शब्दों से अपना व्याख्यान समाप्त करती जब तुम अपने सुन्दर देश में जिसे मैं जानती हूँ और जहां तुम्हारे देशवासियों ने बहुत प्रेम पूर्वक मेरा स्वागत किया था, वापस जाओगे तुम्हें इस संस्था की "मुझे आशा है सुखद स्मृति बनी रहेगी। तुमने देखा ही है कि हम

लोग यहां परिश्रम से और अपने पूर्ण सामर्थ्य भर काम करते हैं।"

इसी तरह की चाय की दावतें आइरीन तथा उसके पति की डाक्टर की थीसिस लिखने पर भी हुयीं। भौतिक-विज्ञान-परिषद में जब इन दोनों ने अपनी खोज का वर्णन दिया तो मेरी भी दर्शकों में थी। वह गर्व से और ध्यान पूर्वक सब सुन रही थी और सभा समाप्त होने पर उसने अपने एक सहायक से कहा, "दोनों ने बहुत अच्छा भाषण दिया। क्यों दिया न ?......।" वह बड़े उमंग में थी और घर लौटते हुये बहुत देर तक उस जोड़ी की सफलता की बराबर चरचा करती रही।

प्रयोगशाला के बाग़ की दूसरी ओर रेडियम द्वारा अन्तर विद्रधि के उपचार का प्रबन्ध था। प्रोफेसर रीगा उसके प्रधान थे। १९१९ से १९३५ तक में ८३१९ रोगियों की यहां दवा की गयी। प्रो० रीगा प्रयोगशाला की बड़ी लगन से सेवा करते। रोगियों की संख्या जितनी बढ़ती उतनी ही उनको रेडियम की आवश्यकता होती। उन्होंने गवर्नमेंट और नगरवासियों से सहायता की अपील की। मुख्य सहायकों के अतिरिक्त एक सज्जन ने जिन्होंने अपना नाम सर्वथा गुप्त रखा चौंतीस लाख एक 'क्यूरी स्मारक' के लिये दिया।

इस प्रकार धीरे-धीरे रश्मि-निदान का फ्रांस में वह सब से बड़ा वैज्ञानिक केन्द्र बन गया और उसकी बहुत प्रतिष्ठा हो गयी। पांचों महाद्वीपों से दो सौ डाक्टर वहां शिक्षा लेने आये। श्रीमती क्यूरी इस विभाग के कार्य में कोई भाग नहीं लेती थी परन्तु इसकी उन्नति बड़े चाव से देखती। प्रो० रीगा उसे बहुत अच्छे सहयोगी मिल गये थे। वह एक परम बुद्धिमान तथा निस्पृह व्यक्ति थे। मेरी की तरह उन्हें भी प्रसिद्धि और कोलाहल से घृणा थी और उन्होंने भी आर्थिक लाभ का विचार छोड़ दिया था। यदि वह डाक्टरी करते तो बड़ी सम्पत्ति खड़ी कर सकते थे परन्तु इस

श्रोर उनका ध्यान गया ही नहीं।

जब पत्रों का ढेर सामने लाकर रख दिया जाता तो मेरी अपने निजी मत्री से कहती "देखो कोई आवश्यक पत्र तो नहीं है?" आधे पत्र तो विक्षिप्त व्यक्तियों तथा हस्ताक्षर की मांग के होते। एक छपा हुआ कार्ड इनके उत्तर में भेज दिया जाता—"श्रीमती क्यूरी हस्ताक्षर देना और चित्र पर दस्तख़त करना पसन्द नहीं करतीं और चाहती हैं कि आप उन्हें क्षमा करें।" तरह-तरह के बावलों के दूसरे पत्रों का उत्तर मौन ही होता।

इसके बाद जो पत्र बच जाते उनका उत्तर मेरी अपने मंत्री से लिखवाती। इनमें कुछ विदेशी सहयोगियों के लिये, कुछ यंत्र आदि बनाने वाले तथा उनके अनुमानित व्यय और बिल आदि के सम्बन्ध में और कुछ आये हुये सूचना-पत्रों के उत्तर में होता। विज्ञान विभाग सम्बन्धी काग़ज भी बहुत अधिक होते। इनको मेरी बहुत नियमपूर्वक सैंतालीस फाइलों में रखती। सोमवार और शुक्रवार के प्रातः वह मिलने के लिये तैयार हो जाती। पत्रकार तथा तरह-तरह के निवेदन लिये हुये दूसरे लोग मेरी के घर पर दोनों दिन इकट्ठा हो जाते। पत्रकारों से पहले ही कह दिया जाता "श्रीमती क्यूरी आपसे तभी मिलेंगी जब आपको कुछ विज्ञान विषयक प्रश्न पूछने हो। वह व्यक्तिगत बातों के लिये मिलना पसन्द नहीं करतीं।" यद्यपि मेरी नम्रता और सज्जनता की मूर्ति थीं परन्तु किसी मिलने वाले को उससे बात लम्बी करने का प्रोत्साहन न मिलता। नंगा कमरा और सख्त कुर्सियां तो थी हीं, मेरी की अंगुलियों का अधीरता से हिलना और उसका घड़ी की ओर चुपके से देखने का यत्न करना लोगों को जल्दी करने के लिये सावधान कर देता।

सोमवार और बुधवार को मेरी जब से उठती कुछ सशंक और व्यग्र-सी दिखाई पड़ती। ये दोनों दिन उसके व्याख्यान के होते।

दिन के भोजन के बाद वह अपने को कमरे में बन्द कर लेती, उस दिन का पाठ तैयार करती और एक सफेद काग़ज के टुकड़े पर अपने व्याख्यान के अध्यायों का शीर्षक लिख लेती। साढ़े चार बजे वह प्रयोगशाला में जाती और विश्राम करने वाले कमरे में अकेले बैठ जाती। वह गम्भीर और उद्विग्न-सी दिखाई पड़ती। मेरी को पढ़ाते पच्चीस वर्ष हो गये थे परन्तु जब भी उसे अपने बीस या तीस शिष्यों के सामने जाना पड़ता तो उसे मंच का सा भय लगता। अनथक और अपार काम करने वाली मेरी अपने खाली समय में भी विभिन्न वैज्ञानिक लेख, पुस्तक, नवीन विषयों पर बहुत से नोट तथा पियरी की जीवनी लिखती।

पिछले दस वर्ष से मेरी की आंख धीरे-धीरे खराब हो रही थी। डाक्टरों ने चीरा लगाने की सलाह दी जिसे वे दो या तीन वर्ष बाद करने को कहते थे। इस बीच उसके नेत्रों का प्रकाश और भी कम होता गया। उसने ब्रोनिया को लिखा—"मुझे सब से बड़ा कष्ट अपनी आंखों और कान से होता है। मेरी आंखें बहुत कमजोर हो गयी हैं......। कान में ऐसा मालूम होता है जैसे सदा सनसनाहट होती रहती है, किसी समय बहुत तेज, जिससे मुझे बहुत कष्ट होता है। मैं इससे बहुत व्याकुल हूँ। मेरे काम में शायद बाधा पड़े या काम करना ही असम्भव हो जाय। इन कष्टों का कारण शायद रेडियम हो परन्तु यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता।......इनके सम्बन्ध में किसी से कहना नहीं क्योंकि मैं नहीं चाहती कि चारों ओर इसकी चरचा हो। अच्छा अब हम लोग दूसरी चीज पर बात करें......।"

वह अपने रोग को छिपाती और चाहती कि समाचार पत्रों में यह प्रकाशित न हो। मेरी अपना काम संभाल-संभाल कर करती। रास्ते में आइरीन या ईव चुपके से हाथ दबा-दबा कर उसे ऊंच-नीच का अन्दाज़ करा देतीं। प्रयोगशाला में उसने अपने एक दो सह-

कारियों को विश्वास में ले लिया था जिसमें वे सूक्ष्म दर्शक और माप आदि के यंत्र ठीक कर दें। अपने लिये वह बड़े मोटे शीशे का प्रयोग करती और अपने नोट आदि बहुत मोटे-मोटे अक्षरों में लिखती। इतना सचेत होते हुये भी प्रयोगशाला के सब लोग मेरी की आंखों की दशा जान गये थे, परन्तु चुप थे, और मेरी को उसी तरह धोखा दे रहे थे जैसे वह उन्हें।

पहला चीरा १९२३ में लगा। मेरी ने ईव को लिखा—"...... मुझे बुधवार के सबेरे चीरा लगेगा। यदि तुम एक दिन पहले पहुँच जाओगी तो ठीक होगा। गर्मी बहुत है और तुम बहुत थकी हुयी होगी।"

"......मित्रों से कह देना कि हम तुम मिल कर जिसका सम्पादकत्व कर रहे थे वह पूरा नहीं हुआ है और तुम्हारी मुझे आवश्यकता है।......जितना कम हो सके उनसे कहना।"

१९२४ में दो और चीरे लगे और १९३० में चौथा। ज्योंही पट्टी खुली मेरी ने अपना काम शुरू कर दिया। पहले चीरे के बाद ही मेरी ने ईव को लिखा था—"मैं बिना चश्मे के बाहर जाने की आदत डाल रही हूँ और मुझे लाभ भी पहुँचा है। मैं दो बार पहाड़ी रास्तों पर घूमने गयी। सब ठीक ही रहा और बिना किसी दुर्घटना के मैं तेज़ी से चल सकती हूँ। एक वस्तु दो दिखाई पड़ती है, इससे मुझे कष्ट है, और जब लोग समीप आते हैं तो पहिचानने में मुझे कठिनाई होती है। लिखने और पढ़ने का मैं प्रतिदिन कुछ अभ्यास करती हूँ। यह चलने फिरने से अब तक अधिक कठिन रहा है। ब्रिटिश विश्वकोष के लेख के लिये तो तुम्हें मेरी सहायता करनी ही पड़ेगी।"

धीरे-धीरे वह अपनी इस संकट पर विजय पा गयी। मोटे शीशे की सहायता से उसे पुरानी दृष्टि प्राप्त हो गयी। वह अकेले बाहर

जाती, कार चला लेती और प्रयोगशाला में सूक्ष्म माप आदि का भी काम कर लेती। यह एक चमत्कार-सा हुआ और वह जीवन के अन्त तक अपने नेत्रों से काम लेती रही। सितम्बर १६२७ में उसने ओनिया को यह पत्र लिखा था "किसी समय मेरी हिम्मत छूट जाती है, मैं सोचती हूँ मुझे काम बन्द कर देना चाहिये और गांव में रह कर बाग़ के काम में लगना चाहिये। परन्तु मैं सहस्रों बन्धनों से रुक जाती हूँ। नहीं जानती इससे कब पृथक हो सकूंगी। यह भी नहीं कह सकती कि वैज्ञानिक पुस्तकों के लिखने के काम में लगे रहते हुये भी बिना प्रयोशाला के क्या मैं जीवित रह सकूंगी?"

"क्या बिना प्रयोगशाला के मैं जीवित रह सकती हूँ?" उसके हृदय की इस भावना को समझना हो तो मेरी को यंत्रों से काम करते हुये देखने की आवश्यकता थी। उसके एक सहयोगी ने इसका वर्णन इस प्रकार किया है—"अर्ध अंधकार और बिना गर्म किये हुये कमरे में जिससे तापमान में अन्तर न पड़े मेरी यंत्र के सामने तौल और नाप लेती हुई दिखाई पड़ती। एक के बाद दूसरा काम-यंत्र को खोलना, क्रोनोमीटर को चलाना, तौल को उठाना—इन सब को श्रीमती क्यूरी प्रशंसनीय संयम और सुन्दरता से करती।......उसकी कार्य करने की विधि सर्वथा ठीक होती अतएव अनुसन्धान में उसकी निजी त्रुटियां शून्य होतीं।

"हिसाब लगाने के बाद, जिसे श्रीमती क्यूरी बड़ी उत्सुकता पूर्वक करती,......उसे वास्तविक तथा अत्यधिक प्रसन्नता होती क्योंकि अन्तर का शेष बहुत कम होता......और उसे अपनी माप के ठीक होने पर सदा विश्वास रहता।"

अपने काम में लगे रहने पर समस्त संसार का उसके लिये अभाव सा रहता। १६२७ में जब आइरीन बहुत बीमार थी और मेरी निराशा से पीड़ित थी, एक मित्र ने प्रयोगशाला में आकर उसका

हाल पूछा। उसे संक्षिप्त उत्तर मिला और सर्द आंखें ज्योंही वह कमरे से बाहर गया मेरी ने कुछ रोष में कहा, "काम करने के लिये किसी को लोग अकेले छोड़ क्यों नहीं देते ?"

उसी मित्र का एक वर्णन है कि वह किस तरह प्रयोग के काम में अपने को भूल जाती थी। एक्टीनियम बक्स का तैयार करना यह मेरी का अन्तिम और बहुत महत्वपूर्ण प्रयोग था, और अपनी मृत्यु के पहले वह इसमें सफल हुयी।

"एक्टीनियम बक्स का इतना शुद्ध और ऐसी रसायनिक अवस्था में रखना था कि वह निर्गत विकिरलकल को पृथक न कर सके। उसे पृथक करने के लिये सारा दिन पर्याप्त नहीं हुआ। श्रीमती क्यूरी बिना भोजन किये सायंकाल को वहीं रह गयीं। परन्तु उन्होंने देखा इस तत्व का पृथक करना धीरे-धीरे ही हो सकता था, प्रयोगशाला में रात बिताने की आवश्यकता थी......। रात के दो बज गये परन्तु अन्तिम प्रयोग अब भी बाकी रह गया था।......अपने कार्य में उनका चित्त इतना एकाग्र था कि उनके लिये किसी दूसरी वस्तु का अस्तित्व नहीं रह गया था। न दूसरे दिन के जीवन की चिन्ता थी और न घोर थकावट की। व्यक्तित्व के लय का यह पूर्ण उदाहरण था, उस कार्य में सम्पूर्ण तन्मयता जिसे वह कर रहीं थीं।"

यदि प्रयोग से इच्छित फल न मिलता तो मेरी ऐसी अवाक रह जाती जैसे कोई अनजान विपत्ति आ पड़ी हो और वह चुपचाप कुर्सी पर दुख से बैठ जाती। कोई साथी पूछता क्या हुआ तो कहती, "अभी तक एक्टीनियम बक्स की उत्पत्ति हम लोग नहीं कर सके हैं।" या कभी कहती "उस पोलोनियम को मुझसे कुछ चिढ़ है।" सफलता से वह अपने को हलकी अनुभव करती और उसमें नवीन जीवन आ जाता। वह बाग़ में प्रसन्नतापूर्वक इधर उधर घूमने

लगती। ऐसा जान पड़ता जैसे वह धूप और फूलों से बताना चाहती है कि वह कितनी प्रसन्न है।

२८. अंत–

श्रीमती क्यूरी अपनी मृत्यु के सम्बन्ध में परमशान्ति से विचार करती और उस पर प्रायः बात भी करती। जिस घटना का घटना निश्चित था उससे उसके किसी प्रकार की उद्विग्नता न होती। बिना किसी प्रकार की भावुकता के वह इस तरह के वाक्य कहती "यह स्पष्ट है कि मुझे अधिक वर्षों तक नहीं जीना है।" या "जब मैं नहीं रहूँगी तब रेडियम भवन का क्या भाग्य होगा इसकी मुझे चिन्ता होती है।" परन्तु इस अन्त का वह अपने अन्तःकरण से पूरा विरोध करती। दूसरों के लिये यह सोचना स्वाभाविक था कि उसका जीवन असाधारण रहा परन्तु जो काम मेरी ने अपनाया था उसकी तुलना में जीवन उसे बहुत अल्प प्रतीत होता।

तीस वर्ष पहले मृत्यु से सशंक रहते हुये भी पियरी क्यूरी जिस तरह अपने काम में लगन से लगे हुये थे उसी तरह मेरी भी आज अपने काम में लगी हुयी उनके मार्ग का अवलम्बन कर रही थी। उस आक्रमण से जो आने ही वाला था अपनी रक्षा करते हुये उसने अपने लिये नये काम और नये कर्तव्य निश्चित कर लिये थे। कंधे की पीड़ा कानों की भनभनाहट तथा अपनी प्रतिदिन की बढ़ती हुई थकावट से वह घृणा करती। नेत्रों का प्रकाश भी कम था परन्तु उसे अन्य आवश्यक कार्य करने थे, वह इनकी चिन्ता कहां तक करती।

मेरी ने हाल ही में (ares) के प्रयोग के लिये एक फैक्टरी बनायी थी जिसके लिये वह बहुत दिनों से प्रयत्नशील थी। एक पुस्तक लिखने में भी वह लगी हुई थी। एक्टीनियम की खोज का काम

तेज़ी से आगे नहीं बढ़ रहा था। इसकी समाप्ति पर ऐल्फ़ा किरणों का अध्ययन उसे प्रारम्भ करना था। मेरी सबेरे ही उठ जाती, जल्दी से प्रयोगशाला जाती और रात को भोजन करने के बाद फिर वहां चली जाती।

असाधारण वेग परन्तु अपने स्वभावानुसार परम धैर्य से वह काम कर रही थी। प्रयोगशाला में वह उन चीज़ों पर अपने स्वास्थ्य निमित्त बहुत कम ध्यान देती जिनके लिये वह अपने शिष्यों पर कड़ाई करती। उसने कभी अपने रक्त की परीक्षा नहीं करायी जो संस्था का नियम था। उसके रक्त की अवस्था असाधारण थी। पैंतीस वर्ष तक मेरी ने रेडियम का काम किया था और युद्ध के चार वर्ष में तो वह इसकी प्रगट रूप से और भी शिकार हुई थी।

१९३३ के दिसम्बर में थोड़े ही दिनों की बीमारी से मेरी को बहुत सावधान होना पड़ा। यक्सरे से मालूम हुआ कि पित्तकोष में एक बड़ा पत्थर है, वही बीमारी जो उसके पिता को ले गयी थी। चीरे से बचत के लिये मेरी ने अपने को कड़े नियमों में बांधा और अपनी अधिक चिन्ता करने लगी। अपने विश्राम का ध्यान उसे इस समय फिर हुआ जो उसने वर्षों से छोड़ रखा था। गांव में घर बनवाने की बात जो अब तक टलती जा रही थी उसे पूरा करने का उसने निश्चय किया। उसका नक्शा और उसके व्यय का अनुमानपत्र आदि तैयार होने लगा। और निश्चय हो गया कि अक्तूबर १९३४ में घर बन जायगा।

मेरी अपने काम से थक जाती परन्तु अपने को समझाने का प्रयत्न करती कि वह अस्वस्थ नहीं है। वह आइरीन के साथ 'स्केटिंग' के लिये जाती। इस तरह अपने को फुरतीला बनाये रखने में वह प्रसन्न होती। ईस्टर में ब्रोनिया के फ्रांस आने पर मेरी को उसके साथ दक्षिण में मोटर यात्रा करने का अच्छा अवसर मिला। यह यात्रा

अच्छी नहीं रही। कई दिनों के भ्रमण में उसे सर्दी लग गयी। मेरी अपनी बीमारी से कुछ निराश होने लगी। उसे भय हुआ कि अपनी पुस्तक जिसे वह इस समय लिख रही थी समाप्त न कर सकेगी। ब्रोनिया ने उसे धैर्य दिलाया और उसकी बहुत सेवा की। दूसरे दिन सवेरे मेरी ने अपनी इस मानसिक निर्बलता पर प्रभुत्व पा लिया और फिर यह भाव उसके मन में कभी नहीं आया।

पेरिस लौटने पर मेरी पहले से अच्छी थी परन्तु उसे हलका ज्वर हर समय रहता यद्यपि वह इसकी बहुत कम चिन्ता करती। डाक्टरों ने विश्राम की आवश्यकता बतायी जिसे वे पिछले तीस वर्ष से कहते चले आ रहे थे। ब्रोनिया जब इस बार पोलैंड वापस गयी तो मेरी की दशा से चिन्तित थी। दोनों बहिनों का इस बार यह अन्तिम मिलन था।

मेरी कभी बीमार पड़ती, कभी अच्छी हो जाती। जिन दिनों उसे शक्ति जान पड़ती वह प्रयोगशाला जाती और जब उसे निर्बलता प्रतीत होती या चक्कर आता तो वह घर पर रह कर पुस्तक लिखने में लगी रहती। परन्तु उसका गुप्त शत्रु उस पर प्रभुत्व पाता ही जा रहा था। ज्वर बराबर रहता। अपनी चतुराई से ईव ने किसी तरह डाक्टरी परीक्षा के लिये मेरी को राजी किया। इस बहाने कि डाक्टर एक विपत्ति होते हैं और उन्हें फ़ीस दे सकना असम्भव होता है—क्योंकि कोई डाक्टर मेरी से फीस कभी नहीं लेता था—मेरी ने यह कभी स्वीकार नहीं किया कि कोई डाक्टर उसे नियमपूर्वक देखता रहे। यह वैज्ञानिक उन्नति की पक्षपाती उपचार से ऐसा विद्रोह करती जैसे कोई किसान।

प्रो० रीगा जब उसे देखने आये तो मेरी का वर्णहीन स्वरूप देख कर उन्होंने कहा—"आपको बिस्तर में ही रहना चाहिये। आपका विश्राम करना नितान्त आवश्यक है।" श्रीमती क्यूरी ने घबराहट की

ऐसी बातें पहले भी सुनी थी। वह उन पर बहुत कम ध्यान देती। वह सीढ़ियों पर चढ़ती उतरती और रेडियम भवन में प्रतिदिन काम करती दिखाई पड़ती। एक दिन (मई १६३४) वह प्रयोगशाला में ३।। बजे तक ठहरी। उसने अपने साथियों से कहा "मुझे ज्वर है, घर जाना चाहिये।" वह बाग़ में गयी। वहाँ रंग विरंगे फूल खिले हुये थे। सहसा वह एक रोगी गुलाब के पास खड़ी हो गयी और अपने मिस्त्री को बुला कर कहा "इसे देखो तो, तुम्हें इसे ठीक करना है।" एक विद्यार्थी ने आकर कहा कि अब आपको यहाँ नहीं रहना चाहिये। सर्दी न लग जाय। वह मान गयी। मोटर में बैठते हुये उसने एक बार फिर मिस्त्री से कहा—"इस गुलाब को भूलना नहीं।" उस सूखते हुये पौदे की ओर उसकी चिन्तित चितवन प्रयोगशाला से सदा के लिये बिदा के रूप में थी।

तब से मेरी ने शैय्या नहीं छोड़ी। इनफ़्लुएन्ज़ा तथा ब्रांकाइटिस ने बार-बार आक्रमण कर उसे चूर कर दिया। उसने इसे धैर्य से सहन किया और अस्पताल में परीक्षा के लिये जाना भी स्वीकार किया। दो रश्मि चित्रों और छ परीक्षाओं से भी विशेषज्ञों को रोग का स्पष्ट पता न चला। परन्तु यक्सरे के चित्र में फेफड़े में कुछ सूजन और पुराने क्षत थे इसलिये उसी का उपचार प्रारम्भ हुआ।

ईव ने डरते हुये मेरी से उपचारगृह जाने की बात कही। उसने उसकी आशा मान ली। शुद्ध और पवित्र वायु में उसे भरोसा था। वह सोचती कि नगर का कोलाहल और उसका धूल उसके अच्छे होने में बाधक है। सब बातें तय हो गयीं, कई सप्ताह तक ईव अपनी माता के साथ ठहरेगी, उसके पश्चात मेरी के भाई और बहन पोलैंड से आने वाले थे और अगस्त में आइरीन वहाँ रहने वाली थी। अनुमान यह था कि पतझड़ में वह फिर बिलकुल अच्छी हो जायगी।

मेरी के कमरे में आइरीन और फ्रेडरिक प्रयोगशाला के कार्य तथा गाँव के घर आदि के सम्बन्ध में उसका चित्त बहलाने के लिये बात करते और ईव कमरे को सजाने आदि में लगी रहती। मेरी ने ईव की ओर देख कर कई बार कहा—"यह सब शायद व्यर्थ का ही प्रयास हो रहा है।" ईव इसका तीव्र विरोध करती यद्यपि परिस्थिति की गम्भीरता से वह अज्ञान नहीं थी। वह अकेले घंटों अपनी माता के पास रहती। देखती कि मेरी की कोमलता और उदारता पूर्ववत ही है बल्कि उसकी माता पहले की अपेक्षा अधिक मधुर हो गयी है और उसका प्रेम इस समय उमड़ा पड़ रहा है। छियालीस वर्ष पहले मेरी ने अपने एक पत्र में लिखा था "जो लोग किसी चीज़ को इतनी तीव्रता से अनुभव करते हैं जितना मैं, और अपने इस स्वभाव को बदलने में असमर्थ है, उन्हें यथाशक्ति अपने भावों को अप्रकट ही रखना पड़ता है।"

संकोची व्यक्तियों का यही स्वभाव है, किसी बात की जल्द चोट लग जाना भीरुता और अन्याय की तीव्र वेदना। मेरी ने अपने शानदार जीवन में हार मानने अथवा सहायता माँगने वाली पुकार से जो कभी कभी उसके मुँह तक आ आ कर रह जाते, सदा बचाया।

इस समय भी वह अपने अन्तरतम की बात न किसी से कहती और न कोई उलाहना देती। यदि कभी देती भी तो अपने को बहुत रोक कर। वह केवल भविष्य के सम्बन्ध में बात करती।......प्रयोग-शाला का भविष्य, वारसा की संस्था का भविष्य और अपने बच्चों का भविष्य। उसे आशा थी, निश्चय-सा था कि कुछ महीनों में ही आइरीन और फ्रेड्रिक को नोबेल पुरस्कार मिल जायगा—और अपना भविष्य......शव के उस घर में जो कभी बनने ही वाला नहीं था।

मेरी निर्बल होती गयी। उपचारगृह के लिये प्रस्थान करने से पहले ईव ने चार सब से अच्छे और प्रसिद्ध डाक्टरों से अपनी माता की परीक्षा कराई। उनकी यही सम्मति रही कि पुराना क्षय का रोग फिर जाग पड़ा है। उनका विचार था कि पहाड़ पर जाने से ज्वर जाता रहेगा। परन्तु वे भ्रम में थे। जल्दी-जल्दी तैयारी की गयी। आशा के विरुद्ध मेरी ने अपने एक सहकारी को बुलाया और कहा "मेरी वापसी तक ऐक्टिनियम को सुरक्षित ताले में बन्द रखना। मुझे तुम पर भरोसा है कि तुम सब चीजें ठीक से रखोगे। छुट्टी से लौटने पर हम लोग फिर काम शुरू करेंगे।"

अकस्मात दशा खराब हो जाने पर भी डाक्टरों ने जाने के ही लिये कहा। यात्रा में बहुत कष्ट हुआ। स्टेशन पर पहुँच कर मेरी को ईव और नर्स की गोद में मूर्छा आ गयी। उपचारगृह में सब से अच्छे कमरे में मेरी रखी गयी। फिर से परीक्षा हुई और यक्सरे चित्र लिये गये। फेफड़ों पर कोई असर नहीं था और यात्रा निष्फल रही।

मेरी का ज्वर १०४ डिग्री से अधिक रहता। यह उससे छिपाया नहीं जा सकता था क्योंकि वह स्वयं थरमामीटर देखती थी। वह मुश्किल से अब बोल सकती थी और उसके पीले नेत्र भयत्रस्त थे। जेनेवा के प्रोफेसर राश ने देख कर बतलाया कि मेरी को बहुत भयानक रक्तहीनता का रोग हो गया है। पत्थरी के रोग से मेरी चिन्तित थी, परन्तु डाक्टर ने उसे धीरज बँधाया और कहा कि चीरे की आवश्यकता न होगी। बड़ी सजगता से प्रोफेसर राश ने अपनी औषधि प्रारम्भ की परन्तु थके हुये शरीर से प्राण वेग के साथ भाग रहे थे। शरीर से युद्ध आरम्भ हुआ। ईव इस प्रयत्न में थी कि अपनी माता के मस्तिष्क में मृत्यु की बात प्रवेश न करने दे। कुटुम्बियों को भी उसने सूचना नहीं दी जिससे उन्हें देख कर उसे अपनी बुरी दशा का अनुमान न हो। डाक्टरों ने कोई उपाय उठा नहीं रखा।

परन्तु सम्पूर्ण उपचारगृह श्रीमती क्यूरी की मृत्यु की आशंका से जो समीप चली आ रही थी, निष्प्राण और स्तब्ध दिखाई पड़ता था।

२ जुलाई को श्रीमती क्यूरी ने कापते हुये हाथों से अन्तिम बार थरमामीटर देखा। टेम्परेचर घट रहा था जैसा अन्त के पूर्व प्रायः होता है। वह प्रसन्नता से मुस्कराई। और जब ईव ने उसे विश्वास दिलाया कि यह उसके अच्छे होने का निश्चित चिह्न है तब उसने खिड़की से सूर्य और स्थिर पर्वतों की ओर देख कर कहा, "औषधि ने मुझे अच्छा नहीं किया है। यह शुद्ध वायु और ऊंचाई के कारण है···।"

रोग के प्रकोप और अपनी अत्यन्त पीड़ा में मेरी शिकायतें करती—"मैं अब अपनी बात कह नहीं सकती। मैं विक्षिप्त सी हूँ।" वह किसी व्यक्ति, ईव अथवा आइरीन और उसके पति को, जो एक दिन पहले आ गये थे, नहीं पूछती थी। कार्य के सम्बन्ध में छोटी और बड़ी चिन्तायें अब भी उसके मस्तिष्क में चक्कर लगा रही थीं और वही बातें असम्बद्ध वाक्यों में प्रकट होतीं—"अध्यायों के अनुच्छेद एक ही तरह के बनाने हैं······मैं उस प्रकाशम के सम्बन्ध में सोच रही थी।" और चाय के प्याले की ओर एकटक घूर कर देखती हुई उसमें एक चम्मच चलाने का यत्न करती—शायद यह समझ कर कि चम्मच नहीं शीशे की नली अथवा कोई सूक्ष्म यंत्र है—और कहती—"यह रेडियम से किया जाता है या मेसोथोरियम से?"

वह मनुष्यों से दूर हट गयी थी। उन पदार्थों से उसने एकात्म कर लिया था जिनमें उसने अपना सारा जीवन लगाया था। अब वह स्पष्ट बोल भी नहीं सकती थी। जब डाक्टर सुई लगाने आये तब केवल एक बार उसने थकी हुई तीव्र ध्वनि में कहा—"मैं इसे नहीं चाहती। मैं चाहती हूँ मुझे अकेले ही छोड़ दिया जाय।"

उसके बाद सोलह घंटे तक ईव और डाक्टर मेरी के बर्फ जैसे शीतल हाथ अपने हाथों में लिये बैठे रहे। प्रातः निर्मल आकाश में

यात्रा करती हुयी पर्वतों को कान्तिमय बनाने वाली सूर्य की रश्मियाँ जब मेरी के कमरे में प्रवेश कर उसकी शैया, शुष्क गालों और निश्चेष्ट नेत्रों को आलोकित कर रही थीं उस समय मेरी की हृदय गति रुक चुकी थी।

मेरी के शरीर के सम्बन्ध में विज्ञान को अभी अपनी अन्तिम सम्मति प्रकट करनी ही थी। जब यह देखा गया कि रक्त परीक्षा का फल दूसरे रक्तभाव के रोगियों से भिन्न था और लक्षण भी साधारण से पृथक तब वास्तविक अपराधी का पता चला। वह रेडियम ही था। प्रोफेसर रीगा ने लिखा "अन्ततोगत्वा श्रीमती क्यूरी (रश्मिशक्तित्व) पदार्थों की ही शिकार रही जिसका आविष्कार उन्होंने और उनके पति ने किया था।" उपचार गृह में डाक्टर टोब ने यह रिपोर्ट लिखी—"मैडेम क्यूरी का देहान्त सेनसिलिमाज़ में ४ जुलाई १६३४ को हुआ। रोग ज्वर सहित भयानक रक्तहीनता था। मज्जापूर्ण अस्थि रोग से संघर्ष न कर सकी क्योंकि रेडियेशन के बहुत दिनों से एकत्र होते रहने के कारण वह जख्मी हो गयी थी।"

यह समाचार संसार में चारों ओर फैल गया। मेरी के बड़े भाई जोज़ेफ और ब्रोनिया उसे देखने आ रहे थे। उन्हें गाड़ी में समाचार मिला। ब्रोनिया यत्न करने पर भी समय पर न पहुँच सकी। सब देशों में मेरी के मित्रों और समस्त वैज्ञानिक समुदाय को बहुत दुख हुआ। संस्था के एक विद्यार्थी ने लिखा—"हम लोगों ने सब कुछ खो दिया।"

६ जुलाई १६३४ को दोपहर के समय बिना किसी भाषण जलूस और राजनीतिज्ञों तथा अधिकारियों की अनुपस्थिति में श्रीमती क्यूरी मृतक संसार में अपना स्थान ग्रहण किया। केवल उसके मित्रों सम्बन्धियों और सहकारियों की उपस्थिति में जो मेरी से हार्दिक प्रेम करते थे, शव के कब्रिस्तान में वह दफ़न की गयी। उसकी अर्थी

पियरी क्यूरी के ऊपर रखी गयी। ब्रोनिया और जोज़ेफ ने खुले हुये कब्र में एक मुट्ठी मिट्टी डाली जो वह पोलैंड से ले आये थे। कब्र के पत्थर पर एक पंक्ति और बढ़ा दी गयी—"मेरी क्यूरी-स्कलोदोवोस्की, १८६७-१९३४।"

एक वर्ष बाद मेरी की वह पुस्तक प्रकाशित हुई जो उसने अपनी मृत्यु के पहले समाप्त की थी। भौतिक विज्ञान के प्रेमियों के लिये उसका यह अन्तिम सन्देश था। रेडियम संस्था में जहाँ कार्य पुनः प्रारम्भ हो गया यह विशिष्ट पुस्तक दूसरी वैज्ञानिक पुस्तकों के साथ पुस्तकालय में सम्मिलित कर दी गयी। इसके भूरे जिल्द पर लेखक का नाम था—"श्रीमती पियरी क्यूरी, सोर्बों की प्रोफेसर, भौतिक-विज्ञान में नोबेल पुरस्कार। रसायन शास्त्र में नोबेल पुरस्कार।" पुस्तक का नाम चमकते हुये अक्षरों में एक शब्द में था—"रश्मिशक्तित्व।"

शुद्धिपत्र

[नीचे कुछ अशुद्धियों की सूची दी जा रही है।
पाठक सुधार लेने की कृपा करें।]

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४ भूमिका	१	और उसमें भी आकांक्षा में	और आकांक्षायें
...	...	सब के समान बचपन से ही	उसमें भी सब के
...	...	...	समान थीं बचपन
...	...	...	से ही.........
६	३	सुनहरा का	सुनहरा
१६	६	व्राइना	ब्रोनिया
२२	१६	वह जैसे उसकी आयु की	वह अपनी आयु की
...	...	दूसरी लड़कियाँ वैसी ही	दूसरी लड़कियों के
...	...	निरुत्साहित	ही समान निरुत्साहित
२१	२०	कुछ	कोशिश
२८	२२	होसी	होती
४३	२६	पत्र	यंत्र
८७	२१	बाद में	एक नोट में
६४	१२	वर्ग द्वारा	वर्ग
१०१	२	की	उसकी
१४८	२०	यहाँ	वहाँ
१५६	१३	प्रातः	प्रायः
१६१	२०	मेरी की दो, तीन, चार	मेरी ने तीन चार
...	...	यात्रायें पोलैंड की थीं।	यात्रायें पोलैंड की कीं
१६६	२५	लाभ उठाती	व्यय करती

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७४	१४	जितके	जिनके
१७६	५	इनके	इसके
१८३	१३	काम	कम
१८५	८	का	को
१८६	६	उसके	उसको
१९०	६	अज्ञान	अज्ञात

—:o:—